वार्षिक पत्रिका

अर्जिक्या

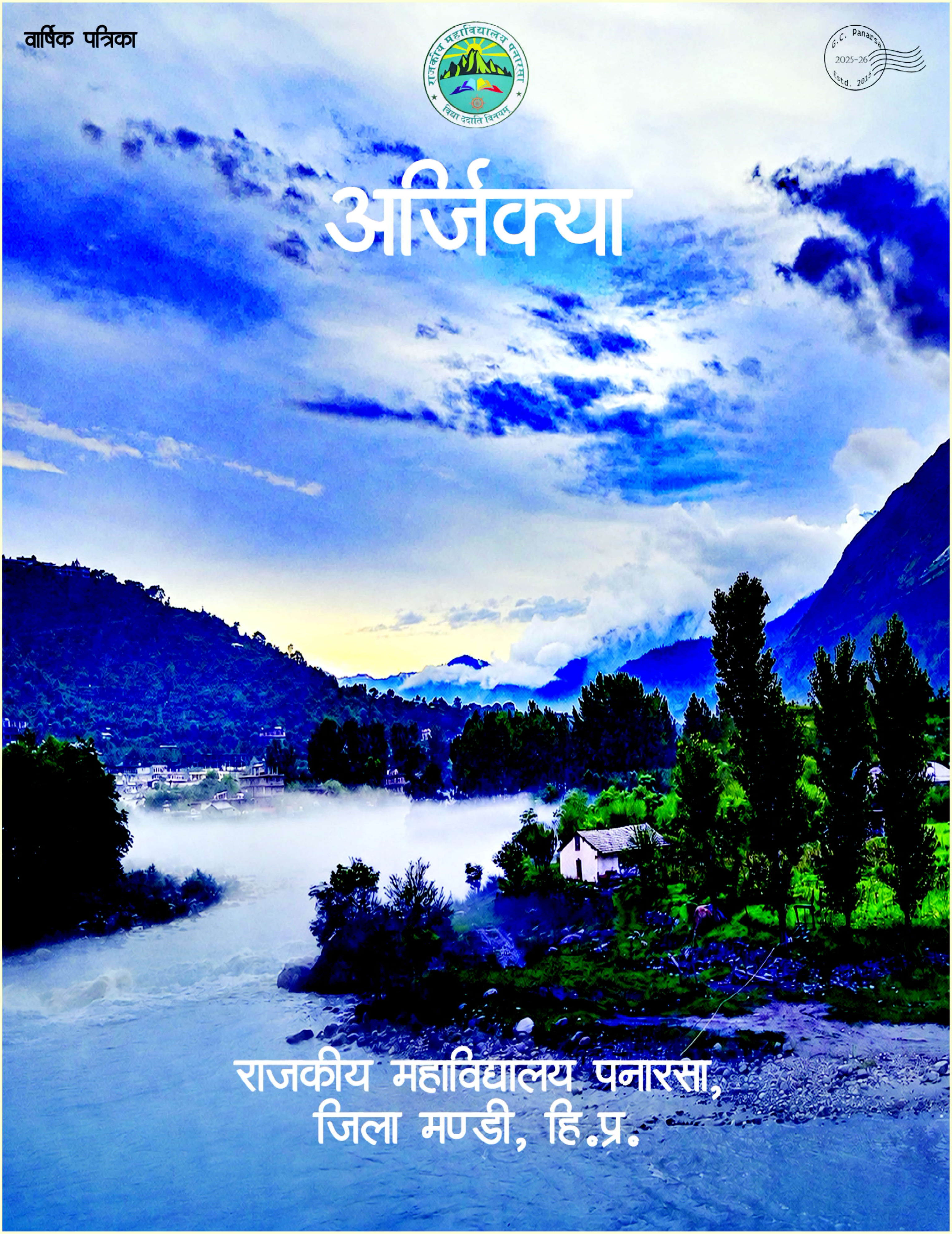

राजकीय महाविद्यालय पनारसा,
जिला मण्डी, हि.प्र.

Left to right :

Sitting : Mrs. Anita (Hindi), Dr. Pooja Sharma (Music V.), Dr. Ursem Lata (Principal), Dr. Kavita Katoch (Music Instrumental), Dr. Leena Vaidya (English)

Standing : Sh. Hira Singh (Economics), Sh. Ratan Dev (Pol. Science), Sh. Krishan Lal (History), Dr. Manish Sood (Commerce), Sh. Suresh Kumar (Sociology)

अनुक्रम

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
01.	संदेश (डॉ. हरीश कुमार, निदेशक, उच्चतर शिक्षा)	05
02.	संदेश (डॉ. उरसेम लता, प्राचार्या)	06
03.	सम्पादकीय (डॉ. लीना वैद्य, मुख्य सम्पादक)	08
04.	वार्षिक प्रतिवेदन	10
05.	शिक्षा सचिव के साथ विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं से भरी चर्चा	25
06.	हिंदी अनुभाग	34
07.	एन.एस.एस. गतिविधियां	60
08.	अंग्रेज़ी अनुभाग	67
09.	गतिविधियां	79
10.	सी.एस.सी.ए. कार्यक्रम की झलकियां	80
11.	गतिविधियां	82
12.	वाणिज्य अनुभाग	83
13.	पहाड़ी अनुभाग	93
14.	वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह की झलकियां	101
15.	गतिविधियां	103
16.	खबरें	106

Statement about ownership and other particulars of 'Arjikiya' Required under rule-8 of press and registration of Books Act.
Form -(IV)
(see Rule-8)

Place of publication	:	Panarsa
Periodicity of its publication	:	Annual
Owner's Name	:	Dr. Ursem Lata
Address	:	Principal Govt. College, Panarsa Distt. Mandi (H.P.)
Name of Printing press.	:	Himtaru Prakashan Samiti, Kullu, H.P.
Nationality	:	Indian
Address	:	Near Main Post-Office, Dhalpur, Kullu.
Chief Editor's Name	:	Dr. Leena Vaidya (Asst. Prof. English)
Nationality.	:	Indian
Address	:	Govt. College, Panarsa Distt. Mandi, H.P.

I, Ursem Lata hereby declare that particulars given above are true and correct to best of my knowledge and belief.

Sd/-

Ursem Lata

Principal Govt.College Panarsa,
Distt Mandi, Himachal Pradesh.

The views expressed by the writers are their own and the Editorial board does not necessarily agree to them.

Editor-in-Chief

Cover Picture Credits : Sh. Suresh Kumar (Assit. Prof.)
Back Cover Picture : Sh. Suresh (Student)

Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh
Shimla - 171001
Tel. : 0177-2656621 Fax : 0177-2811347
E-mail : dhe-sml-hp@gov.in

MESSAGE

It is a matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine .

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for the curious young minds and to refine and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor(s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind.

(Dr. Harish Kumar)
Director of Higher Education
Himachal Pradesh

प्राचार्या की कलम से...

प्रिय विद्यार्थियो,

एक शैक्षणिक संस्थान की पहचान केवल पाठ्यक्रम, परीक्षा परिणामों अथवा उपलब्धियों से ही नहीं बनती, बल्कि वहाँ के विद्यार्थियों की संवेदनशीलता, रचनात्मकता और विचारशीलता से भी निर्मित होती है। यह हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता और संतोष का विषय है कि हमारे विद्यार्थियों ने इस पत्रिका के माध्यम से अपने मन के भावों, अनुभवों, लोकस्मृतियों, सांस्कृतिक विरासत और जीवन के विविध पक्षों को शब्दों में अभिव्यक्त करने का सुंदर प्रयास किया है।

लेखन केवल शब्दों को कागज पर उतारना नहीं हैय यह स्वयं को समझने, अपने समय को देखने और समाज के साथ संवेदनात्मक संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया है। जब विद्यार्थी लिखता है, तो वह केवल एक लेख, कविता या कहानी नहीं रचता, बल्कि अपने भीतर छिपे चिंतन, संवेदना और अनुभवों को दिशा देता है। साहित्य मनुष्य को केवल ज्ञानवान नहीं बनाता, बल्कि उसे अधिक मानवीय, अधिक सहृदय और अधिक विचारशील भी बनाता है।

आज का समय तीव्र परिवर्तन का समय है। सूचनाएँ बहुत हैं, परंतु ठहरकर सोचने का समय कम होता जा रहा है। ऐसे समय में लेखन एक साधना की तरह है, जो हमें अपने भीतर झाँकना सिखाता है। यह हमें अपनी जड़ों, अपने लोकजीवन, अपनी संस्कृति और अपने सामाजिक दायित्वों से जोड़ता है। आपकी लेखनी तभी सार्थक होगी, जब उसमें केवल शब्द नहीं, बल्कि अनुभवों की सच्चाई, विचारों की गहराई और संवेदनाओं की ऊष्मा होगी।

इस पत्रिका को आकार देने में हमारे अध्यापक संपादकों एवं छात्र संपादकों का योगदान विशेष रूप से सराहनीय है। किसी भी पत्रिका का निर्माण केवल लेखों के संकलन से नहीं होता, बल्कि संवेदनशील दृष्टि, धैर्यपूर्ण संपादन और विषयों के संतुलित चयन से होता है। हमारे संपादक मंडल ने विद्यार्थियों की अभिव्यक्तियों को सम्मानपूर्वक स्थान देते हुए विविध विषयों को समेटने का सराहनीय प्रयास किया है। इस अंक में हिंदी, अंग्रेजी, वाणिज्य, सांस्कृतिक गतिविधियों, पहाड़ी लोकजीवन, लोककथाओं, सामाजिक चेतना, पर्यावरणीय सरोकारों तथा मानवीय मूल्यों से जुड़े अनेक महत्त्वपूर्ण पक्षों को स्थान दिया गया है। कुछ लेख अपनी विचार–गहनता, भाषा–संवेदना और लोक–स्मृतियों के संरक्षण के कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, वहीं अनेक रचनाएँ विद्यार्थियों की सहज अभिव्यक्ति और उनके भीतर छिपी रचनात्मक संभावनाओं का सुंदर परिचय कराती हैं। यह पत्रिका केवल

लेखों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों के अनुभवों, जिज्ञासाओं, सांस्कृतिक चेतना और रचनात्मक ऊर्जा का जीवंत दस्तावेज है।

विद्यार्थियों के लेखों को पढ़ते हुए यह स्पष्ट अनुभव होता है कि नई पीढ़ी के भीतर संवेदनशीलता, प्रश्न करने की क्षमता और अपने परिवेश को समझने की गहरी आकांक्षा अभी भी जीवित है। अनेक रचनाओं में लोकजीवन, संस्कृ ति, पर्यावरण, सामाजिक संबंधों, नैतिक मूल्यों तथा बदलते समय की चुनौतियों को लेकर एक सजग दृष्टि दिखाई देती है। साथ ही, कुछ लेख यह संकेत भी देते हैं कि आज के समय में संवाद, धैर्यपूर्ण चिंतन और सामूहिक विचार–विमर्श की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। यह भी विचारणीय है कि जिन विषयोंकृजैसे सांस्कृ तिक परिवर्तन, सामाजिक विघटन, प्रकृति से दूरी, भाषा और लोकस्मृतियों का क्षरण को विद्यार्थियों ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया है, क्या उन पर हम अपने परिसर में मिलकर पर्याप्त चर्चा कर पा रहे हैं? क्या हम अपने समय के प्रश्नों को समझने और उन पर सार्थक संवाद स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं? इन लेखों में केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक मौन प्रश्न भी निहित है, जो हम सभी को विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

हमारी इस पत्रिका का नाम 'अर्जिकिया' अपने आप में अत्यंत अर्थपूर्ण है। 'अर्जिकिया' केवल एक नाम नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति, संवाद और आत्मप्रकाश की वह भूमि है, जहाँ विचार शब्दों का रूप लेते हैं और अनुभव एक साझा स्मृति बन जाते हैं। इस अंक के लेखों को पढ़ते हुए प्रतीत होता है कि यह पत्रिका सचमुच विद्यार्थियों के मन, समाज और समय के बीच एक जीवंत सेतु का कार्य कर रही है। कहीं लोककथाओं के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक जड़ों को बचाने का प्रयास है, कहीं साहित्य के माध्यम से संवेदनाओं को स्वर देने की आकांक्षा, कहीं वाणिज्य और समसामयिक विषयों के माध्यम से बदलते सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य को समझने का प्रयास, तो कहीं भाषा और संस्कृति के विविध रंगों को सहेजने का सुंदर उपक्रम। इस अर्थ में 'अर्जिकिया' केवल एक वार्षिक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे सामूहिक बौद्धिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक जीवन का प्रतिबिंब बनकर सामने आती है।

मैं अपने सभी विद्यार्थियों से विशेष आग्रह करना चाहूँगी कि वे अपनी लेखन प्रतिभा को सीमित न समझें। हर विद्यार्थी के पास कहने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण होता है कभी अनुभव के रूप में, कभी प्रश्न के रूप में और कभी कल्पना के रूप में। आवश्यकता केवल इस बात की है कि आप अपने विचारों पर विश्वास करें और उन्हें अभिव्यक्ति देने का साहस रखें। अधिक पढ़िए, अपने परिवेश को ध्यान से देखिए, लोगों की कहानियाँ सुनिए और नियमित रूप से लिखने का अभ्यास कीजिए।

यह स्मरण रखना भी आवश्यक है कि अच्छा लेखन एक दिन में नहीं बनता। यह निरंतर अभ्यास, धैर्य और आत्ममंथन की प्रक्रिया से विकसित होता है। इसलिए लिखते रहिए, सीखते रहिए और अपने भीतर के रचनाकार को जीवित रखिए।

इस पत्रिका से जुड़े सभी युवा रचनाकारों को मैं हृदय से शुभकामनाएँ देती हूँ। आपकी लेखनी निरंतर विकसित हो, आपके विचार समाज में सकारात्मक चेतना का संचार करें और आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संवेदनशील एवं जागरूक नागरिक बनें... इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ।

डॉ. उरसेम लता
प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय पनारसा

Editorial Board

Left to right : Sh. Krishan Lal (Pahari) Smt. Anitia (Hindi), Dr. Ursem Lata (Principal), Dr. Leena Vaidya (Editor-in-Chief, English), Dr. Manish Sood (Commerce)

Editorial

Dear students

In today's AI-driven world, it is more important than ever to preserve and nurture one's creative spirit. While technology can assist us in many ways, genuine creativity still emerges from human experiences, emotions, observations, and reflection. To keep this creativity alive, one must continue to think independently and express ideas inspired by the people and environment around us.

Arjikya (Vedic name of river Beas), continues to flow despite every obstacle in its path, reflects the resilient and creative spirit of young minds eager to explore, imagine, and create. Just as a river carves its own course with determination, the creative instincts of students too must find expression in every possible way. Creativity flourishes when it is allowed to move freely, discover new directions, and find its own voice. This is what our college magazine does by providing a platform to students to give wings to their imagination and express themselves through poetry, stories, articles, book reviews and personal reflections.

I am delighted to share that the writings presented here symbolise a meaningful step towards originality and creative expression. What makes these contributions special is their connection with local culture, environment, and personal experiences. Though some pieces may be AI-assisted, the thoughts and experiences behind them remain genuinely human and free from plagiarism.

I sincerely appreciate the efforts of all contributors and the editorial team in making this publication possible. I hope Arjikya continues to remain a stepping stone for our budding writers to express themselves freely and evolve with confidence and originality.

Happy Reading!!

Dr. Leena Vaidya
Editor-in Chief

Inauguration of New Building of GC Panarsa

वार्षिक प्रतिवेदन
सत्र 2025–26

परिचय : राजकीय महाविद्यालय पनारसा हिमाचल प्रदेश के जिला मण्डी की शनोर घाटी के एक छोटे से गाँव पनारसा में स्थित है। व्यास नदी के दाहिने छोर पर स्थित, प्राकृतिक सोन्दर्य से घिरे इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2015 में की गयी थी। तब से यह महाविद्यालय छात्रों को निरंतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है। यह महाविद्यालय सरदार पटेल विश्वविद्यालय, मंडी से संबद्ध है जो छात्रों को कला स्नातक एवं वाणिज्य स्नातक में पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

किसी भी संगठन की सफलता उसके कर्मचारियों पर निर्भर करती है। महाविद्यालय में ईमानदार और मेहनती कर्मचारियों का गौरवशाली इतिहास रहा है। वर्तमान में महाविद्यालय में प्राचार्य के अतिरिक्त 7 शिक्षक और 7 गैर–शिक्षक कर्मचारी शामिल हैं जिसमे वाणिज्य संकाय में 1 व कला संकाय के 6 प्राध्यापकों समेत कुल 7 प्राध्यापक हैं जबकि गैर–शिक्षक कर्मचारयों में 1 अधीक्षक ग्रेड–2, 1 सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष, 1 वरिष्ठ सहायक, 4 सेवादार व 1 सफाई कर्मचारी सेवारत हैं। वाणिज्य संकाय में शिक्षक का 1 पद, कला संकाय में 4 पद, जबकि गैर–शिक्षक कर्मचारियों में 2 लिपिक एवं 1 सेवादार का पद रिक्त है।

स्थानान्तरण, सेवानिवृत्ति एवं पदोन्नति : स्थानान्तरण कर्मचारियों की सहज प्रक्रिया मानी जाती है। इसके साथ सेवानिवृति कर्मचारी के जीवन का कठोर यथार्थ है। इस महाविद्यालय में सत्र 2025–26 में स्थानांतरित हुए कर्मचारियों का ब्यौरा निम्न है :–

स्थानान्तरण : डॉ. चारू अहलुवालिया (सहायक आचार्या, अंग्रेजी)

आगमन : डॉ. लीना (सहायक आचार्या, अंग्रेजी), श्री टिक्कमे राम (सेवादार)

सेवानिवृत्ति : कोई नहीं

पदोन्नति : कोई नहीं

नामांकन : शैक्षणिक सत्र 2025–26 में विद्यार्थियों की कुल संख्या 324 रही जिसमें लड़कों के मुकाबले लड़कियों की संख्या अधिक है। लड़कियों की कुल संख्या 215 है, जबकि लड़कों की कुल संख्या 109 है। महाविद्यालय में विभिन्न सकायों के अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या क्रमवद्ध रूप से निम्नलिखित प्रकार से वर्णित है :–

Enrolment of Students B.A./B. Com for the session 2025-26

Course	Class Wise Enrolment	GEN		SC		ST		OBC		IRDP		Total-Boys	Total-Girls	Total
		Boys	Girls	Boys	Girls	Boys	Girls	Boys	Girls	Boys	Girls			
B.A.	B.A. (Year 1)	23	42	14	23	3	0	1	2	1	3	42	70	112
	B.A. (Year 2)	26	40	7	23	0	1	1	3	0	1	34	68	102
	B.A. (Year 3)	20	56	5	10	0	0	0	0	0	0	25	66	91
	Total	69	138	26	56	3	1	2	5	1	4	101	204	305
B. Com	B. Com (Year 1)	1	2	3	2	0	1	0	0	0	0	4	5	9
	B. Com (Year 2)	3	4	1	1	0	0	0	0	0	0	4	5	9
	B. Com (Year 3)	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1
	Total	4	7	4	3	0	1	0	0	0	0	8	11	19
											Total (BA+B.Com)	109	215	324

वार्षिक परीक्षा परिणामरू परीक्षा परिणाम की प्रतिशतता किसी भी संस्थान की विशिष्टता की द्योतक होती है जिसमे महाविद्यालय के प्रतिबद्ध एवं प्रबुद्ध शिक्षकों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। यह हमारे लिए बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि हमारे महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम उत्साहवर्द्धक रहा है। विधार्थियों ने अपने परिश्रम, विवेक और अध्ययन में अपनी पूरी एकाग्रता का परिचय दिया है।

संकायवार तालिका

संकाय	कक्षा	कुल संख्या	उतीर्ण छात्र	महाविद्यालय प्रतिशत
कला स्नातक	प्रथम वर्ष	104	86	82%
	द्वितीय वर्ष	90	83	93%
	तृतीय वर्ष	86	86	100%
वाणिज्य स्नातक	प्रथम वर्ष	9	8	90%
	द्वितीय वर्ष	1	1	100%
	तृतीय वर्ष	4	4	100%

प्राध्यापकों की उपलब्धियां :

➢ 1 से 7 मई 2025 तक डॉ. डिंपल जामटा सहायक आचार्या (वाणिज्य) ने पालमपुर महाविद्यालय द्वारा आयोजित एक साप्ताहिक एफ.डी.पी. प्रोग्राम में भाग लिया।

➢ 19 से 21 मई 2025 तक डॉ. डिंपल जामटा सहायक आचार्या (वाणिज्य) ने अमर कंटक विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित चौदह दिवसीय रिफ्रेशर कोस पूर्ण किया।

➢ 3 से 4 नवंबर 2025 को डॉ. डिम्पल जामटा ने चम्बा महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया ।

➢ 23 से 27 फ़रवरी 2025 को डॉ. डिंपल जामटा ने तीन दिवसीय एफ.डी.पी. प्रोग्राम में भाग लिया।

➢ 1 से 7 मई 2025 को डॉ. निशा शर्मा सहायक आचार्या (संगीत) ने पालमपुर महाविद्यालय द्वारा आयोजित एक साप्ताहिक एप.डी.पी. प्रोग्राम में भाग लिया।

➢ 11 से 12 सितंबर 2025 को डॉ. निशा शर्मा सहायक आचार्या (संगीत) ने राजकीय महाविद्यालय सुजानपुर टीहरा द्वारा आयोजित एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी ने भाग लिया ।

➢ 23 से 27 फ़रवरी 2025 को डॉ. निशा शर्मा सहायक आचार्य (संगीत) ने तीन दिवसीय एफ.डी.पी. प्रोग्राम में भाग लिया ।

➢ 24 जून 2025 को कृष्ण लाल, सहायक आचार्य (इतिहास) ने ग्रेट हिमालय नेशनल पार्क शाईरोपा, बंजार जिला कुल्लू द्वारा आयोजित विश्व धरोहर उत्सव–2025 में महाविद्यालय की क्रिकेट टीम के साथ भाग लिया ।

➢ 16 से 22 सितम्बर 2025 तक कृष्ण लाल, सहायक आचार्य (इतिहास) ने सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ और इतिहास विभाग राजकीय महाविद्यालय पनारसा, जिला मंडी एवं हेरिटेज फाउंडेशन मुंबई के संयुक्त तत्वाधान में समझौता ज्ञापन के अंतर्गत 7 दिवसीय संग्रहालय निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला में बतौर संयोजक भाग लिया।

➢ 27 फरवरी से 1 मार्च तक कृष्ण लाल, सहायक आचार्य (इतिहास) ने तीन दिवसीय कुल्लू साहित्य उत्सव में भाग लिया।

➢ जनवरी, 2026 को सहायक आचार्य हीरा सिंह (अर्थशास्त्र) और रत्तन देव सहायक आचार्य (राजनीति शास्त्र) ने चितकारा विश्वविद्यालय, राजपुरा, पंजाब में अन्तराष्ट्रीय संगोष्टी में भाग लिया।

➢ 7 से 11 जुलाई 2025 तक डॉ. लीना वैद्य सहायक आचार्या (अंग्रेजी) ने एसआरएम यूनिवर्सिटी दिल्ली, एनसीआर सोनीपत द्वारा आयोजित फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोगाम ऑन 'डिजिटल एंड ए आई टेक्निक्स इन ह्यूमैनिटीज क्लासरूम' में भाग लिया।

➢ 6 अक्टूबर से 11 अक्टूबर 2025, को डॉ. लीना वैद्य सहायक आचार्या (अंग्रेजी) ने रिसर्च इंस्टीट्यूशन ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोगाम ऑन 'इन्नोवेटिव टीचिंग एंड लर्निंग पेडागॉजी' में भाग लिया।

➢ नवंबर 2025 को डॉ. लीना वैद्य सहायक आचार्या (अंग्रेजी) ने डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स एंड स्टैटिसटिक्स, गवर्नमेंट ऑफ हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित एक दिवसीय 'वर्कशॉप ऑन इंप्रूविंग कोऑर्डिनेशन एंड अवॉइडिंग डुप्लीकेशन ऑफ स्टैटिसटिक्ल एक्टिविटीज' में भाग लिया।

➢ नवंबर–दिसंबर 2025 को डॉ. लीना वैद्य सहायक आचार्या (अंग्रेजी) की दो कविताएं हिमाचल प्रदेश की भाषा एवं सांस्कृतिक विभाग की द्वि मासिक पत्रिका के नवंबर–दिसंबर 2025 के अंक प्रकाशित हुई।

➢ 27 फरवरी से 1 मार्च तक डॉ. लीना वैद्य सहायक आचार्या

(अंग्रेजी) तीन दिवसीय कुल्लू साहित्य उत्सव में भाग लिया व कविता पाठ किया।

➢ 4 और 5 मार्च 2026 को डॉ. लीना वैद्य सहायक आचार्या (अंग्रेजी) ने Sir Parashurambhau College, Savitribai Phule Pune University द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन "Reimagining Knowledge: Voices Expression Counter Narratives of the Humanities and Social Sciences in the Era of AI Driven Technology" में Resource Person के रूप में भाग लिया, और "Reading Transgender Lives through Intersectionality and Social Location: Gendered Embodied Inequality" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

➢ रत्तन देव, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), ने "The Dynamics of Indian Political Culture: Analytical and Contemporary Perspectives" शीर्षक से एक शोध पत्र पीयर–रिव्यूड, डबल ब्लाइंड एवं रेफरीड जर्नल में प्रकाशित किया है।

➢ रत्तन देव, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), ने नई दिल्ली स्थित Don Bosco Institute of Technology से एक सप्ताह का फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम सफलतापूर्वक पूर्ण किया है।

➢ 27 फरवरी से 1 मार्च तक रत्तन देव सहायक आचार्य (राजनीति शास्त्र) ने तीन दिवसीय कुल्लू साहित्य उत्सव में भाग लिया व कविता पाठ किया।

➢ इसके अतिरिक्त रत्तन देव, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), के अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से संबंधित कई लेख राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

पुस्तकालय अध्यक्ष की उपलब्धियां :

➢ राजकीय महाविद्यालय पनारसा और निर्मला महाविद्यालय मुवत्तुपुजा केरल के बीच हुए एमओयू के अंतर्गत 19 जनवरी से 29 जनवरी तक एक छात्र विनिमय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में राजकीय महाविद्यालय पनारसा के 16 छात्रों ने पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमती बिंदु के साथ भाग लिया।

➢ 24 February 2026 : NDLI User Awareness Programme (Online) National Digital Library of India (NDLI) और NDLI Club के उपयोग पर GCTE Dharamshala द्वारा आयोजित ऑनलाइन यूज़र अवेयरनेस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से अध्ययन सामग्री, ई–बुक्स तथा शोध संसाधनों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने के बारे में जानकारी प्राप्त की।

➢ 7 March 2026 : Webinar on Enhancing Research Visibility and Use of ORCID (Online) "Enhancing Research Visibility and Use of ORCID" विषय पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया। इसमें ORCID (Open Researcher and Contributor ID) के माध्यम से शोधकर्ताओं की एक विशिष्ट डिजिटल पहचान बनाने तथा अपने शोध कार्य की वैश्विक दृश्यता (Research Visibility) बढ़ाने के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

अभिभावक–शिक्षक संघ : अध्यापकों–छात्रों–अभिभावकों के बीच संवाद कायम करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में पीटीए का गठन प्रतिवर्ष किया जाता है। संघ न केवल महाविद्यालय प्रशासन के साथ विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों में सहयोग करता है, बल्कि अपने सुझावों द्वारा एक सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण भी करता है। सत्र 2025–26 के लिए गठित संघ का विवरण इस प्रकार है:–

प्रधान : श्री वीर सिंह

उप–प्रधान : श्री मनी राम

सचिव : श्री हीरा सिंह (सहायक आचार्य अर्थशास्त्र)

सह–सचिव : निशा देवी

कोषाध्यक्ष : प्रकाश चंद

सदस्य : सभी अभिभावक एवं अध्यापकगण

सत्र 2025–26 में पीटीए में कुल 166092 रुपए की धनराशि आय के रूप में प्राप्त हुई, इसमें से 2025–26 में 601211 रुपए की धनराशि विभिन्न विकासात्मक/सांस्कृतिक गतिविधियों व छात्रों के हितों से जुड़े अन्य कार्यों हेतु व्यय की गई। अब पीटीए में कुल बचत धनराशि 92195 रुपए है।

केंद्रीय छात्र संघ (एससीए) : महाविद्यालय के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए तथा विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं को प्राचार्य तक पहुंचाने के लिए महाविद्यालय में प्रत्येक वर्ष केंद्रीय छात्र संघ का गठन किया जाता है। सत्र 2025–26 के लिए गठित केंद्रीय छात्र संघ (एससीए) का विवरण इस प्रकार है :–

अध्यक्ष : वंशिका (कला स्नातक तृतीय वर्ष)

उपाध्यक्ष : ललिता ठाकुर (कला स्नातक तृतीय वर्ष)

सचिव : सीमा ठाकुर (कला स्नातक द्वितीय वर्ष)

सह–सचिव : शेर सिंह (कला स्नातक प्रथम वर्ष)

छात्रवृत्तियां :

वित्त वर्ष 2024–25 के अतर्गत अलग–अलग योजनाओं के तहत विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान की गई।

➢ अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों के लिए केंद्र प्रायोजित पोस्ट मेट्रिक छात्रवृति योजना के तहत 13 विद्यार्थियों को छात्रवृति प्रदान की गई।

➢ हिमाचल प्रदेश सरकार के अंतर्गत कल्पना चावला छात्रवृत्ति 02 छात्राओं को प्रदान की गई।

➢ केंद्रीय क्षेत्र छात्रवृत्ति योजना, जो मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इस योजना के अंतर्गत महाविद्यालय के 06 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

वार्षिक पत्रिका : महाविद्यालय के वार्षिक पत्रिका 'अर्जिक्या' विद्यार्थियों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने का सौभाग्य प्रदान करती है। इसमें विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। यह पत्रिका मुख्य सम्पादक डॉ. लीना वैद्य के संरक्षण में तैयार हुई है। इस सत्र के विभिन्न विषयों के प्राध्यापक एवं छात्र/छात्रा सम्पादकों का विवरण इस प्रकार है :–

क्रम संख्या	अनुभाग	प्राध्यापक सम्पादक	छात्र सम्पादक
1	अंग्रेजी	डॉ. लीना वैद्य (सहायक आचार्य अंग्रेजी)	आर्यव्रत (कला स्नातक तृतीय वर्ष)
2	हिंदी	श्रीमती अनीता (सहायक आचार्य हिंदी)	किरण वेदी (कला स्नातक तृतीय वर्ष)
3	पहाड़ी	श्री कृष्ण लाल (सहायक आचार्य इतिहास)	नगमा देवी (कला स्नातक तृतीय वर्ष)
4	वाणिज्य	डॉ. मनीष सूद (सहायक आचार्य वाणिज्य)	प्रियंका (वाणिज्य स्नातक तृतीय वर्ष)

समझौता ज्ञापन (MoUs) :

विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल एवं ज्ञानवृद्धि हेतु महाविद्यालय ने देश व प्रदेश की विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जिसमें हिमतरु प्रकाशन समिति कुल्लू, भाषा एवं संस्कृति विभाग जिला मंडी, वन विभाग कुल्लू एवं वन विभाग पनारसा प्रमुख रूप से शामिल है। इसके अतिरिक्त सत्र 2025–26 में छात्र विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय मुवत्तुपुजा केरल के साथ भी महाविद्यालय ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

समझौता ज्ञापन (MoUs) के अंतर्गत छात्र विनिमय कार्यक्रम :

➢ राजकीय महाविद्यालय पनारसा और निर्मला महाविद्यालय मुवत्तुपुजा केरल के बीच हुए एमओयू के अंतर्गत 19 जनवरी से 29 जनवरी तक एक छात्र विनिमय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में राजकीय महाविद्यालय पनारसा के 16 छात्रों ने पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमती बिंदु के साथ भाग लिया।

➢ 27 फरवरी से 1 मार्च 2026 तक महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने डॉ. लीना वैद्य एवं श्रीमती बिंदु के नेतृत्व में हिमतरु प्रकाशन समिति कुल्लू द्वारा आयोजित तीन दिवसीय साहित्य उत्सव कुल्लू में समझौता ज्ञापन के अंतर्गत भाग लिया

महाविद्यालय की गतिविधियां :

➢ 24 से 30 जून 2025 तक महाविद्यालय में प्रकृति के साथ सामंजस्य संबंधी कार्यशाला का आयोजन IQAC सेल और इको क्लब के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इसने लगभग 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया ।

➢ 7 जुलाई 2025 को महाविद्यालय में छात्र शिक्षक समन्वयक समिति का गठन किया गया। इस समिति का उद्देश्य महाविद्यालय में समय–समय पर आयोजित होने वाली विभिन्न गतिविधियों को सही तरीक़े से आयोजित करना, विद्यार्थियों की ज्यादा से ज्यादा भागीदारी को सुनिश्चित करना, विद्यार्थीयो में नेतृत्व क्षमता का विकास करना, कौशल निर्माण को बढ़ावा देना है और सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करना इत्यादि है।

➢ 19 जुलाई 2025 को महाविद्यालय की महिला प्रकोष्ठ द्वारा व्यक्तिगत स्वच्छता या निजी साफ–सफाई संबंधी व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें 120 छात्राओं ने भाग लिया।

➢ 15 नवंबर 2025 को महिला प्रकोष्ठ द्वारा वर्तमान में नशे के दुष्प्रभाव और नशे से बचने के लिए ध्यान का महत्त्व, से संबंधित एक व्याख्यान का आयोजन किया गया

➢ 7 मार्च 2026 को महिला प्रकोष्ठ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया इसमें महिलाओं के अधिकार, सामाजिक दायित्व, क़ानूनी अधिकार, व्यक्तिगत सुरक्षा, आत्म सशक्तिकरण से संबंधित व्याख्यान दिए गए।

➢ 25 सितंबर 2025 को अंग्रेज़ी विभाग और हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में साहित्य परिषद के अंतर्गत एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

➢ 14 से 15 नवंबर 2025 को सरदार पटेल विश्वविद्यालय द्वारा समूह–1 का आयोजन राजकीय महाविद्यालय कुल्लू में किया गया, जिसमें महाविद्यालय के विद्यार्थी गिरिराज द्वारा कार्टून (Cartoon Making) प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान और पोस्टर मेकिंग में तृतीय स्थान हासिल किया ।

➢ 14 से 15 नवंबर 2025 को सरदार पटेल विश्वविद्यालय द्वारा समूह–3 का आयोजन राजकीय महाविद्यालय कुल्लू में किया गया जिसमें क्रिएटिव कोरियोग्राफी (Creative Choreography) में हमारे महाविद्यालय के 12 विद्यार्थियों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

➢ 14 अगस्त 2025 को महाविद्यालय की कल्चरल सेल के द्वारा आज़ादी के संघर्ष पर एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।

खेल–कूद गतिविधियाँ :

➢ 24 जून 2025 को महाविद्यालय की क्रिकेट टीम ने कृष्ण लाल, सहायक आचार्य (इतिहास) के मार्गदर्शन में ग्रेट हिमालय नेशनल पार्क शाईरोपा, बंजार जिला कुल्लू द्वारा आयोजित विश्व धरोहर उत्सव–2025 में भाग लिया ।

➢ 8 से 10 अक्टूबर 2025 सरदार पटेल विश्वविद्यालय मंडी द्वारा आयोजित अंतर–महाविद्यालय रेसलिंग प्रतियोगिता में महाविद्यालय की ओर से रोहानी ठाकुर, निशांत, जतिन, डिंपल राजेश और अजय ने भाग लिया जिसमे रोहानी ठाकुर ने स्वर्ण पदक और निशांत ने कांस्य पदक हासिल किया।

पूर्व छात्र संघ :

➢ 14 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय के पूर्व छात्र संघ के द्वारा सात दिवसीय सौंदर्य प्रसाधन कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय की 40 छात्राओं ने भाग लिया ।

➢ 21 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय के पूर्व छात्र संघ के द्वारा सात दिवसीय सिलाई–बुनाई कार्यशाला का आयोजन किया इस कार्यशाला में 30 छात्राओं ने सिलाई–बुनाई का कार्य सिखा ।

राष्ट्रीय सेवा योजना की वार्षिक गतिविधियाँ :

➢ 19 से 25 जून 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा महाविद्यालय में आने वाले नए विद्यार्थियों के लिए हेल्प डेस्क लगाया गया।

➢ 12 जुलाई 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा एक पेड़ मां के नाम अभियान के दूसरे चरण आरंभ किया गया, जिसके अंतर्गत महाविद्यालय की प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय परिसर में पेड़ लगाकर इस अभियान का शुभारंभ किया।

➢ 19 जुलाई 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई रोवर–रेंजर इकाई एवं एंटी ड्रग सेल द्वारा “Say No To Drugs Campaign” आरंभ किया।

➢ 13 अगस्त 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा “Say No To Drugs Campaign” के अंतरगत महाविद्यालय के स्वयंसेवियों को नशे के खिलाफ शपथ दिलाई

गई।

➢ 23 अगस्त 2025 को महविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा "स्वच्छता ही सेवा है" कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर में विशेष भाई अभियांन चलाया चलाया गया।

➢ 30 अगस्त 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं महाविद्यालय सौंदर्यीकरण समिति द्वारा महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन में स्विस ग्रास लगाई गई।

➢ 13 सितंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं एंटी ड्रग सेल के द्वारा नशा मुक्त भारत अभियांन के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर से पनारसा चेक पोस्ट तक जगरूकता रैली निकाली गई।

➢ 20 सितंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के चार स्वयंसेवी दलीप, मनोरमा, वंदना और रमन ठाकुर ने महाविद्यालय कुल्लू में आयोजित जिला स्तरीय पूर्व गणतंत्र दिवस चयन शिविर में भाग लिया।

➢ 24 सितंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं पीएम श्री रा.ब.मा. पाठशाला पनारसा की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संयुक्त तत्वधान में राष्ट्रीय सेवा योजना का स्थापना दिवस मनाया गया।

➢ 27 सितंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एव पुलिस थाना औट के संयुक्त तत्वधन में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पुलिस थाना औट की तरफ से ए. एस.आई. जय सिंह ने नशे से होने वाले दुष्प्रभावों एवं इससे जुड़े कानूनी प्रावधानों के पर अपना व्याख्यान दिया।

➢ 1 अक्टूबर 2025 को गांधी जयंती के उपलक्ष्य पर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा "स्वच्छता ही सेवा" कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर में विशेष सफाई अभियान चलाया गया।

➢ 31 अक्टूबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा भारत के लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150 जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया गया।

➢ 25 नवंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, इतिहास विभाग और करियर एवं काउंसलिंग सेल द्वारा Climate and Ecological Justice and Carrer Opportunities in NGOs and Private sector विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें ActionAid Association and Human Development Organization की तरफ से श्री अशोक कुमार ने अपना व्याख्यान दिया।

➢ 26 नवंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवियों ने संविधान दिवस के उपलक्ष्य पर संविधान की प्रस्तावना की शपथ ली।

➢ 29 नवंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं महाविद्यालय सौंदर्य करण समिति के संयुक्त तत्वाधान में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा चलाया गया कार्यक्रम "एक बूटा बेटी के नाम" अभियान के अंतर्गत महाविद्यालय के नए भवन परिसर में सजावटी पौधे लगाए गए।

➢ 1 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं रेड रिबन क्लब द्वारा विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य पर महाविद्यालय परिसर से पनारसा चेक पोस्ट तक एड्स संबंधी जागरूकता रैली निकाली गई।

➢ 6 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय के इलेक्ट्रोल लिटरेसी क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया।

➢ 27 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा महाविद्यालय परिसर में एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के स्वयंसेवियों ने महाविद्यालय परिसर में बनी क्यारियों एवं गमलों की मरम्मत की तथा पूरे महाविद्यालय परिसर में विशेष सफाई अभियान चलाया गया।

➢ 5 फरवरी से 11 फरवरी 2026 तक महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा महाविद्यालय परिसर एवं पनारसा गाँव में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रकार की अकादमिक, सांस्कृतिक और खेलकूद गतिविधियां आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय परिसर के सौंदर्यकरण में विशेष ध्यान दिया गया दिया गया।

रेड रिबन क्लब :

➢ 1 अगस्त 2025 को महाविद्यालय के रेड रिबन क्लब द्वारा एक परिचयात्मक सत्र का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय की द्वितीय और तृतीय वर्ष के छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया। इसमें विद्यार्थियों को एच.आई.वी./एड्स जैसे गंभीर विषयों के प्रति सजग करते हुए विस्तारपूर्वक जानकारी और युवाओं की सामाजिक ज़िम्मेदारियों पर प्रकाश डाला गया और एडस पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म भी प्रदर्शित की गई।

➢ 13 अगस्त 2025 को महाविद्यालय में रेड रिबन क्लब की ओर से नशा मुक्ति अभियान के तहत एक महत्वपूर्ण शपथ समारोह का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों मे नशामुक्ति के प्रति जागरूकता फैलाना और उन्हें नशे के खतरों के बारे में जानकारी देना था।

रोवर–रेंजर :

➢ 10 जुलाई 2025 को महाविद्यालय की रोवर–रेंजर इकाई द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला एवं पौधारोपण का आयोजन किया गया इसमें महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन के चारों ओर विद्यार्थियों द्वारा पौधारोपण किया गया साथ ही विद्यार्थियों ने फूलों का बीज रोपण और सभी विभागों की नाम पट्टिकाओं का निर्माण किया गया।

➢ 4 से 5 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय की रोवर–रेंजर इकाई द्वारा सफ़ाई अभियान का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय परिसर की सफ़ाई की गई और साथ ही पौधारोपण किया गया। इसमें 50 रोवर एवं रेंजर उपस्थित रहे।

विभागीय गतिविधियाँ :

इतिहास विभाग :

➢ 16 से 22 सितंबर 2025 तक, महाविद्यालय की सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ एवं इतिहास विभाग ने हेरिटेज फाउंडेशन, मुंबई के सहयोग से संग्रहालय अध्ययन पर सात दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में महाविद्यालय के लगभग 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के प्रशिक्षक / वक्ता श्री भुजंग राम राव बोब्बडे, निदेशक, हेरिटेज फाउंडेशन, मुंबई (भारत, अमेरिका, थाईलैंड एवं दक्षिण कोरिया) थे।

➢ 25 नवंबर 2025 को महाविद्यालय की एनएसएस इकाई, इतिहास विभाग, करियर काउंसलिंग सेल एवं ईको क्लब द्वारा जलवायु एवं पारिस्थितिक न्याय तथा गैर–सरकारी संगठनों एवं निजी क्षेत्र में करियर के अवसर विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एक्शनएड एसोसिएशन एवं ह्यूमन डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन जैसे दो गैर–सरकारी संगठनों से जुड़े मानवाधिकार रक्षक श्री अशोक कुमार को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

➢ 6 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय के साहित्य परषिद, इतिहास विभाग एवं एनएसएस इकाई द्वारा संयुक्त रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजकीय महाविद्यालय कुल्लू के प्राचार्य डॉ. राकेश राणा थे।

➢ 22 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा संग्रहालय संग्रहण एवं रखरखाव संबंधी एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

➢ 25 दिसम्बर 2025 तक साहित्य परषिद एवं इतिहास विभाग द्वारा महाविद्यालय में संग्रहालय का निर्माण कार्य पूर्ण किया जिसमे विलुप्त हो रही संस्कृति को संजोने का कार्य किया जाएगा।

राजनीति विज्ञान विभाग :

➢ 26 नवम्बर 2026 को राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा संविधान दिवस मनाया गया जिसके अंतर्गत एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में श्री राजेश सिंह, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय बंजार उपस्थित रहे। उन्होंने संविधान पर विस्तार से चर्चा की।

संगीत विभाग :

➢ 12 अगस्त 2025 को राजकीय महाविद्यालय पनारसा में बरसात और सावन के स्वागत में दो सप्ताह 31 जुलाई से 12 अगस्त तक चलने वाले मल्हार उत्सव का सफल आयोजन किया गया। यह उत्सव महाविद्यालय के संगीत विभाग एवं कल्चर सेल के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया उत्सव के दौरान महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने पारंपरिक राग मल्हार और सावन की रिमझिम फुहारों को सुरों में पिरोते हुए कई प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।

अंग्रेजी विभाग :

➢ 10 जून 2025 को महाविद्यालय की लिटरेरी सोसायटी एवं निर्मला कॉलेज केरल के हिंदी विभाग द्वारा एकदिवसीय वेबीनार का आयोजन किया गया जिसका विषय "एक ही धरती : पर्यावरण संकट" था।

हिंदी विभाग :

➢ 1 से 30 सितंबर, 2024 तक हिंदी विभाग द्वारा हिंदी माह का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को 70 पुस्तकों का वितरण किया गया और विद्यार्थियों ने इन पुस्तकों से संबंधित समीक्षाएं लिखी। इसके अतिरिक्त अन्ताक्षरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

➢ 6 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय के हिंदी विभाग एवं इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वाधान में भारतीय ज्ञान प्रणाली अंतर्गत व्याख्यान माला का आयोजन किया गया है जिसमे महाविद्यालय कुल्लू से प्राचार्य डॉ. राकेश राणा जी ने अपना व्याख्यान दिया।

➢ 19 दिसंबर 2025 को हिंदी विभाग एवं इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वाधान में भारतीय ज्ञान प्रणाली अंतर्गत व्याख्यान माला के अंतर्गत दूसरेव्याख्यान का आयोजन किया गया है, जिसमे श्री राकेश कंवर, सचिव, उच्च शिक्षा विभाग हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा महाविद्यालय के विद्यार्थियों को ऑनलाइन माध्यम द्वारा संबोधित किया।

➢ 12 दिसंबर 2025 को महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न पुस्तकों से सम्बंधित पुस्तकों पर चर्चा की गई।

वाणिज्य विभाग :

➢ 24 दिसम्बर, 2024 को महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग द्वारा राष्ट्रीय उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाया गया।

पुस्तकालय :

राजकीय महाविद्यालय पनारसा के पुस्तकालय का संचालन वर्ष 2015 से निरंतर पाठकों की सेवा में क्रियाशील है। वर्तमान में पुस्तकालय में लगभग 1540 पुस्तकें, पांच पत्रिकाएं, दो समाचार पत्र एवं दो जर्नल्स पाठकों का ज्ञानवर्धन कर रहे हैं । इसके अतिरिक्त हमारे विद्यार्थी भारत सरकार द्वारा स्थापित छक्स नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी की ऑनलाइन सेवा का भी लाभ उठा रहे हैं। अभी हाल ही में महाविद्यालय के पुस्तकालय में INFLIBINET dh ONOS की योजना से भी जोड़ा गया जिसके तहत ONE NATION ONE SUBSCRIPTION की सेवा में हमारे पाठक अपनी रुचि की सामग्री एक क्लिक में भी ऑनलाइन पा सकेंगे।

पुस्तकालय सोसाइटी की गतिविधियाँ :

- 16 मार्च 2025 को पुस्तकालय सोसाइटी के विद्यार्थियों ने कुल्लू साहित्य उत्सव में भाग लिया।
- 15 मई 2025 को पुस्तकालय सोसाइटी के विद्यार्थियों द्वारा गांव थलोट का भ्रमण किया गया।
- 14 मई से 24 मई 2025 तक पुस्तकालय सोसाइटी के विद्यार्थियों ने मंडी में भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System) के अंतर्गत शोध कार्य किया।
- 24–25 जून 2025 को पुस्तकालय सोसाइटी के विद्यार्थियों ने ग्रेट हिमालय नेशनल पार्क शाईरोपा, बंजार जिला कुल्लू द्वारा आयोजित विश्व धरोहर उत्सव–2025 में भाग लिया ।
- 12 अगस्त 2025 पुस्तकालय सोसाइटी द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। साथ ही पुस्तकालय दिवस भी बड़े धूमधाम से मनाया गया।
- 9 दिसम्बर 2025 पुस्तकालय सोसाइटी के विद्यार्थियों ने "मेरी प्रिय पुस्तक" विषय पर व्याख्यान और पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- 19 जनवरी से 29 जनवरी 2026 पनारसा महाविद्यालय और निर्मला कॉलेज, केरल के बीच समझौता ज्ञापन के अंतर्गत सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम में महाविद्यालय के 16 विद्यार्थियों ने सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष बिंदु के साथ निर्मला कॉलेज, केरल का भ्रमण किया।
- 27 फरवरी 2026 से 1 मार्च 2026 महाविद्यालय के 15 विद्यार्थियों ने कुल्लू साहित्य उत्सव में भाग लिया।

सारांश : महाविद्यालय की स्थापना से लेकर आज तक महाविद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। महाविद्यालय से अनेक विद्यार्थी स्नातक कर चुके हैं और वर्तमान में सरकारी एवं निजी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं जिसमें हमारे शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महाविद्यालय में वर्तमान में विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशल को बढ़ाने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित करवाई जा रही हैं। महाविद्यालय ने तीन समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए हैं जो कि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सेवा योजना, रोवर–रेंजर, रेड रिबन क्लब एवं महिला प्रकोष्ठ इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में आपनी सेवाएं दे रहे हैं, जिसका प्रभाव हमें विद्यार्थियों में दिख रहा है। महाविद्यालय को अभी और नए कीर्तिमान भी स्थापित करने हैं। अंत में, मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देना चाहती हूँ जिन्हें आज पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आप सभी का पुनः हृदय की गहराइयों से धन्यवाद करती हूं। ■

E- News Letter ECHOES

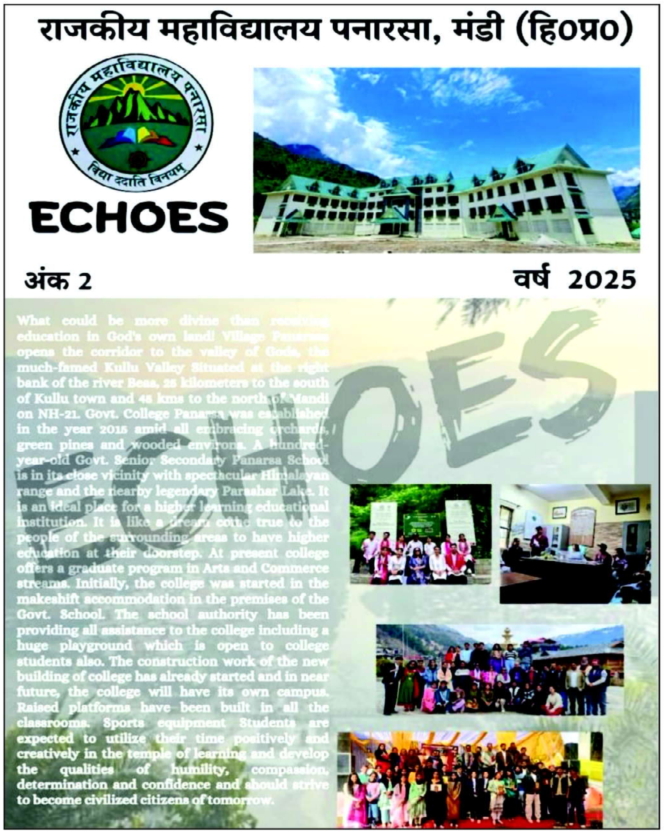
राजकीय महाविद्यालय पनारसा, मंडी (हि0प्र0)

ECHOES

अंक 2 वर्ष 2025

What could be more divine than receiving education in God's own land! Village Panarsa opens the corridor to the valley of Gods, the much-famed Kullu Valley Situated at the right bank of the river Beas, 25 kilometers to the south of Kullu town and 45 kms to the north of Mandi on NH-21. Govt. College Panarsa was established in the year 2015 amid all embracing orchards, green pines and wooded environs. A hundred-year-old Govt. Senior Secondary Panarsa School is in its close vicinity with spectacular Himalayan range and the nearby legendary Parashar Lake. It is an ideal place for a higher learning educational institution. It is like a dream come true to the people of the surrounding areas to have higher education at their doorstep. At present college offers a graduate program in Arts and Commerce streams. Initially, the college was started in the makeshift accommodation in the premises of the Govt. School. The school authority has been providing all assistance to the college including a huge playground which is open to college students also. The construction work of the new building of college has already started and in near future, the college will have its own campus. Raised platforms have been built in all the classrooms. Sports equipment Students are expected to utilize their time positively and creatively in the temple of learning and develop the qualities of humility, compassion, determination and confidence and should strive to become civilized citizens of tomorrow.

New Initiatives

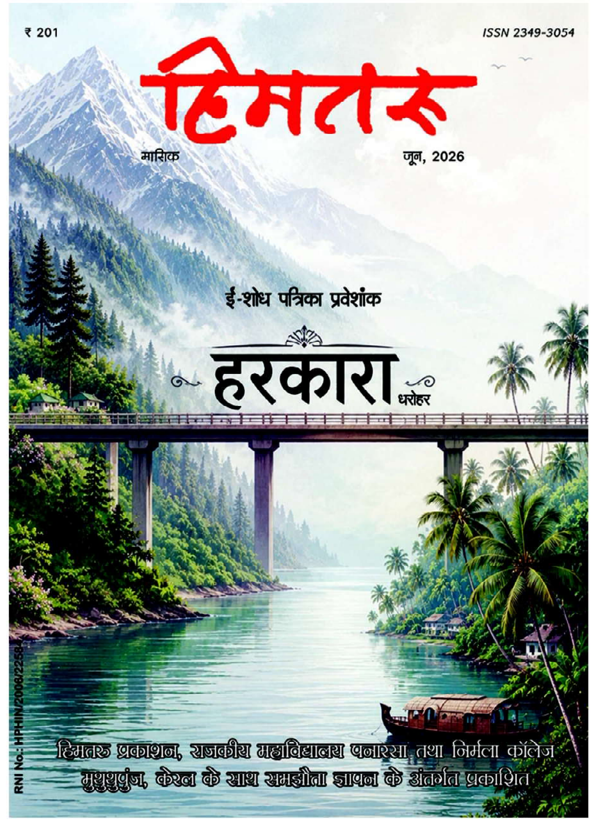

Seminar and Workshop on “Harmony with Nature”

Vishwa Dharohar Utsav–24th–25th June, 2025

"Alumni Interactive Session with Students"

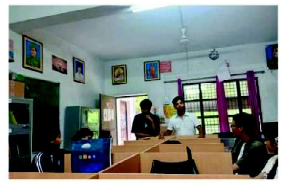

Book Exhibition on Freedom struggle- 12th August 2025

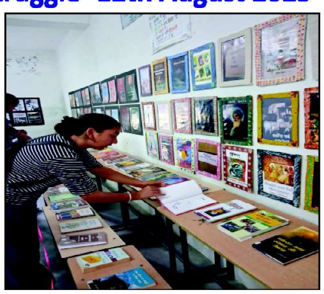

History museum display

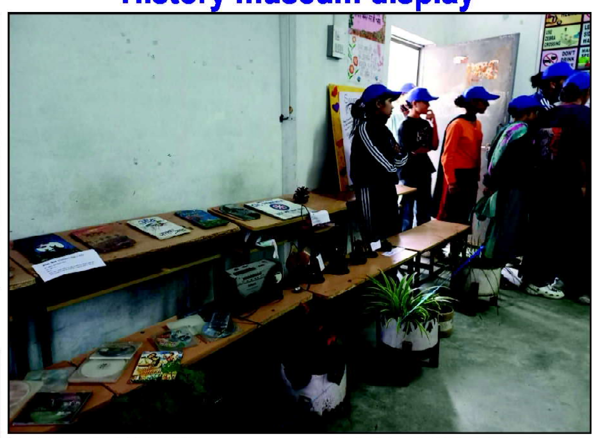

Women cell: Lecture on menstrual hygiene

Library Society Function and Book Display

Online webinar with kerala college

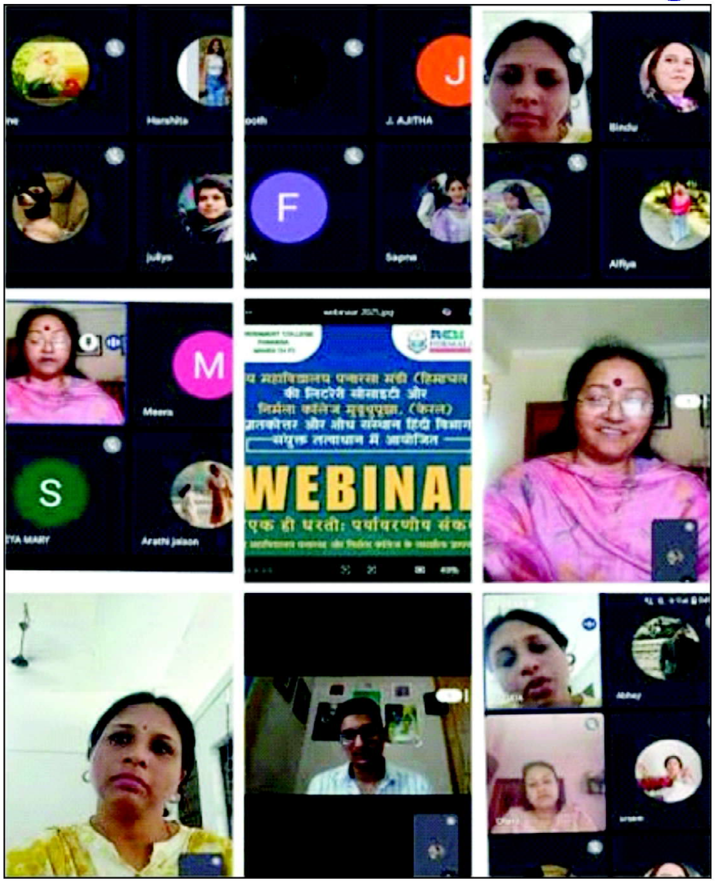

9 अक्टूबर, 2025 : महाविद्यालय में क्रैक अकादमी छात्रवृत्ति परीक्षा का आयोजन

Lecture series on Indian Knowledge System by IQAC

Drug Awareness Program Organised by Women Cell

SANVIDHAAN DIWAS

National consumer Rights Day celebrated on 24th December 2025

Seven days' workshop on painting, organised by Rovers and Rangers

Matdata jagrukta Karyakram

Lecture organized by Career Counseling Cell in Collaboration with Chitkara University 26th Dec. 2025

7 days Vocational training on tailoring and beautician course

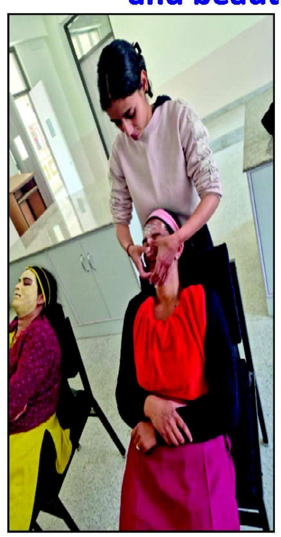

OPEN LIBRARY (Est. Dec. 2025)

इंटर कॉलेज ग्रुप–1, ग्रुप–3 और ग्रुप–4 के विजेता एवं प्रतिभागी

Cultural Exchange Programme,19th to 29th Jan.2026

International Women's Day 8th March 2026

Educational Tour to Chamba

Natya karyashala

Shabdkosh hekathon: Community Engagement

Campus Beautification

Interaction with Freshers

Plantation Drive

Van Mahotsav Sai Ropa

Seminar and workshop june 2025 Funded by Parvati project and in collaboration with Forest Department Panarsa and GSSS Panarsa

Abhivyakti : CSCA Function: March 2026

कुल्लू साहित्य उत्सव-2026

इतिहास केवल तिथियाँ नहीं, जीवन–दृष्टि है

(सचिव, शिक्षा विभाग श्री राकेश कंवर के साथ विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं से भरी चर्चा)

इतिहास की समझ क्यों जरूरी है?

आज हम इस सवाल का उत्तर जानने की कोशिश कर सकते हैं, मिल कर। लेकिन इससे पहले कि हम इस सवाल के उत्तर को जानने की कोशिश करें मुझे लगता है कि हम इतिहास के बारे में कुछ और जरूरी बातें जान लें, मतलब वे बातें जो मुझे जरूरी लगती हैं।

पहली बात यह है कि इतिहास के बारे में जो भी हम समझते हैं, जानते हैं, या पढ़ते हैं, वह अधूरा है। यह लगभग ऐसा है कि मानों हम एक बहुत बड़े वेयरहाउस में चले जाएं, जहां पूरा अंधेरा हो और हमारे पास एक बहुत छोटी सी टॉर्च हो तो उसे जला कर हम कुछ एरिया देख लें। जितना दिखता है उसे देखने और समझने की कोशिश करें और उसके आधार पर पूरे वेयरहाउस का अंदाजा लगा लें। हमें कुछ ही हिस्से दिखते हैं, हम उतना ही जान पाते हैं, और बाकी सब जो, अधिकांश भाग है, वह क्योंकि अंधेरे में है, उसके बारे में हम कुछ नहीं जानते, न ही जान पाएंगे। हमारा इतिहास कुछ ऐसा ही है।

लाखों साल से, जब से जब से इंसान पृथ्वी पर है, तब से ऐसा अनुमान है कि कुल मिलाकर हम लगभग 12,000 साल से खेती कर रहे हैं। विज्ञान के मुताबिक की हमें खेती करना आई करीब 12,000 साल पहले। इससे पहले के लाखों सालों के बारे में हमें कोई बहुत ज्यादा मालूम ही नहीं है। थोड़ा बहुत जो लिखा हुआ हमें मिलता है वह आज से चार पांच हजार साल पहले से पीछे नहीं जाता। अगर जाता है तो हम उसे पढ़ नहीं सकते जैसे इंडस वेली का स्क्रिप्ट जिसे हम अभी तक पढ़ नहीं सके। और इंडस वेली की सिविलाइजेशन थी कब, यह भी हमें ठीक से मालूम नहीं। क्योंकि जो भी डेट हमें मालूम है वह भी बहुत न्रिल है, बहुत ज्यादा सिनपक है। हजार साल इधर, या हजार साल उधर कभी भी हो सकते हैं। और हजार साल बहुत होते हैं।

तो इस तरह जिस इतिहास की हम बात करते हैं, जिसके ऊपर हम लड़ने मरने के लिए तैयार हो जाते हैं, यह कोई ज्यादा पुराना नहीं है। जिसे हम सनातन कहते हैं वह भी शायद आज से तीन–चार हजार साल पहले नहीं जाता। यह बहुत कम समय है, पूरे ब्रह्मांड के इतिहास की दृष्टि से जिसके बारे में हमारी थोड़ी सी समझ है। और यह समझ भी ऐसी है कि इस पर हम सभी सहमत नहीं है।

दूसरी बड़ी बात इतिहास के बारे में यह है कि आज की दृष्टि से जब हम इतिहास को, पिछले वक्त को देखते हैं तो बड़ी दिक्कतें हो जाती हैं क्योंकि हम आज की समझ के मुताबिक अतीत को समझने की कोशिश करते हैं, वह भी अधूरी कोशिश है। यहाँ तक कि आज हमारी भाषा, हमारे शब्द, उन शब्दों के जो मायने है, वह वैसे नहीं है जो आज से 100 साल पहले, 200 साल पहले, या 2000 साल पहले थे। बहुत मामलों में तो वे जबानें भी अब नहीं है जो लोग तब बोलते थे।

इसलिए आज के समय और स्थान से अतीत को देखना अपने आप में एक बड़ी समस्या है। जैसे कोई आदमी कुल्लू आ जाये अमेरिका से, और यहां के देवताओं की व्यवस्था को देखने और समझने की कोशिश करे। उसकी जो दृष्टी होगी, उसकी जो समझ होगी, वो बहुत अलग किस्म की होगी। बाहर से आने वाले अपने संदर्भों से न केवल कुल्लू के वर्तमान को बल्कि कुल्लू के अतीत को जानने, देखने, सोचने, समझने की कोशिश करेंगे। कुल्लू दशहरा जब होता है तो उसको कुल्लू के लोग किस तरह से देखेंगे, देवता के साथ जुड़े हुए लोग किस तरह से देखेंगे, और बाहर से आने वाले मंडी के लोग, शिमला के लोग, किन्नौर, ऊना , कांगडा के लोग या फिर पंजाब, हरियाणा , राजस्थान के लोग किस तरह से देखेंगे, या दक्षिण भारत से आने वाले किस तरह से देखेंगे या फिर किसी दूसरे देश से आने वाले लोग किस तरह से देखेंगे यह उन सभी की अपनी–अपनी सोच, अपनी–अपनी समझ, उनकी पढ़ाई, उनके पूर्वाग्रह आदि बहुत सी बातों पर निर्भर करेगा।

तो इसलिए जब हम किसी भी जगह, किसी भी समय में रहते हुए अतीत को जानने की कोशिश करते हैं तो हमारी अपनी समझ या तो इसमें एक रुकावट का काम करती है या उसको एक अलग किस्म का रंग दे देती है। एक चश्मा है, वर्तमान का, जिससे हम देखते हैं अतीत को। जैसे सती प्रथा है। आज तो सती

होती नहीं। कानून के लिहाज से भी बंद है। तो जब हम आज सती प्रथा को देखते हैं और उसके बारे में कुछ टिपणिया करते हैं तो वह समझ हमारे समय की सोच और समझ के आधार पर बनती है। लेकिन उस समय, उस समाज के लोग सती प्रथा को किस तरह से देखते थे यह हम पूरी तरह से कभी जान नहीं सकते। और उन सब के विचार भी एक से नहीं होंगे।

हम इतिहास को जानने के लिए "सोर्स" ढूंढते हैं। उस समय किसी ने कुछ लिख दिया वह हमारा "प्रमाण" बन जाता है। जैसे हम आजकल लिखते हैं वैसे ही लोग तब लिखते होंगे। आज जो लिखा हुआ है, या जो हम लिखेंगे क्या वह पूरा "सच" होगा। मान लो मैं आज हिंदुस्तान के बारे में कुछ लिखूं, तो क्या यह कहा जा सकता है कि वह सच होगा पूरे देश के बारे में? क्या मेरी इतनी जानकारी है भी कि मैं इतने बड़े देश के बारे में कोई ऐसी चीज लिख सकूं जो पूरी तरह ठीक हो। हमारा देश 150 करोड़ लोगों का है। इतना बड़ा और विविध, हिमालय से लेकर समंदर तक फैला हुआ। जिसके बारे में मुझे खुद ही बहुत कम मालूम है क्योंकि न तो मैंने इस देश को पूरी तरह देखा है, न ही शायद एक जिंदगी में पूरा देख सकूँगा। शायद ही एक व्यक्ति इस विविधता को पूरी तरह समझ सकता है। तो आज अगर मैं कुछ लिखूं और सौ साल बाद लोग उसको पढ़ें और बोलें कि यह "सच" है तो यह एक अधूरी और गलत बात ही होगी। पूरी झूठ तो न हो पर सीमित और अधूरी तो होगी ही। क्योंकि मेरे जानने और लिखने की सीमा है।

इसी तरह आज से सैंकड़ों या हजारों साल पहले जो लोग लिख रहे थे उनकी भी सीमाएं थीं। तो उनकी दुनिया की समझ जितनी थी उसके हिसाब से वे लिखते थे। अगर हम आज यह मान लें कि तब का लिखा हुआ या कहा हुआ बिल्कुल सच है तो यह बात ठीक नहीं होगी।

मान लो किसी ने कुछ लिखा, उससे बिल्कुल उल्टा किसी दूसरे ने लिखा, उससे बिल्कुल अलग किसी तीसरे ने लिखा, तो तीनों बातें अलग हो गईं, इनमें से किसको सच मानें। और अगर इन तीन में से दो चीजें तो गुम हो गई, एक ही बची रही, अब भविष्य में उस एक बचे हुए "प्रमाण" के आधार पर पढ़ने वाले अगर पुराने समय के बारे में समझ बनाएंगे तो एक अधूरा पक्ष ही पूरा सच बन जाएगा।

इतिहास पढ़ते समय हम इन सीमाओं का हमेशा ध्यान रखें, यह जरूरी है। इसलिए जब हम इतिहास पढ़ते हैं तो यह सोच कर पढ़ें कि यह पहले से ही बहुत सी कमियों से भरा है।

आप सब यह भी जानते हैं कि इतिहास आम तौर पर राजा लोग लिखवाया करते थे। और वे अपने बारे में लिखवाते थे। तो अगर मैं अपने बारे में लिखवाऊंगा तो मैं यह नहीं लिखवाऊंगा कि मैं बड़ा कमजोर, बेकार, नशा करने वाला, नासमझ इंसान हूँ, मैं तो लिखवाऊंगा कि ऐसा आदमी दुनिया में पैदा ही नहीं हुआ, इतना तेजस्वी, इतना बड़ा, इतना विद्वान और न्यायप्रिय। मैं अपनी विजयों के बारे में लिखवाऊँगा अपनी हार को छुपाऊँगा। बल्कि हार को जीत बताने की कोशिश करूंगा। अगर कोई मेरे खिलाफ लिखेगा और मुझे पता चल जाएगा तो मैं हुक्म दूंगा कि उसका सर कलम करा दिया जाए, गर्दन उड़ा दी जाए।

इसलिए इतिहास में झूठ और पूर्वाग्रह भी भरे पड़े हैं। विल ड्यूरेंट ने कई दशक तक इतिहास पढ़ने के बाद ग्यारह खांडों में "स्टोरी और सिविलाइजेशन" लिखी है। उन्होंने लिखा है कि इतिहास नब्बे फीसदी तो गैस वर्क है और दस फीसदी बायस है।

तो प्रश्न उठता है कि हम इतिहास क्यों पढ़ें? अगर इसमें इतना झूठ है, पूर्वाग्रह हैं, केवल अनुमान भर है तो क्यों पढ़ें?

इसका उत्तर यही है कि अपनी विरासत को समझने के लिए, गुजरे वक्त के बारे में जानने के लिए, एक विषय के रूप में नहीं, पाठ्यक्रम के रूप में नहीं बल्कि मजे के लिए पढ़ें। क्योंकि इतिहास बहुत बेहतरीन कहानियों से भरा पड़ा है। और जानने के लिए बहुत कुछ है। नई खोजें हमारी समझ को बिल्कुल बदल देती हैं। उदाहरण के तौर पर अभी 100 साल पहले तक, 1922 से पहले, हमें हड़प्पा मोहनजोदड़ो और सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में कुछ भी पता नहीं था। इसी तरह 1837 में जब जॉन प्रिंसप ने ब्राह्मी लिपि को फिर से पढ़ा तब हमें सम्राट अशोक, अशोक महान के बारे में पता चला। उससे पहले हम भूल चुके थे

कि अशोक महान जैसा भी कोई राजा हुआ है। कहानियों में किस्सों में तो किसी राजा की मौजूदगी भारत और श्रीलंका में थी, लेकिन इतिहास की दृ ष्टि से, प्रमाण के तौर पर हमें कुछ नहीं मालूम था। और ब्राह्मी लिपि जिसमें इतिहास में अशोक के शिलालेख और उनके स्तंभ, स्तूपों पर लिखा गया था उसे पढ़ना सब लोग भूल चुके थे। इसी तरह अभी 1994 में जाकर तुर्की में ग्योबकली तेपे कर के एक जगह के बारे में पता चला है (यह नाम भी हमने ही दिया है) जो आज से लगभग 11 या 12 हजार साल पहले एक बहुत बड़ी बस्ती थी, विशेषज्ञ कहते हैं कि हो सकता है कि यह एक धार्मिक स्थल था। मान लो कि हम इसे मंदिर कहें, तो क्या यह ठीक होगा। मंदिर तो हमारी शब्दावली है। तब जाने वह लोग क्या कहते होंगे इसे?

तो हम इस सवाल की ओर लौटते हैं कि इतिहास क्यों पढ़ें।

इसके लिए मेरा उत्तर है–

1. मजे के लिए।

2. अतीत से मुक्ति के लिए। और भी जरूरी बात रू अतीत के प्रेत से मुक्ति के लिए।

3. बदलाव को समझने के लिए। युवल नोआ हरारी जो आज के एक बड़े प्रसिद्ध इतिहासकार हैं कहते हैं कि इतिहास मूल रूप में बदलाव की समझ है।

4. वर्तमान और भविष्य को समझने के लिए।

5. अद्भुत कहानियों और कमाल के किस्सों को जानने के लिए।

याद रखें कि यात्री, घुमक्कड़, धर्म उपदेशक, प्रचारक, योद्धा, लड़ाके, खोजी, और व्यापारी इतिहास को बनाने, बदलने, प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। हमेशा से। शहरों का बनना, सभ्यताओं का बनना और बिगड़ना लगातार चलता रहा है, आज भी चल रहा है। तख्त और ताज मिट्टी में मिलते रहे हैं। इस बदलाव में बहुत से किस्से और सबक छिपे हुए हैं।

यह जानना रोचक होगा कि सुलतानों, राजाओं के जमाने में उनके कारवां के साथ सैंकड़ों, हजारों नहीं लाखों लोग चलते थे। शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है कि मंगोल कारवां जब चलता था तब लाखों लोग चलते थे। इसी तरह जब औरंगजेब दक्कन के अभियान पर गया तो वह लगभग छब्बीस साल दिल्ली के तख्त पर नहीं बैठ सका वह अपने अभियान के कारण तम्बू में ही रहा। और राजा का तम्बू भी एक नहीं होता था। एक समय में चार तम्बू लगा करते होंगे, एक से, क्योंकि राजा को मारे जाने का खतरा होता था। इसलिए वह किसी भी तम्बू में सो सकता था ताकि किसी को पता न चले। फिर उसके अंगरक्षक, गुप्तचर और सैनिक भी चाहिए थे सिर्फ उसी की सुरक्षा के लिए।

राजा की फौज के लिए, जो लाखों तक पहुंचती थी, खाना बनाने वाले, राशन, सब्जियां, मसाले, बर्तन, दूध ा, नमक और बाकी सब ताम–झाम के इंतजाम के लिए हजारों लोग चाहिए होते होंगे क्योंकि पूरी `नचचसल बींपद बनानी और लगातार बना कर रखनी होती होगी। फिर आदमियों और जानवरों के डॉक्टर, बीमारों और मरने वालों (आदमियों और जानवरों के) की तम. चसंबमउमदज भी चाहिए होती थी। जहां लंगर या पड़ाव डालता था वहां लगभग पूरा शहर ही बस जाता होगा। सैनिक, सेवादार, खानसामा, वैद्य हकीम, गाने बजाने वाले, चोर उचक्के, चापलूस, सेठ से लेकर मांगने वाले तक, काम जानने वाले और बेरोजगार सभी जुट जाते होंगे। वेश्याएं, व्यापारी, लड़ाके, धर्म गुरु, तमाम तरह के लोग पहुंचते होंगे किस्मत आजमाने। यह लाखों लोगों का एक जीता जागता, चलता फिर्ता हुआ बवे. उवचवसपजंद शहर बन जाता होगा। शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है कि इसका विस्तार और प्रभाव बहुत व्यापक था। यह कारवां महीनों एक जगह रहता था, और सालों तक सफर में रहता था। कुछ लोग छूट जाते थे, कुछ नए जुड़ जाते थे। और नए लोगों की संख्या भी लाखों तक पहुंच जाती थी। इस सब के बीच में शादियां हो जाती थीं, लोग भगोड़े हो जाते थे, दुश्मन से मिल जाते थे। यह दौर चलता रहता था। इसके बारे में जानना बहुत रोचक है।

इसी तरह अगर आप इब्ने बतुता का किस्सा पढ़ें जो तंजियर से चल कर चीन तक जा पहुंचा, तो बेहद रोमांच होगा आपको। वह पच्चीस–छब्बीस साल तक चलता रहा। और इसी तरह मार्को पोलो इटली से मंगोल सम्राट कुबलई खान के दरबार तक जा पहुंचा। इनकी और इनके जैसे खोजियों की कहानी हैरान करने वाली है।

आईए! एक और अजीब कहानी की बात करते हैं। हम सभी चाय पीते हैं। करीब सौ साल पहले चाय का विशेष प्रचार प्रसार करना पड़ता था और लोगों को जबरदस्ती चाय पिलाने की कोशिश करनी पड़ती थी। चीन में चाय हजारों साल पहले से पी जा रही थी। पर यूरोपीय देशों को इसके बारे में कुछ खघ्बर नहीं थी। पुर्तगाली लोगों को चाय के बारे में पता चला। फिर उनसे अंग्रेज इससे परिचित हुए। जब सत्रहवीं सदी के छठे दशक में पुर्तगाल की राजकुमारी की शादी इंग्लैंड के राजा से हुई तो वह अपने साथ चाय पीने की आदत भी ले कर गई। यह वही राजकुमारी थी जिसके दहेज में बॉम्बे का द्वीप अंग्रेजों को और फिर ईस्ट इंडिया कंपनी को मिल गया। चाय की लत दरबार से दरबारियों और आम आदमीयों को लग गई। और चीन से जो चाय आती थी उसके बदले में चीन को चांदी में कीमत अदा करनी पड़ती थी। क्योंकि भारत जहां से सूत,

कपड़ा और मसाले जाते थे और चीन जहां से चाय, चीनी मिट्टी के बर्तन। और सिल्क यूरोप जाता था। चीन और भारत को बदले में कुछ नहीं चाहिए था इसलिए भारत और चीन चांदी में अदायगी मांगते थे। जब सारा सोना–चांदी भारत और चीन में आने लगा तो इंग्लैंड में दिक्कत होने लगी। इसका इलाज इंग्लैंड और ईस्ट इंडिया कंपनी ने यह निकाला कि चीन के लोगों को अफीम की लत लगाई जाए। भारत में एक "अफीम का विभाग" स्थापित किया गया और भारत में कंपनी ने किसानों से अफीम उगवाई और उसे कलकत्ता में बोली लगा कर अवैध तरीके से स्मगलरों के जरिए चीन के ग्वांगजू प्रोविंस तक पहुंचाया जाता था। वहां से अवैध तरीके से चीन में अफीम जाती थी। और बदले में चाय यूरोप जाती थी। यह एक अजीब सा व्यापार था जिसके कारण चीन और अंग्रेजों के बीच दो अफीम युद्ध हुए। चीन ने अफीम बैन कर दी लेकिन इन युद्धों में चीन हार गया। और अफीम व्यापार फिर चल निकला। दुनिया में चाय की कहानी अद्भुत है, इसी तरह कॉफी, मसालों, सिल्क, और कॉटन की कहानी भी दिलचस्प है। यह जानना भी जरूरी होगा कि 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के समय भारत और चीन का विश्व व्यापार में हिस्सा 45 प्रतिशत के करीब था।

हमारे यहाँ से मसाले, सूती कपड़ा पूरी दुनिया में मशहूर थी। ढ़ाका की मलमल, जिसके बारे में कहते हैं कि वह अंगूठी के बीच में से पूरा थान निकल जाता था, बहुत मशहूर थी। इन चीजों की बड़ी मांग थी इनके बदले में हमें उनसे सोना या चांदी मिलता था। हिंदुस्तान और चीन आपूर्तिकर्ता थे। इसीलिए भारत को सोने की चिड़िया कहते थे।

जब चांदी का संकट आया तो लैटिन अमेरिका में सिल्वर ढूंढी गई।

दक्षिण अमेरिका की बर्बादी में एक बड़ा कारण, चांदी है। आपको शायद मालूम हो कि जब स्पेनिश उपनिवेश वहाँ बना तो वहाँ की लगभग नब्बे प्रतिशत आबादी कुछ ही दशकों में बीमारियों से मर गई। क्योंकि ये विदेशी लोग जो जीवाणु और कीटाणु लेकर वहाँ गए, उनसे वहाँ महामारी फैली और बड़ी संख्या में वहाँ के निवासी मारे गए। बहुत से लोग लड़ाई में भी मारे गए। वहाँ से सिल्वर चीन में आई और एक समय ऐसा आया कि इंगलेंड में आलोचना होने लगी। तब अंग्रेजों ने एक तरीका निकाला...उन्होंने हिंदुस्तान में अफीम की खेती शुरू करवाई और चीन को अफीम की लत लग गई।

पुर्तगाली सबसे पहले थे जिन्होंने अफीम का व्यापार शुरू किया, क्योंकि उन्होंने यह समझ लिया था कि चीन में अफीम को "स्मोक" किया जाता है। हिंदुस्तान में अफीम खाई जाती थीकृ कभी बच्चों को सुलाने के लिए दे दी, कभी दवा के रूप में इस्तेमाल कर लिया। यानी अफीम थी, लेकिन वह नशे के तौर पर इस्तेमाल नहीं होती थी।

लेकिन चीन में इसका नशा लोगों को लग गया। इसके बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में "डिपार्टमेंट ऑफ ओपियम" स्थापित किया। आज भी गाजीपुर में गंगा के किनारे में दुनिया की सबसे पुरानी अफीम फैक्टरी चल रही है, जिसे अंग्रेजों ने ही स्थापित किया था।

अफीम की खेती लोगों से जबरदस्ती करवाई जाती थी। ईस्ट इंडिया कंपनी कलकत्ता में उसकी नीलामी करती थी। इसके बदले अंग्रेज चाय खरीदते थे। एक समय चीन के कुछ प्रांतों की लगभग 25ः आबादी नशे की चपेट में आ गई। इसके बाद 1839 से 1860 के बीच दो बड़े युद्ध हुए, जिन्हें हम "ओपियम वार" (अफीम युद्ध) के नाम से जानते हैं। आप देखिए कि किस तरह चाय का संबंध अफीम से जुड़ गया। फिर यही संबंध चीनी (शुगर) से भी जुड़ता है। क्योंकि लोगों को चीनी की भी लत लग गई। इसके लिए प्लांटेशन कल्चर शुरू हुआ। ईस्वी 1800 से 1860 के बीच जब गुलामी (slavery) को खत्म करने की प्रक्रिया शुरू हुई तो मजदूरों की कमी हो गई। अफ्रीका से गुलाम लाने का सिलसिला बंद हुआ। तब भारत से "indentured labour" को भेजा गया–बिहार, यूपी, उड़ीसा, बंगाल से लोगों को फिजी, गुयाना, कैरेबियन देशों, बारबाडोस, मॉरिशस आदि जगहों पर ले जाया गया। आज भी वहाँ हिंदी, भोजपुरी और बिहारी बोलने वाले लोग मिलते हैं...ये वही लोग हैं जो उस समय गए थे।

दक्षिण अफ्रीका में भी ऐसे ही लोगों के कारण महात्मा गांधी पहुँचे और उनके वकील बने। वहीं से गांधी जी भारत वापिस आए और स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए। देखिए कि यह पूरी कहानी कैसे चाय, चीनी, नमक, कॉफी जैसी चीजों से बदलती जाती है। और कैसे यह पूरी दुनिया को बदल देती है। इतिहास का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू यही रोचक बदलाव है। इसीलिए हमें इतिहास पढ़ना चाहिए। यह जरूरी नहीं कि आप इसे एक विषय के रूप में पढ़ें. ..आप फिजिक्स, केमिस्ट्री या हिंदी पढ़ते हों, तब भी इतिहास पढ़ सकते हैं। इतिहास हमें हमारे अतीत से जोड़ता है, और ऐसी अनेक रोचक कहानियाँ सुनाता है जो हमारे सोचने का दायरा बढ़ाती हैं।

हम भले ही इतिहास से वर्तमान को पूरी तरह न समझ पाएं या भविष्य को न बदल पाएं, लेकिन यह बेहद रोचक और आनंददायक है। अब अगर आप कुछ पूछना चाहते हैं, तो हम चर्चा कर सकते हैं या जो भी आप पूछना चाहें।

नमस्कार सर मेरा पहला प्रश्न है–

1. इतिहास की समझ एक छात्रा को क्यों जरूरी है?

– छात्रा (महिलाओं को) को तो इसलिए भी जरूरी है क्योंकि लगभग सारा इतिहास पुरुषों ने लिखा है। महिलाओं ने इतिहास बहुत कम लिखा है। कुछ महिलाओं ने महिलाओं की दृष्टि से इतिहास लिखा है आप उन किताबों को पढ़ सकते हैं। लेकिन जब भी आप इतिहास पढ़ें तो आप यह देखेंगे कि महिलाओं की स्थिति, उनकी भूमिका, या समाज में उनके स्थान के बारे में पुरुषों के दृष्टिकोण से ही व्याख्या की गई है।

2. यदि इतिहास पूरी तरह सत्य नहीं है तो हमें उसे किस दृष्टिकोण से पढ़ना चाहिए?

– इसी समझ से कि जो लिखा गया है वह पूरा सच नहीं है। वह कहानी का एक हिस्सा भर है। एक या बहुत से हिस्से छूट गए हो सकते हैं, या छोड़ दिए गए हैं या वो हिस्से गुम हैं और कभी पता ही नहीं चलेंगे। और फिर यह भी तो एक जरूरी बात है कि हमारी खुद की समझ भी 'पूर्ण' नहीं होती। मुझे लगता है कि जानने की यह यात्रा चलती रहनी चाहिए। और यात्रा में मजा आना चाहिए।

3. क्या इस आधुनिक युग में इतिहास की भूमिका काम हो रही है या बढ़ रही है।

– मुझे पता नहीं। मेरे ख़याल में इतिहास की भूमिका वही है जो हम उसे देते हैं। और वर्तमान में तो इतिहास एक लड़ाई का मैदान जैसा है।

4. क्या इतिहास खुद को दोहराता है क्योंकि मुझे लगता है मान्यवर जी अतीत के भूत से मुक्त होने की बात आपने की उस भूत से अभी तक कोई मुक्त नहीं हो पाया है क्या आप इससे सहमत है।

– हां, भूत छूट नहीं रहे। प्रेत मुक्ति कठिन है। इतिहास खुद को दोहराता है क्योंकि हम इंसान मूर्खता करने से हटते नहीं।

5. क्या सारा इतिहास सत्य हो सकता है या फिर किसी कल्पना के आधार पर लिखा हुआ।

– इतिहास एक खिचड़ी है, सत्य, तथ्य, विचारों, और कल्पना के साथ बनी जिसमें कुछ लोग झूठ का तकड़ा भी लगा देते हैं नमक, मिर्च और मसाले के साथ।

6. क्या हमें अपने अतीत पर गर्व करना चाहिए या उससे सीख कर आगे बढ़ना चाहिए।

– मुझे लगता है सीखना ज्यादा जरूरी है। अतीत पर गर्व करना गलत नहीं है पर उसे किसी और के खिलाफ हथियार की तरह इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

7. मान्यवर आपने कहा हमें भविष्य पीछे तथा इतिहास को आगे रख कर चलना चाहिए क्या यह सत्य है इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

– यह एक जापान से आया विचार है कि इतिहास हमारे सामने फैला हुआ है, और भविष्य पीछे से आता है (क्योंकि हम पीछे देख नहीं सकते) जो अनजान है, अदृश्य है और अचानक प्रकट होता है। मुझे लगता है कि यह एक अच्छा बिम्ब है इतिहास और समय के साथ हमारे संबंध को समझने के लिए। यह एक सोचने का तरीका है, सच या झूठ नहीं।

8. यदि इतिहास हमें अतीत की गलतियों से सीखने का अवसर देता है, तो फिर समाज बार–बार वही गलतियाँ क्यों दोहराता है?"

– मुझे ऐसा लगता है कि इतिहास से सीखना बड़ा मुश्किल है क्योंकि हम अपनी गलतियों से ही नहीं सिखाते तो दूसरों की गलतियों से, वह भी ऐसे लोगों की जो कभी पहले वक्त में रहे हैं, सीखने की आदत बन पाना बड़ा मुश्किल है। दूसरी चीज शायद यह है कि अच्छी बातें पढ़ाई लिखाई में तो हम पढ़ लेते हैं लेकिन उसको समझ कर अपने व्यवहार में नहीं लाते। यही कारण है कि हम इतिहास की गलतियों को दोहराते हैं। युद्ध करते हैं, युद्ध में लोग मरते हैं, फिर बाद में उनके लिए आंसू बहते हैं और यह कहते हैं कि युद्ध बुरी चीज है। लेकिन उसके बाद फिर युद्ध करते हैं। हमारा अहंकार इतना बड़ा हो जाता है कि हम दूसरे को मिटा देने के लिए तैयार हो जाते हैं, कत्ल करते हैं, अपराध करते हैं। यह एक ऐसा चक्र है जिसे तोड़ पाना इंसान के लिए संभव नहीं हो पाया है। शिक्षा इसे संभव कर सकती है लेकिन शिक्षा से भी वह संभव नहीं हो रहा। यह तो दिखता ही है। लेकिन फिर भी कुछ लोग कोशिश करते हैं की युद्ध ना हो उनकी आवाज अगर सुनी जाए तो शायद हम युद्ध बंद कर दें।

बात कुल मिलाकर वही लगती

है कि हमारी मूर्खता की कोई सीमा नहीं है। एक प्रजाति के तौर पर हम अजीब सा व्यवहार करते हैं। हम चांद पर चले जाएंगे लेकिन अपने पड़ोसी से लड़ेंगे। हम दुनिया की सबसे बेहतरीन दवाई बना सकते हैं लेकिन वातावरण को इतना प्रदूषित कर देंगे की बीमारियां खत्म न हो और हवा ही जहरीली हो जाए।

9. आज के युवाओं में इतिहास के प्रति रुचि कम होती जा रही है, इसे रोचक बनाने के लिए क्या बदलाव जरूरी हैं?

– मुझे लगता है कि एक विषय के रूप में जब हम स्कूल में पढ़ते हैं तो इतिहास हमें नीरस लगता है। कुछ शायद किताबों की कमी है कि वे नीरस और उबाऊ होती हैं और कुछ पढ़ाने वालों की कमी हो सकती है कि वे विद्यार्थियों में उतनी रुचि नहीं जगा पाते। मैं ठीक ठीक कुछ बता नहीं सकता सिवाय इसके कि अगर कभी हमारे में यह रूचि पैदा हो जाए तो हमें खूब पढ़ना चाहिए।

10. "क्या वास्तविक स्वतंत्रता सिर्फ बाहरी नियंत्रण से मुक्ति है, या अपने विचारों को समझना और नियंत्रित करना भी जरूरी है? और इसमें शिक्षा की क्या भूमिका हो सकती है?"

– स्वतंत्रता बड़ा उलझा हुआ प्रश्न है। एक मशहूर कथन है कि छड़ी घुमाने की आपकी स्वतंत्रता वहां समाप्त हो जाती है जहां मेरी नाक शुरू होती है। दर्शन शास्त्र में free will vs determinism की एक लम्बी बहस है, जिसका आज तक कोई हल नहीं निकला, क्योंकि कुछ सवालों के एकदम पक्के जवाब शायद हो नहीं सकते।

स्वयं को समझना और अपने पर नियंत्रण करना तो पूर्व की (भारत, चीन, जापान) की परम्परा का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। यह कठिन काम है। और हम बाहरी नियंत्रण से पूरी तरह मुक्त भी हो नहीं सकते। बहुत कुछ ऐसा है जो हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। कुल मिला कर एक balance बनाने की बात है। शिक्षा हमें इन सवालों के उत्तर ढूंढने के लिये तैयार कर सकती है। शिक्षा हमें औजार उपलब्ध करवाती है। लेकिन शिक्षा एक औजार ही है, इस्तेमाल हमें स्वयं करना है।

11. "क्या एक व्यक्ति को इतना सक्षम होना चाहिए कि वह अपने सवालों के उत्तर स्वयं खोज सके, या सीखने की प्रक्रिया में दूसरों से प्रश्न करना भी उतना ही आवश्यक है?"

– व्यक्ति अगर इतना सक्षम हो जाए कि वह अपने सवालों के उत्तर स्वयं ढूंढ़ ले तो इससे बेहतर बात कुछ नहीं है। पर यह खोज दूसरों से प्रश्न करने की प्रक्रिया से गुजर कर आसान हो सकती है। चर्चा और विमर्श एक आवश्यक और महत्वपूर्ण तरीका है। हां, दूसरों के उत्तर से प्रभावित न हो कर यह जानने की कोशिश करें कि ये उत्तर आपकी कसौटी पर खरे उतर रहे हैं या नहीं।

हम औरों के अनुभवों से जल्दी जान और सीख सकते हैं पर यात्रा सभी की अपनी अपनी होती है।

12. क्या हमारी शिक्षा प्रणाली में writing और communication skills पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है? अगर नहीं, तो इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है?"

– सही कहा। क्योंकि अभी ऐसा है नहीं, इसलिए हमें खुद ही मेहनत करनी पड़ेगी। कुछ शिक्षा संस्थान creative writing के कोर्स करवाते हैं। उनकी अपनी भूमिका है पर उनके बाद भी असली सिखलाई तो खुद लिख और बोल कर होगी। अब धीरे–धीरे हमारे पाठयक्रम इन कौशलों पर ध्यान देने लगे हैं। Critical thinking, communication skills, relationship building, problem solving, creative writing आदि skill धीरे धीरे mainstream हो रहे हैं।

13. "हमारी शिक्षा प्रणाली में हमें कवियों और लेखकों के बारे में तो पढ़ाया जाता है, लेकिन उनके जैसा बनने या खुद लिखने की प्रक्रिया पर कम ध्यान दिया जाता हैकृक्या इसमें बदलाव की जरूरत है?"

– कुछ उत्तर तो पिछले सवाल के जवाब में आ गया है। हम बड़े लेखकों का लिखा पढ़ कर भी बहुत कुछ जानते हैं। पर खुद लिखना सीखने के लिए तो हमें ही कलम चलानी पड़ेगी। तैरना सीखने के लिए, तैरने की किताब पढ़ने से ज़्यादा जरूरी है पानी में उतरना। हमें कोच या गाइड मदद कर सकते हैं पर सीखना तो खुद ही पड़ेगा।

14. "आज कई डिग्रीधारी युवा बेरोजगार हैं, ऐसे में शिक्षा प्रणाली को रोजगार से अधिक जोड़ने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं?"

– सामान्य शिक्षा (व्यवसायिक शिक्षा भी) बाजार की मांग से पीछे चलती है। अब skill और vocational education को सामान्य शिक्षा में mainstream करने के प्रयास चल रहे हैं पर उसमें समय लगेगा। और हम सभी skill एक साथ सिखा भी नहीं सकते। कुछ skill, वद जीम रवइ ही सीखे जाते हैं या formal education system के बाहर। अब तो lifelong learning की भी बात हो रही है। E-perts कह रहे हैं कि एक व्यक्ति को जीवन में बहुत बार अपनी स्किल सेट को renew करना पड़ेगा।

15. "छात्रों में व्यावहारिक ज्ञान और जीवन कौशल (life skills) विकसित करने के लिए शिक्षा विभाग क्या प्रयास कर रहा है?"

– अब बहुत से प्रयास हो रहे हैं। प्राइमरी स्तर से ही life skills को शिक्षा व्यवस्था में एकीकृत किया जा रहा है। आने वाले समय में इसके सकारात्मक परिणाम आएंगे।

16."क्या शिक्षा प्रणाली में ऐसे बदलाव किए जा रहे हैं जिससे डिग्री के साथ रोजगार की संभावना भी बढ़ सके?"

– शिक्षा और रोजगार का सम्बन्ध एकदम सीधा नहीं है। School Education, Foundational Stage (3 years of pre school and 2 years of primary

school) का focus Reading, Writing और Numeracy पर है। फिर तीन साल की प्राइमरी एजुकेशन, तीन साल की मिडल और दो साल की हाई स्कूल शिक्षा के कक्षा आधारित कौशल और learning outcomes तय हैं। इन सभी स्तरों में इक्कीसवीं सदी के कौशल और उभरती तकनीक की समझ भी शामिल है। व्यवसायिक और कौशल आधारित शिक्षक को भी जोड़ा जा रहा है।

आगे चल कर उच्च शिक्षा में विशेषज्ञता तथा विशिष्ट पाठयक्रम विद्यार्थी को उपलब्ध होते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य समझ विकसित करना भी है, नागरिक और संवैधानिक समझ बनाना भी है, सिर्फ उद्योग की मशीन के पुर्जे बनाना नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य इंसान होने की समझ पैदा करना भी है। आखिर में सब सीखने वाले पर भी निर्भर करता है।

17- Did Britain leave India in 1947 mainly because World War-2 weakened its economy and control] rather than due to Gandhi’s movements?

- Dear Ashutosh! this is a very good question- Often, we try to find easy and quick answers about our past and as a result, we try to give simplistic e-planations- Also we make theoretical generalisations which are either incorrect or just easy to understand.

Reality is often more layered and nuanced- It is comple- Several actors (human and non human), several factors (local and global) and several forces (often competing and times complimenting) play their role in shaping history- Most of the times, we do not even know, which of these contributed to the events and to what e-tent.

When historians present their thesis, they overlook certain facts, and overstate certain others depending upon their preferences and personal ideologies.

Available sources also colour judgement- Then there is the need to distinguish facts from opinions.

Now, coming to India's independence.

Mahatma Gandhi played a huge role and he was the one who made millions rally behind him; role of other leaders (Nehru, Patel, Maulana Azad and several others) was also important; the revolutionaries (from Aurobindo Ghosh to Bhagat Singh) played their role; the Indian National Congress (from 1885) was also a major catalyst; Subhash Bose and his INA; British Education (most of our leaders at the time of independence were barristers educated in England); the international factors like world war, weakening of the empire, idea of colonialism losing its sheen, rising nationalism in former colonies and overall geopolitical situation were also important factors.

So, it was not Mahatma Gandhi alone who got us independence.

Moreover, we should not forget unsung heroes, the foot soldiers of independence movement whose names we don't know, who sacrificed their careers and lives for the movement and energized the movement at ground level.

So, I will say that from local to global several factors, situations and several personalities played their role in this watershed moment in the history of India and the world.

While, based on our knowledge and understanding we may give more (and/or less) credit to someone/something we must not make the mistake of picking up one person and/or event as the singular reason of something that involved millions of persons and countless combinations at a particular time (not just at a particular point in time but over a period of time).

We, as a student of history, must form an opinion after reading different e-planations and perspectives, and we need not agree with any of those- We can form our own different opinion but we must know the pitfall of generalizations and simplistic and easy e-planations.

18. आपने कहा कि इतिहास का बड़ा हिस्सा अभी भी अज्ञात है। क्या मानव कभी उस अज्ञात इतिहास को पूरी तरह जान पाएगा, या इतिहास हमेशा कुछ हद तक अधूरा ही रहेगा?"

– मुझे लगता है कि सब कुछ पूरा पूरा जान पाना संभव नहीं है।

19. आपने बताया कि हम जो इतिहास जानते हैं, वह कई बार अधूरा होता है। क्या अधूरा ज्ञान हमें गलत निष्कर्षों तक पहुँचा सकता है?

– बिल्कुल।

20. आपने कहा कि वर्तमान देशों की सीमाएँ पहले ऐसी नहीं थीं। क्या भविष्य में समय के साथ ये सीमाएँ कम या समाप्त हो सकती हैं, या यह केवल एक आदर्श कल्पना है?

– बदल सकती हैं। कुछ भी हो सकता है। कम से कम इतिहास तो यही बताता है। बड़ी बड़ी सभ्यताएं मिट जाती हैं। तख्त और ताज मिट्टी में मिल जाते हैं। सीमाएं बदलती रही हैं। आगे भी बदल सकती हैं।

21. आपके अनुसार इतिहास पढ़ने से हम बेंजम और तमसपहपवद से जुड़ी ध ाारणाओं से मुक्त हो सकते हैं। क्या आप स्पष्ट कर सकते हैं कि इतिहास हमें इन सामाजिक विभाजनों से ऊपर उठने में कैसे मदद करता है?

– सबसे पहले तो हम यह जानते हैं कि

ये अभी विचार (जैसे धर्म और जाति) हमने बनाए हैं, ईश्वर ने नहीं। इनके बनने और विकसित होने के पीछे बहुत से ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक कारण रहे हैं। और इनका स्वरूप समय समय पर बदलता रहा है। ये शाश्वत, ईश्वरीय धारणाएं नहीं हैं। इसीलिए इन्हें बदला जा सकता है। इनसे मुक्त हुआ जा सकता है।

22. यदि कॉस्मिक कैलेंडर के अनुसार मानव सभ्यता केवल कुछ सेकंड के बराबर है, तो क्या हमारा ज्ञान भी उतना ही सीमित और अस्थायी माना जाना चाहिए?

— बिल्कुल। सही पकड़ा है आपने।

23. आपने अपने वक्तव्य में कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ साझा कीं। क्या आप स्पष्ट करेंगे कि उन कहानियों का मुख्य उद्देश्य क्या था और उनका वर्तमान समय से क्या संबंध है या नहीं, यदि है तो कैसे ?

— उनका उद्देश्य इस ओर इशारा करना था कि इतिहास कितनी रोचक किस्से कहानियों से भरा है जिनसे हम सीख सकते हैं। वर्तमान से उनका संबंध है, यह कड़ियां जुड़ते हुए ही हम वर्तमान तक पहुंचे हैं। इन्हें जान कर हम अतीत, वर्तमान और भविष्य को लेकर बेहतर समझ बना सकते हैं।

24. अगर इतिहास हमें चेतावनी देता है तो फिर मानव सभ्यता बार बार संघर्ष और युद्ध में क्यों फंसती है?

— यह मेरे लिए यह अबूझ किस्म की पहेली है। कुछ विशेषज्ञों ने इस पर जरूर शोध किया होगा, मुझे इसके बारे में ज्यादा पता नहीं है।

मुझे लगता है कि हर पीढ़ी पिछली पीढ़ियों को मूर्ख मान कर उसी मूर्खता को दोहराती है जो पिछली पीढ़ी ने की। हमारे हथियार और युद्ध के परिणाम और अधिक भयानक होते जाते हैं पर हम अतीत से सीखने की बजाय 'नया' युद्ध छेड़ देते हैं।

हम अपने अनुभवों से ही इतना कम सीखते हैं, दूसरों के अनुभवों से सीखना और भी कम है। अतीत के अनुभवों से सीखना तो और भी विरल है। और तो और हम जानते हुए भी विनाश को चुन लेते हैं, यह हैरान करने वाला है। बहुत से विचारकों ने ठीक ही कहा है कि इंसान की मूर्खता की सीमा नहीं है, ज्ञान की सीमा भले ही हो।

25. अगर हर पीढ़ी इतिहास का पुनर्लेखन करती है तो सच्चा इतिहास कहीं है भी?

— 'सच' और 'सच्चा' इतिहास शायद हो नहीं सकता। यह भी सोचिए कि 'क्या सच भी अनुभव से सीमित ही नहीं है?'

सच भी तो व्यक्तिगत और देश काल से बंधा होता है और सच के भी कई पहलू होते हैं। बहुत बार मेरा सच आपके सच से अलग हो सकता है। इतिहास को ष्सचष के लिए नहीं जानना चाहिए, क्योंकि ऐसा लगभग असंभव है। फिर भी इतिहास को जानना जरूरी है। एक हाथी को पांच अंधों ने जिस तरह समझा, हम उसी तरह इतिहास को समझते हैं। यह अंधों वाली कहानी पढ़िए।

26. मौखिक इतिहास को जानना और उसे लिखित रूप में संजोना हमेशा से होता रहा है। हमारी लिखित परम्परा मौखिक से ही आई है। लाखों साल हम मौखिक परम्परा से ही चलते रहे हैं। दरअसल हुआ यह कि, एक भाषा या कुछ बड़ी भाषाएं, विजेताओं की भाषा ने हारे हुओं की भाषाओं, बोलियों, और मौखिक आख्यानों को 'खा' लिया। जब भाषाएं, बोलियां और लिपियां समाप्त हुई तो उनके साथ साथ हमारे इतिहास का उतना हिस्सा भी मरता गया। बहुत से लोग और संस्थाएं भाषाओं, बोलियों और परम्पराओं (मौखिक और लिखित) के संरक्षण में आज भी काम कर रहे हैं।

— जी हां। बहुत सी किताबें जान बूझ कर सत्ता और विचारधारा के औजार के रूप में इस्तेमाल की जाती रही हैं। आगे भी होती रहेंगी।

27. ज्यादा पढ़ने लिखने से निर्णय की क्षमता कम भी हो सकती है। कई पक्ष देख कर एक पक्ष को चुनना कठिन हो सकता है। पढ़ना लिखना informed decision लेने की क्षमता को भी बढ़ाता है।

— आपकी यह बात है बहुत कमाल की, कि हम किताबें पढ़कर लेखक के एक संस्कृत संस्करण भी बन सकते हैं। यह बिल्कुल ठीक है कि यह संभव है। यह बुरा भी हो सकता है अच्छा भी।

हमें यह अपनी सोच और अपनी मानसिक ताकत के माध्यम से तय करना होगा कि क्या हम किसी एक लेखक के संस्कृत संस्करण बन गए हैं या किसी एक विचार के गुलाम बन गए हैं।

जरूरी बात यह है कि हम बदलने के लिए तैयार रहें। नया सीखने के लिए तैयार रहें।

यह बहुत हद तक एक बेहद निजी और व्यक्तिगत प्रक्रिया है जिससे हर व्यक्ति को गुजरना है। यह एक अकेली यात्रा है। हर पाठक इस यात्रा को अपने तरीके से करता है और अपने ही तरीके से कर सकता है। किताबें बहुत ज्यादा लिखी गई हैं समय पढ़ने के लिए बहुत कम है इसलिए चुनाव की महत्ता बढ़ जाती है। अच्छे विचार या अच्छे लेखक का समर्थकहो जाना बुरा तो नहीं है लेकिन अच्छे की परिभाषा भी तो नितांत व्यक्तिगत है इसलिए यह मसला और ज्यादा उलझ जाता है।

28. किताबें अपने आप से स्वतंत्र सोच नहीं देती, हमें अपनी सोच स्वयं विकसित करनी होती है और हम किताबों के जरिए स्वतंत्र सोच को ज्यादा अच्छे से विकसित कर सकते हैं। किताबों का चयन भी महत्वपूर्ण है। किताब हमारे दिमाग को भ्रमित भी कर सकती है। ऐसे में, चर्चा, 'दूसरे पक्ष को जानना', पढ़े हुए को critically जांचना यह सब भी महत्वपूर्ण बन जाता है। हम लेखक के विचारों से प्रभावित होते हैं यह स्वाभाविक है और हम अपनी अलग समझ भी बनाते हैं। यह चलता रहता है।

– बहुत बढ़िया सवाल। अगर दो लोग एक ही किताब पढ़ते हैं तो मेरे समझ के मुताबिक, जो मुझे लगता है, यह दो किताबें हो जाती हैं। असली किताब वह हुई जिस तरह से उसे हमने पढ़ा और समझा।

बल्कि दो लोग ही क्यों, एक ही व्यक्ति एक ही किताब को दो बार पढ़े, अलग–अलग समय में, या अलग–अलग उम्र में, तो वह दो तरह से समझी जाती है या कई तरह से समझ आती है। किताब, उसके पात्र और घटनाएं भले ही वह fiction या non-fiction

हो, उससे हम अपने तरीके से ही रिलेट करते हैं।

तो यह multiple e-periences, multiple layers of e-periences बन जाते हैं।

इसलिए किसी एक किताब को बार–बार पढ़ना या अलग–अलग लोगों का एक ही किताब को पढ़ाना एक अलग अर्थ और एक अलग अनुभव प्रदान करता है जो निरंतर बदलता भी रहता है या कभी एक सा भी रहता है।

29. Kya Itihas ka Anne wale samy par prabhav padta hai?

– इतिहास की घटनाओं का आने वाले समय पर प्रभाव पड़ता है। एक दूसरे से कड़ियां जुड़ती चली जाती हैं और वर्तमान के कार्यों से भविष्य आकार लेता है।

लेकिन मुझे यह भी लगता है कि यह सीधा, एक दम प्रत्यक्ष और एकदम इकहरा प्रभाव हो ऐसा शायद नहीं होता। घटनाएं आम तौर पर अपने बहुत गुंथी हुई, एक दूसरे से जुड़ी हुई और कई परतों वाली होती हैं, उनमें से किस कारक का आने वाले समय पर कितना प्रभाव पड़ेगा यह जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो अंदाज भर लगा सकते हैं। जब हम वर्तमान में होते हैं तो शायद हम यह समझ नहीं पाते कि हम भविष्य को किस तरह से प्रभावित कर रहे हैं या करेंगे और इसी तरह वर्तमान में होते हुए जब हम अतीत को देखते हैं तो भी पूरी तरह समझ नहीं पाते कि किस घटना ने वर्तमान को किस तरह से प्रभावित किया। यह कहना कि जो भी घटता है उसका भविष्य पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता गलत होगा। कितना, कैसा और किस हद तक प्रभाव पड़ता है यह तय करना मुश्किल जरूर है (और यह भी हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करेगा) मगर प्रभाव पड़ता जरूर है। ■

हिन्दी अनुभाग

कविता के माध्यम से इतिहास, संस्कृति और संवेदना की यात्रा

हिंदी माह के अंतर्गत आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने मध्यकालीन हिंदी काव्य की अमूल्य धरोहर को समझा, सराहा और आत्मसात किया।

कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ

कविता पाठ
मध्यकालीन कवियों की रचनाओं का पाठ

चर्चा एवं संवाद
काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता पर विचार-विमर्श

रचनात्मक अभिव्यक्ति
विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रस्तुति

प्रदर्शनी
कवियों और उनकी रचनाओं पर प्रदर्शनी

संस्कार और संवेदना
साहित्य से जीवन मूल्यों का विकास

कविता केवल शब्द नहीं,
यह हमारी संस्कृति, हमारी पहचान और हमारी आत्मा है।

आयोजक
हिंदी विभाग
राजकीय महाविद्यालय पनारस।

सम्पादकीय

अनीता
प्राध्यापक सम्पादक

किरण बेदी
छात्र–सम्पादक

प्रिय पाठको,

मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि वर्ष 2025–2026 का 'अर्जिक्या' का अंक प्रकाशित होकर आपके सामने प्रस्तुत है।

आपके हाथों में प्रस्तुत यह पत्रिका केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि विचारों, संवेदनाओं और सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का एक सशक्त मंच है। समाज, संस्कृति, साहित्य और समकालीन विषयों पर सार्थक संवाद स्थापित करना ही हमारी पत्रिका का मूल उद्देश्य है।

आज के तीव्र गति वाले समय में साहित्य और चिंतन की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। शब्द न केवल हमारी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं, बल्कि समाज को दिशा देने और नई चेतना जगाने का कार्य भी करते हैं। इसी विश्वास के साथ हम इस अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस अंक में विविध विषयों पर आधारित लेख, कविताएँ, संस्मरण, लोक–संस्कृति से जुड़े आलेख तथा समसामयिक चिंतन को स्थान दिया गया है। हमें विश्वास है कि ये रचनाएँ पाठकों के ज्ञान, संवेदना और विचार–दृष्टि को समृद्ध करेंगी।

हम अपने सभी लेखकों, कवियों, सहयोगियों तथा पाठकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सतत सहयोग और विश्वास से यह प्रकाशन संभव हो पाया है। आपके सुझाव और रचनात्मक टिप्पणियाँ हमारे लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत हैं।

आइए, साहित्य और संस्कृति के इस सुंदर सफर में हम सब मिलकर नई संभावनाओं का स्वागत करें और रचनात्मकता की इस ज्योति को निरंतर प्रज्वलित रखें।

शुभकामनाएं!

अनीता
प्राध्यापक सम्पादक

प्रिय पाठको,

अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अर्जिक्या' का यह नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका केवल रचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की प्रतिभा, सृजनशीलता, कल्पनाशक्ति और परिश्रम का दर्पण है।

महाविद्यालय शिक्षा का केंद्र होने के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। यहाँ विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ–साथ अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के अवसर प्राप्त होते हैं। हमारी यह पत्रिका उसी अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है, जिसमें विद्यार्थियों की कविताएँ, कहानियाँ, लेख, चित्रकला तथा विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों की झलक देखने को मिलती है।

इस अंक के माध्यम से विद्यार्थियों ने समाज, संस्कृति, पर्यावरण, शिक्षा और समकालीन विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। हमें विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं मनोरंजक अनुभव प्रदान करेगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले प्राचार्या महोदया, अध्यापकगण, अभिभावकों तथा सभी छात्र–छात्राओं का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। विशेष रूप से उन विद्यार्थियों को बधाई, जिनकी रचनाएँ इस अंक में प्रकाशित हुई हैं।

आशा है कि आप सभी इस पत्रिका का अवलोकन करेंगे तथा अपने बहुमूल्य सुझावों से हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

धन्यवाद।

किरण बेदी
छात्र–सम्पादक

अभी हारी नही हूँ मैं

अभी हारी नहीं हूँ मैं
अभी कुछ तो बाकी है मुझ में
अभी हारी नहीं हूँ मैं
उठूंगी लडूंगी खुद के लिए
अभी यू टूटी नहीं हूँ मैं
बक्त आने पर जवाब दूँगी सबको
क्यूंकि गलत नहीं हूँ मैं
मैं यूं किस्मत का ढोल नहीं पिटती
यूं लोगों का मेरे सामने अच्छा बन जाना
सुनो न बेवकूफ नहीं हूं मैं।
सबको लगता होगा बहुत खुश है ये
पर पूरी की पूरी तो खुश भी नहीं हूं मैं।

सुषमा देवी,
कला स्नातक– द्वितीय वर्ष

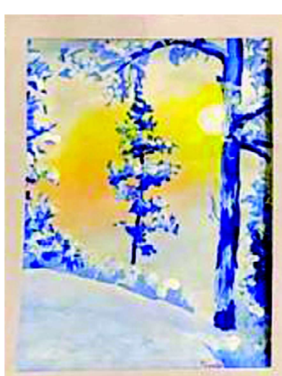

कॉलेज में मेरा पहला दिन

कॉलेज में था जब पहला दिन मेरा
मन में था तब कई उलझनों का डेरा
कॉलेज का था नाम जीडीसी पनारसा
लेकिन पहले दिन मिला नहीं मुझे वहां का रास्ता
हमारे सबसे मज़ेदार हैं जो सर कृष्ण
उन्होंने ही करवाई थी मेरी कॉलेज में एडमिशन
जैसे ही मेरा कॉलेज के पहले दिन का कुछ समय बीता
वैसे मिल गए हमारे सबसे प्यारे मैडम अनिता
फिर हुई थी कक्षा राजनीतिक विज्ञान की
जिसमें प्रोफेसर रत्न सर ने कहानी सुनाई थी
संविधान की
रूम नंबर एक मैं 12:00 बजे इंग्लिश पढ़ाने आए थे
डॉक्टर चारू आहलुवालिया मैम
जिनकी हुं मैं आज भी बहुत बड़ी फैन!
फिर जब लगी हिंदी की क्लास
वहां प्रोफेसर अनिता मैम लगे मुझे बहुत खास
क्योंकि वह है ही बड़े बिंदास
इसी प्रकार हुआ मेरे कॉलेज में प्रथम दिन का समापन
साथ ही हुआ मेरे जीवन मैं कॉलेज के नवीन अनुभवों का
आगमन!
कॉलेज में मेरे प्रथम दिन की स्मृति तो रही बहुत खास
लेकिन शायद अंतिम दिन की स्मृति रहेगी बहुत ही
उदास।

– किरण बेदी, बीए तृतीय वर्ष

लोक कथाएं

अदृश्य पुल और संदेह की नदी

एक ऊंचे पहाड़ की चोटी पर एक प्राचीन और बहुत ही सुंदर मंदिर था। कहा जाता था कि जो कोई भी इस मंदिर तक पहुंचता है, उसे शांति तथा आत्मज्ञान प्राप्त होता है। समस्या यह थी कि मंदिर तक पहुंचने के लिए रास्ते में एक गहरी तथा तूफानी नदी बहती थी, जिसे संदेह की नदी कहा जाता था। नदी के ऊपर कोई पुल नहीं था। गांव में एक वृद्ध गुरु रहते थे, जिन्होंने यह रहस्य उजागर किया। इस नदी पर एक अदृश्य पुल है लेकिन इसे केवल वही व्यक्ति पार कर सकता है। जिसे अपने लक्ष्य पर पूर्ण विश्वास हो। गांव के कई लोग मंदिर पहुंचना चाहते थे। सबसे पहले एक बलवान एवं घमंडी योद्धा वीरभद्र नदी पार करने आया। उसने अदृश्य पुल के बारे में सुना था लेकिन वह अपनी शक्ति पर ज्यादा भरोसा करता था। उसने नदी के किनारे खड़े होकर अहंकार से कहा मैंने बड़ी–बड़ी नदियों को पार किया है। ये अदृश्य पुल तो मेरे लिए कुछ भी नहीं है। जैसे ही उसने पहला कदम हवा में रखा उसके मन में संदेह आया। सचमुच यहां कोई पुल है या मैं सीधा गिर जाऊंगा? संदेह आते ही उसने महसूस किया कि उसके पैर के नीचे कोई सहारा नहीं है एवं वह डगमगा कर पीछे हट गया। उसके घमंड और संदेह ने पुल को उसके लिए अ.श्य बनाकर रखा। अगला प्रयास गांव के सबसे अमीर व्यापारी धनपाल ने किया। उसने सोचा कि धन से सब कुछ खरीदा जा सकता है। उसने गुरु से कहा मैं इस अदृश्य पुल को देखते देखने के लिए कितना भी पैसा देने को तैयार हूं। जब वह नदी के किनारे पहुंचा तो वह पुल की खोज में लग गया। उसने नदी में लकड़ी के टुकड़े और पत्थर फेंककर पता लगाने की कोशिश की कि पुल कहां है। वह केवल भौतिक सबूत खोज रहा था लेकिन अदृश्य पुल को भौतिक सबूत की नहीं बल्कि आंतरिक विश्वास की जरूरत थी। उसने हर जगह देखा लेकिन उसने कुछ भी नहीं मिला। उसके बाहरी लालच और संदेह ने उसे पुल पार नहीं करने दिया। फिर एक साधारण सी लड़की नैना वहां आई। नैना न तो बलवान थी न ही अमीर। उसका एक मात्र लक्ष्य सिर्फ शांत मन और अटूट विश्वास था। उसका लक्ष्य सिर्फ मंदिर तक पहुंचना था ताकि वह गांव वालों के लिए शांति एवं समृद्धि की प्रार्थना कर सके। वह नदी के किनारे खड़ी हुई। उसने आंखें बंद की। वह अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित किया था। उसने मन में सोचा मेरा उद्देश्य नेक है। अगर सचमुच कोई रास्ता है तो मेरा विश्वास मुझे रास्ता दिखाएगा। जब उसने पहला कदम हवा में रखा तो उसने जरा सी संकोच नहीं किया। उसके पैर को एक ठोस आधार महसूस हुआ। यह अ.श्य पुल था। वह धीरे–धीरे आत्मविश्वास से बिना पीछे देखे या नीचे झांके एक–एक कदम रखती गई। पैर बढ़ाते ही उसने सारा पुल देखा था। वह सफलतापूर्वक नदी पार करके मंदिर तक पहुंच गई। वीरभद्र एवं धनपाल जो किनारे से देख रहे थे चकित रह गए। उन्होंने पूछा तुम्हें पुल कैसे दिखाई दिया? नैना ने मुस्कुराते हुए कहा पुल दिखाई नहीं देता, पुल महसूस होता है। जब आपका लक्ष्य पवित्र होता है एवं आपका विश्वास अटूट होता है तो संदेह की नदी पर भी रास्ता अपने आप बन जाता है।

शिक्षा : हमारे जीवन में सफलता का मार्ग अक्सर एक अदृश्य पुल जैसा होता है। बाधाएं हमेशा होंगी तथा लोग आपके भौतिक सबूत पर भरोसा करने को कहेंगे लेकिन अपने लक्ष्य को पाने के लिए सबसे बड़ी शक्ति आपका आंतरिक विश्वास है। जब आप संदेह करते हैं तो पुल अदृश्य रहता है लेकिन जब आप .ढ़ विश्वास या निश्चय के साथ आगे बढ़ते हैं तो आपको सफलता का ठोस आधार जरूर मिलता है।

– तनमय शर्मा, बीए प्रथम वर्ष

घाटीगाड

पुराने समय की बात है इन सुंदर पहाड़ों के पीछे एक सुंदर गांव हुआ करता था, जिसे घाटीगाड़ के नाम से जाना जाता था। यह गांव पहाड़ों के बीच में बसा हुआ है। यहां बहुत से मंदिर, बावड़िया, नदी–नाले, पेड़–पौधे हैं। यहां का वातावरण शांत था हमारे गांव में पानी की बहुत सी बावड़िया थी। पर मुझे उनमें से एक बावड़ी बहुत ही आकर्षित लगती थी। जब मैं छोटी थी । तब हम वहां खेलने जाते थे और मैं उस मूर्ति को बार–बार देखती रहती थी। वो मूर्ति मुझे अजीब सी लगती थी मेरा बचपन से ही शौक रहा था कि मैं उस मूर्ति के बारे में जान सकूं। जब मैंने उस मूर्ति के बारे में अपने घर और गांव में पूछा तो मुझे पता लगा कि वह यहा तकरीबन 1500 साल पुरानी है। पुराने समय में एक लगा नाम का बुजुर्ग रहता था वह उस समय का धनी व्यक्ति हुआ करता था । कहा जाता है कि वह ब्राह्मण था। वह बुजुर्ग घाटीगाड़ स्थान के स्थानीय देव गहल का पुरोहित था वह हवन, विवाह, यज्ञ करवाते थे उनका विवाह भी एक ब्राह्मणी से हुआ था। उनकी एक बेटी और बेटा था। उनकी धर्मपत्नी एक पतिव्रता पत्नी थी। वह एक अच्छी गृहिणी थी अच्छी देखभाल करती थी एवं अच्छी मां थी। कुछ समय बाद वह लगा नामक बुजुर्ग दूसरे गांव हवन सम्बंधित कार्य के लिए गया। उस समय सड़कों एवं वाहनों की सुविधा नहीं थी इसलिए चल के जाना पड़ता था। वह बुजुर्ग चलकर दूसरे गांव गया था तो लौटने में काफी समय लगता था। इसलिए उसे बहुत दिन हो गए उसकी पत्नी उनका इंतजार करने लगी परंतु उन्हें गए एक महीना हो गया। गांव में अफवाहें फैलने लगी उसने दूसरे गांव में कोई महिला पसंद आई है इसलिए तो अभी तक वापस नहीं आया लेकिन उनकी पत्नी लोगों की बातों में विश्वास नहीं किया करती थी और अपने पति का इंतजार करने लगी एक दिन वह ब्राह्मणी अपने पति को ढूंढने निकल पड़ी और बच्चों को साथ लेकर चल पड़ी उनका बेटा छह महीने का था और बेटी सात साल की थी। गांव से निकलने के पश्चात वह एक चौराहे पर एक व्यक्ति से मिली। वह उसी गांव का ही व्यक्ति था वह रास्ते से गुजर रहा था। उसने ब्राह्मणी से पूछा कि कहां जा रही है तो ब्राह्मणी ने बताया कि वह अपने पति को ढूंढने जा रही है उसी क्षण उस व्यक्ति ने कहा कि मैंने तुम्हारे पति को ढूंढ लिया है। उसे दूसरे गांव में एक महिला अच्छी लगती थी और उसने शादी कर ली है वह निम्न जात से थी और वह व्यक्ति वहां से चला गया बेचारी ब्राह्मणी अंदर से टूट चुकी थी और घुटनों के बल बैठ कर फूट–फूट कर रोने लगी। वह सोचने लगी कि वह लोगों के ताने से तंग आ चुकी है और वह सोचने लगी कि वह लोगों के व्यवहार से भी तंग आ चुकी है मन में सोचने लगी कि मैं इन बच्चों को लेकर कहां जाऊं तथा उसने मन ही मन ठान लिया था कि वह अपने बच्चों के साथ मर जाएगी उस स्थान पर एक बावड़ी थी और वहां जाकर उसने खुद अपने हाथों से अपने बच्चों को काट दिया, अपने स्तन को काट दिया और मर गई। कुछ समय बाद लगा बुजुर्ग हो गया। वहां के ब्राह्मणों ने उसे उस घर से निकाल दिया और वहां के राजपूतों ने उसे जमीन दी और वही उसने घर बनाया एक–दो साल बाद वह भी मर गया कहा जाता है कि जहां ब्राह्मणी मरी और उसके बच्चे मरे वहां कुछ डरावनी चीजें होने लगी थी। गांव वालों का कहना था कि ब्राह्मणी की आत्मा वही भटकती रहती थी और वह वहां से आते जाते लोगों को डराती थी। जो लोग वहां से जाते थे उनका बुरा होता था। जैसे पागल होना राजपूतों के साथ अनहोनी होने लगी गांव वालों का मानना था कि उसने आत्महत्या की है और उसकी आत्मा की शांति के लिए यज्ञ करवाया। ब्राह्मणी तथा उसके बच्चों की मूर्तियां बनवाई। जिसे पहाड़ी भाषा में गों कहा जाता है। उन मूर्तियों को उसी बावड़ी में स्स्थापित किया गया और उनकी पूजा करने लगे उनकी प्रतिमा आज भी उसी स्थान पर है। और आज भी स्थानीय लोग उस पितृ देवी की पूजा करते हैं।

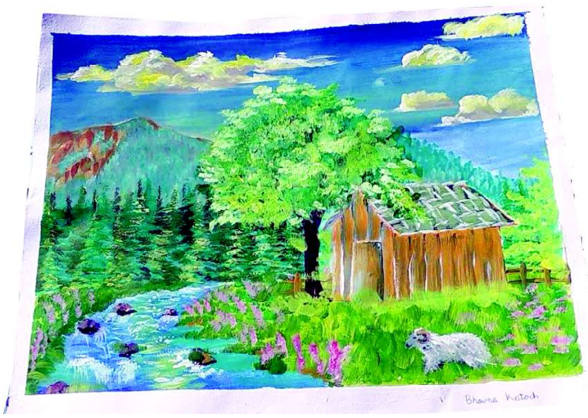

– रीना चौहान, कक्षा...प्रथम वर्ष

बंद पड़ी गुफा

यह कथा एक बंद पड़ी गुफा की है जो तकरीबन 5–6 सौ साल पुरानी है। यह गुफा हमारे घाटी गाड़ गांव के कमेड़ा धार नामक स्थान पर पड़ती है। यह गुफा एक स्थान से दूसरे स्थान में निकलती है। आसपास से जानकारी एकत्र करने के पश्चात् मुझे पता चला कि यह एक राक्षसों की गुफा हुआ करती थी। गांव वालों ने बताया कि पुराने समय में लोगों के पास सामूहिक धाम के लिए बर्तन नहीं हुआ करते थे। या शादी के कार्यक्रमों के लिए बर्तन नहीं हुआ करते थे। इसलिए वे लोग राक्षसों से बर्तन लिया करते थे। बर्तन लेने के लिए उनको मुख्य रूप से शेट के पत्थर देने पड़ते थे। राक्षस उन बर्तनों के लिए समय निर्धारित करते ही कब तक बर्तन वापस लौटाने होते थे। कुछ समय बाद लोगों ने राक्षसों के बर्तन देना बंद कर दिया था और चुराने शुरू कर दिए थे। कहा जाता है कि कुछ समय बाद वे राक्षस बीमार पड़ गए। उनकी गुफा से दूर एक चरबाहे की झोपड़ी थी। उसमें से एक राक्षस उस गद्दी अर्थात् चरवाहा के पास जाता है। चरवाहे के पास बीमारियों को ठीक करने के लिए जड़ी बूटियां रखी थी। चरवाहा राक्षस को देखकर डर जाता है। राक्षस विनम्रता के साथ चरवाहे के पास जाता है और चरवाहे को कहता है कि हम सभी राक्षस बीमार पड़ गए हैं। राक्षस चरवाहे से विनती करता है कि वह उन्हें ठीक करने उनकी गुफा चले। पहले तो चरवाहा बहुत डर जाता है और कहता है तुम तो राक्षस हो तुम मुझे खा जाओगे। राक्षस उसे कहता है कि मैं तुमसे वादा करता हूं कि तुम्हें सही सलामत वापस लेकर तुम्हारी झोपड़ी तक जाऊंगा। चरवाहा राक्षस के साथ जाने को तैयार हो जाता है। राक्षस चरवाहे को अपनी पीठ पर उठाकर वहां से पलक झपकते ही उड़ जाता है और अपनी गुफा के पास पहुंच जाता है और चरवाहे को गुफा के अंदर ले जाता है और चरवाहा जल्दी–जल्दी से अपनी पोटली से जड़ी बूटियां निकालता है और राक्षसों को दे देता है। और गुफा से बाहर निकल जाता है। राक्षस ठीक होने लगते हैं और चरवाहे को उपहार के स्वरूप में एक भैंस का सिर उसकी पीठ पर डाल देते हैं। चरवाहा बहुत ज्यादा डर गया। राक्षसों ने कहा तुम इसे ले जाओ और जैसे ही तुम अपनी झोपड़ी के पास पहुंचोगे तो दरवाजे से नहीं गौशाला के अंदर से जाना और भैंस के सिर को गौशाला के अंदर ही छोड़ देना। चरवाहे ने वैसा ही किया अपने सिर को गौशाला के अंदर ही रखा था तथा सुबह जाकर देखा तो गौशाला के अंदर भेड़ बकरियां थी। चरवाहे ने राक्षसों का धन्यवाद किया। कहा जाता है कि यह कथा यहीं समाप्त हो गई थी राक्षस विलुप्त हो गए और गुफा वैसी की वैसी रह गई। जो आज भी उसी स्थान पर है।

— रीना चौहान

गड़सा घाटी पालगी के दुर्वासा ऋषि की लोक कथा

परिचय : हिमाचल प्रदेश के कुल्लू ज़िले की गड़सा घाटी अपनी देव परम्पराओं के लिए विख्यात है। इसी घाटी के पालगी गांव में महर्षि दुर्वासा का अति प्राचीन मंदिर स्थित है। वेदों के अनुसार दुर्वासा ऋषि भगवान शंकर के रौद्र रूप से प्रकट हुए थे और अन्याय को बर्दाश्त न करने वाले अनुशासी और अनुशासन प्रिय देव माने जाते हैं। वे ब्रह्मा के मानस पुत्र अत्री और माता अनशुया के पुत्र हैं।

पालगी गांव में ऋषि का आगमन

ऋषि दुर्वासा जी उत्तर प्रदेश के भोजपुर नामक स्थान से भ्रमण करते हुए कुल्लू की गड़सा घाटी में आए थे। उन्होंने गड़सा में माहून के पेड़ के नीचे विश्राम किया। इसके पश्चात् वे रुआड़ नामक स्थान पर गए और वहां अपनी शक्ति से एक जल स्रोत प्रस्फुटित किया। अंत में वे पालगी गांव पहुंचे। देवदार के घने वृक्षों और प्रा.तिक सुंदरता से भरपूर यह स्थान उन्हें इतना पसंद आया कि उन्होंने यहीं समाधि ले ली। आज भी मंदिर के गर्भ गृह में यह पिंडी विद्यमान है, जिसे ऋषि का साक्षात रूप माना जाता है।

खीर का दिव्य रहस्य

ऋषि अपने साथ मोहा नाम के पुरोहित को लाए थे। पुरोहित को पालगी के दुर्गम रास्तों और जंगली जानवरों का डर लगने लगा था। ऋषि ने पुरोहित को पालगी के दुर्गम रास्तों और जंगली जानवरों के डर से

आश्वासन दिया कि तुम पूजा से पूर्व पतीले में केवल एक पत्था यानी डेढ़ किलो चावल, दूध और गुड़ डालकर चूल्हे पर चढ़ा देना। आज भी पालगी के इस मंदिर में 12 महीने नियमित रूप से खीर बनती है। चमत्कार यह है कि मात्र डेढ़ किलो चावल से बनी यह खीर मंदिर में आए हजारों भक्तों का पेट भर देती है। यह कभी भी कम नहीं पड़ती और अंत में बर्तन साफ करने वाले के लिए भी बच जाती है। मंदिर की संरचना और सहायक देवता।

मंदिर पहाड़ी शैली में एक मंजिला बना है। मंदिर के पास ही उसका भंडार है। जहां देवता का रथ रखा जाता है। मंदिर के समीप ही तीन मंजिला पुराना भवन है जो ऋषि की माता सती अनशुया को समर्पित है। ऋषि दुर्वासा के साथ हमेशा उनके सहायक कुफर देवता रहते हैं। जिनका अपना छोटा मंदिर परिसर में ही स्थित है। हिमाचल में यह इकलौता ऐसा मंदिर है जहां देवता के दिबंगत चेले यानी गुर के स्मारक मंदिर परिसर में ही रखे हैं।

उत्सव : ऋषि के गड़सा आगमन की स्मृति में हर वर्ष 20 जेष्ठ को तीन दिवसीय भव्य मेला लगता है। इस दिन पालगी धारा और आसपास के गांवों के लोग मिलकर सार्वजनिक खीर का आयोजन करते हैं।

निष्कर्ष पालगी गांव के दुर्वासा ऋषि की यह लोक कथा आस्था और विज्ञान के बीच की एक ऐसी कड़ी है जो हमें सिखाती है कि श्रद्धा में अपार शक्ति होती है। अक्षय खीर का रहस्य आज भी दुनिया के लिए एक कौतुहल है लेकिन गड़सा घाटी के लोगों के लिए यह उनके इष्ट देव का साक्षात आशीर्वाद है।

– रितिका

सूखा हुआ तालाब

यह लोक कथा मेरे गाम गुराण की है, यह हिमाचल प्रदेश के जिला मंडी का एक छोटा सा गांव है। कुछ साल पहले की बात है, मुझे घर से स्कूल आते जाते रास्ते मे कुछ खेत दिखते वे खेत मुझे तालाब के आकार के लगते थे । एक खेत बीच में और दो खेतों की चौड़ाई बीच वाले खेत से ज्यादा थी और खेत चारों और से बंद था इसलिए जब भी मैं उस तरफ देखती तो मन में सवाल उठता क्या सच मैं यहां पहले तालाब था कि यह बस मेरे मन का बहम है। एक दिन मैं अपनी दादी के साथ कहीं जा रही थी तो फिर बही जगा दिखी फिर मैंने दादी जी से पूछ ही लिया कि दादी क्या यहां पहले एक तालाब था जब भी मै इस खेत को देखती हू मुझे ऐसा लगता है। तब दादी जी ने मुझे बताया कि बहुत साल पहले यहां सच में एक तलाब था फिर मैंने उनसे पूछा अगर ऐसा है तो अभी यहां वो तलाब क्यों नहीं है तब दादी बताती है कि मुझे बहुत

साल पहले की बात है ऐसा माना जाता है कि यह तलाब एक बूरी औरत का था। एक बार एक आदमी वहां रूका और और पानी पीने लगा ।बुढिया ने उसे रोक दिया और कहा कि तुम यहां क्या कर रहे हो। रहागीर कहता है दादी जी मुझे बहुत प्यास लगी है। बुढिया बोली– तुम यहा पानी नही पी सकते । कोई भी पानी मांगता तो वो सब को मना कर देती एक बार की बात है जहल नराइन देवता ये सब कुछ देख रहे थे। जहल देवता ने एक बुजुर्ग आदमी का रुप धारन किया और बूढी औरत के पास पहुंचे उन्होंने बूढी औरत से पानी पीने के लिए मांगा पर तो बुढ़िया इतनी कंजूस थी कि एक बूंद भी पानी ना दिया। इससे क्रोधित होकर बुजुर्ग ने अपना असली रूप धारन किया और अपनी गदा से तलाब पर दो बार प्रहार किया। पहली बार प्रहार किया तो पानी खेतों के पिछे एक जंगल में गिर गया और दूसरा प्रहार किया तो दूसरी जगह एक बाबडी बन गई थी ऐसा माना जाता है कि बाबडी का पानी तब से सब भी को पीने के लिए मिल जाता था।

– सिमरन

बोलता नहीं तो मरता क्यों?

यह कहानी पुराने जमाने के एक राजा और उसके पुत्र की है। इस कहानी में राजा के घर में एक पुत्र पैदा होता है। राजा पुत्र की प्राप्ति के बाद बहुत खुशी होता है। वह राजा अपने राज्य के सभी लोगों को दावत देता है। और उन्हें उपहार के रूप में कीमती वस्तुएं देता है। चारो तरफ खुशियां छाई होती हैं। राजा अत्यंत खुश होता है। समय बीतता गया और राजा का पुत्र अब बड़ा हो रहा था। एक दिन राजा देखते हैं कि उनका पुत्र बाकी बच्चों की तरह बात नहीं कर रहा है। वह अपने पुत्र से बात करने की कोशिश करता है परन्तु राजकुमार अपने पिता की किसी भी वात का कोई भी जवाब नहीं देता। राजा को यह देखकर अत्यंत दुःख होता है। राजा अपने पुत्र से बहुत प्रेम करता था। वह उसे इस प्रकार नहीं देख सकता था। वह चाहता था कि उसका पुत्र बाकि बच्चों की तरह ही बात करें। इसलिए राजा ने राजवैद्य से कहा कि वे राज कुमार को कोई ऐसी दवा दे की जिस से वे भी बोलने लग जाए। प्रजा के अनेक प्रयासों के बाद भी राज कुमार कोई बात नहीं करते। राजा भी अपने पुत्र से बात करने के अनेक प्रयास करते हैं। परन्तु वह भी प्रजा की तरह असफल हो जाते हैं। राजकुमार अब अपनी युवावस्था में आ चुके थे। परन्तु उन्होंने बचपन से लेकर अव तक अपनी अपने मुख से एक भी वाक्य नहीं कहा था। समय इसी तरह बीतता जा रहा था। एक दिन राजकुमार जंगल में भ्रमण करने के लिए गए। उस समय जंगल में एक लकड़हारा और एक शिकारी भी मौजूद थे। परन्तु राजकुमार केवल शिकारी को ही देखते थे। राजकुमार से कुछ दूरी पर एक बहुत बड़ा पेड था। पेड पर एक सुन्दर सा पक्षी बैठा हुआ था। उसी पेड के नीचे शिकारी भी खड़ा था। शिकारी के पास एक एयर गन थी। पहले तो शिकारी ने उस पेड़ पर बैठे उस पक्षी को नहीं देखा। परन्तु जब अचानक से बहुत पक्षी पेड़ पर बैठ कर चहचहाते है तो शिकारी उस पक्षी को देख लेता है और देखते ही गोली मार देता है। राजकुमार दूर खड़ा होकर कर .श्य देख रहा था। उस दिन उस समय राजकमार ने पहली बार अपने मुख से एक वाक्य कहा कि यदि ''बोलता नहीं तो मरता क्यों?'' वह लकड़हारा राजकुमार के पीछे खड़ा था। वह राजकुमार को देखता है कि वह बोल सकते हैं। वह लकड़हारे को राजे की कही हुई बात याद आती है कि उन्होंने कहा था कि जो भी व्यक्ति राजकुमार से कोई भी वाक्य कहलवाएगा तो वे उस व्यक्ति को उसकी मन पसंद वस्तु देंगे। खुश होकर वह लकड़हारा राजा के पास उनके महल में जाता है परन्तु अब राजा ने यह मान लिया था कि उनका पुत्र बात नहीं कर सकता है। जब लकड़हारा राजा को बताता है कि राजकुमार बात कर सकता है तो उन्हें उसकी बात पर विश्वास नहीं होता है। वह उस लकड़हारे को वहां से जाने के लिए कहता है परंतु वह लकड़हारा बार–बार राजा से कहता है कि मैंने अभी उन्हें जंगल में बोलते हुए देखा है परंतु राजा फिर भी उसकी बात पर विश्वास नहीं करता है। परेशान होकर राजा उस लकड़हारे को फांसी की सजा सुना देते हैं। लकड़हारा सोचता है कि राजकुमार ने सही कहा था कि बोलता नहीं तो मरता क्यों? अर्थात यदि वह राजा से नहीं कहता कि राजकुमार बोल सकते हैं तो आज वह इस तरह फांसी पर नहीं खड़ा होता। जब राजकुमार को पता लगता है कि उसकी वजह से किसी मासूम व्यक्ति की जान जा सकती है तो वह अत्यंत दुखी हो जाता है। जिस समय उस लकड़हारे को फांसी पर चढ़ाया जा रहा होता है तो राजकुमार वहां पर आ जाते हैं और कहते हैं कि यदि बोलता नहीं तो मरता क्यों? राजा भी वहीं पर मौजूद थे और वह देखते हैं कि उनका पुत्र बोल सकता है। वह पहले तो बहुत खुश होते हैं और लकड़हारे को उसकी मन पसंद वस्तु देते हैं और उसे जाने के लिए कहते हैं। फिर वह राजकुमार से पूछते हैं कि पुत्र तुमने बचपन से लेकर आज तक कोई भी वाक्य अथवा शब्द क्यों नहीं कहा? राजकुमार कहते हैं कि उन्होंने बचपन से ही आज तक कोई भी वाक्य या शब्द अपने मुख से इसलिए नहीं कहा क्योंकि वह बचपन से ही यह देखते आ रहे हैं कि यदि कोई व्यक्ति सत्य बोलता है तो उसे उसका प्रमाण देना पड़ता है कि वह सच बोल रहा है। यदि कोई व्यक्ति झूठ बोलता है तो उसे सजा मिलती है। राजकुमार कहते हैं कि लकड़हारा इस बात का एक उदाहरण है। वह सच तो कह रहा था परंतु उसके पास आपको दिखाने के लिए कोई प्रमाण नहीं था। आपको उसकी बात झूठ लग रही थी। फिर इसलिए आप उसे फांसी की सजा दे रहे थे। अंत में राजकुमार कहते हैं कि बस इसलिए उन्होंने बचपन से लेकर अब तक अपने मुख से कोई भी सच्चा या झूठा वाक्य नहीं कहा।

– मनीषा, बीए प्रथम वर्ष

लाल किताब की कहानी

इस कहानी की शुरुआत 1921–1922 में हुई थी। ये कहानी मेरे परदादा के जमाने की है। इस कहानी की विशेषता ये है कि इसमें एक किताब है जिसको लाल किताब या भेरो की किताब कहा जाता है। उस किताब में एक रहस्य छुपा था जो कि कुछ विद्वान लोग ही जानते थे, जिनमें से मेरे परदादा जी और उनका मित्र था। उस किताब में कुछ गूढ़ मंत्र और क्रियाएं थीं। एक दिन मेरे परदादा जी और उनका मित्र शाम के समय अपने काम से घर की ओर आ रहे थे। उनके रास्ते में एक काल भैरव नाम का एक प्राचीन मंदिर आता था, उन्हें उस दिन घर लौटने में देर रात हो गई थी। उन्होंने सोचा कि आज रात इसी मंदिर में काटी जाए, फिर उन दोनों ने विश्राम किया। चारों तरफ अंधेरा छाया हुआ था। वे देखते हैं कि उस मूर्ति में से एक दिव्य रोशनी निकल रही थी, वे उसे देखकर भयभीत हो गए। फिर वे अपनी इष्ट माता चामुंडा जी का नाम लेते हुए उस रोशनी की तरफ बढ़े। वह धीरे–धीरे उस रोशनी की तरफ बढ़े, वह रोशनी धीरे–धीरे कम होने लगी, जब वह उस रोशनी के पास पहुंचे तो उन्होंने जाकर देखा तो वहां पर लाल रंग की एक पोटली थी। उन्होंने उस पोटली को खोलकर देखने की कोशिश की और देखा कि उसमें एक किताब थी। उन्होंने उस किताब को खोला और उन्होंने उस किताब में लिखे शब्द को पढ़ने की कोशिश की, परंतु वे उसे उस किताब को नहीं पढ़ पाए। रात भी बहुत हो गई थी, जिस कारण वह पढ़ नहीं पाए। उन दोनों ने ये फैसला लिया कि वे इस किताब को घर ले जाएंगे और सुबह सूर्य के प्रकाश में पढ़ेंगे। फिर वे दोनों विश्राम करते हैं और कल का इंतजार करते हैं। सुबह हो गई और वे उस किताब को पढ़ने की कोशिश करते हैं, परंतु वे पढ़ नहीं पाते, क्योंकि वह टांकरी भाषा में लिखी थी। उन दोनों को इस भाषा का ज्ञान नहीं था जिस कारण वे किताब नहीं पढ़ पाते थे, परंतु गांव में एक बुजुर्ग व्यक्ति था जिसे टांकरी भाषा का ज्ञान था। दादा जी और उनके मित्र उस किताब को उस व्यक्ति के पास लेकर जाते हैं और वह बुजुर्ग उस लाल किताब को देखकर कहता है कि यह भैरव की क्रिया की किताब है। इसमें उनके मंत्र और क्रियाएं बताई गई हैं। वह बुजुर्ग व्यक्ति मेरे परदादा और उनके मित्र को कहते हैं कि यदि तुम इन मंत्र या क्रियाओं का प्रयोग करना चाहते हो तो तुम्हे इस टांकरी भाषा को सीखना होगा, सीखने के परिणाम स्वरूप ही तुम इन मंत्र या क्रियाओं का प्रयोग कर सकते हो। फिर मेरे परदादा जी और उनके मित्र हर शाम उनके पास भाषा का ज्ञान लेने के लिए जाया करते थे। कुछ महीनों के बाद परदादा जी और उनके मित्र को इस भाषा का ज्ञान पूरी तरह से हो गया। अब वे उस में लिखे मंत्रों का प्रयोग करते थे। वे इन मंत्रों की सहायता से अपना रूप बदल सकते थे। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलक झपकते ही जा सकते थे। समय इसी तरह बीत रहा था। वे इन मंत्रों और क्रियाओं में पूरी तरह से निपुण हो गए थे। कुछ समय बाद गांव वालों के पशु गायब होने लगे। एक दिन गांव का एक व्यक्ति उस मंदिर वाले रास्ते से रात के समय गुजर रहा था। वह देखता कि मंदिर से एक बकरी की आवाज आ रही थी। वह मंदिर के पास जाकर देखता है तो वहां पर एक व्यक्ति होता है जो उस बकरी की बलि दे रहा होता है और कहता है कि अब मुझे केवल एक व्यक्ति और पशु की बलि देनी है और फिर मैं इन क्रियाओं में सिद्धि हासिल कर लूंगा। गांव का वह व्यक्ति डर जाता है और वहां से भाग जाता है। अगले दिन वह ये बात पूरे गांव वालों को बताने जा रहा था, परन्तु रास्ते में उसे परदादा जी मिल जाते हैं। फिर वे व्यक्ति सबसे पहले पर दादा जी को कल की घटना को बताता है। परदादा जी अगले दिन खुद इस बात का पता लगाने के लिए उस मंदिर में अकेले जाते हैं। जब वे मंदिर पहुंचते हैं तो वहां पर सन्नाटा छाया हुआ था, परंतु कुछ समय बाद एक व्यक्ति पशु को साथ लिए मंदिर में आ जाता है। परदादा जी पीछे से उस व्यक्ति को आवाज लगाते हैं कि तुम कौन हो? और उस इस पशु की बलि क्यों दे रहे हो? वे इस बात का कोई जवाब नहीं देता और वह उस पशु की बलि दे देता है और फिर वह मनुष्य की बलि देने के लिए परदादा जी की ओर बढ़ता है और उन्हें मारने की कोशिश करता है। परदादाजी देखते हैं कि यह तो उन्हीं का मित्र है। वे अपनी जान बचाने के लिए उन्हें काफी समझाते हैं परंतु उनका मित्र नहीं मानता है। वह उनकी ओर बढ़ता है। परदादा जी अपने मित्र को धक्का देते हैं जिस कारण उनकी हाथापाई हो जाती है। धक्का लगने से परदादाजी के मित्र का सिर पत्थर से टकरा जाता है। जिस कारण परदादाजी के मित्र की मृत्यु हो जाती है। उस समय तो परदादाजी बहुत डर जाते हैं और वे उसी बुजुर्ग व्यक्ति के पास जाते हैं और उन्हें वे सारी घटना बताते हैं। वह बूढ़े व्यक्ति परदादाजी से कहते

हैं कि तुम वह पुस्तक लाल किताब या भैरव पुस्तक को वहीं पर रख दो। परदादाजी अगले दिन उस मंदिर में जाते हैं और उस किताब को मूर्ति के सामने रख देते हैं। वे कहते हैं कि मैं यह किताब आपको समर्पित करता हूं। इस घटना के कुछ समय बाद परदादाजी की मृत्यु हो जाती है। बाद में वह गांव का बूढ़ा व्यक्ति सभी गांव वालों को यह घटना बताता है। लोगों का आज भी कहना है कि उस भैरव के मंदिर में आज भी रात के समय कुछ आवाजें आती हैं।

– संजना, बीए प्रथम वर्ष

अन्न का अपमान

बहुत पुराने समय की बात है एक गांव में एक किसान परिवार रहता था। वह मेहनत से खेती करता था लेकिन उनकी फसल में ज्यादातर कोदा मंडवा ही उगता था। गेहूं की फसल कम होती थी और उसे बहुत मूल्यवान माना जाता था। परिवार की एक नवविवाहित बहू को कोदे की रोटी बिल्कुल पसंद नहीं थी। वह हर रोज रूखे काले भूरे कोदे के आटे की रोटियां बनाते बनाते थक चुकी थी। एक दिन उसका मन गेहूं की सफेद मुलायम रोटी खाने का हुआ, लेकिन घर में आटा नहीं था। रोटियां बनाते समय वह मन ही मन कोदे को कोसने लगी। यह एक ऐसा नीरस अन्न है, न स्वाद न रंगत। इससे तो मेरा पेट भी ढंग से नहीं भरता। गेहूं के सामने तो यह कुछ भी नहीं है। क्रोध और निराशा में उसने कोदे की कुछ रोटियां उठाई और उन्हें मवेशियों के चारे के साथ गोबर के ढेर के पास फेंक दिया। उसने ऐसा करते हुए सोचा कि यह रोटियां इसी लायक हैं और कोई रोटियों को यहा नही देखेगा। उसी समय वेश बदलकर राज्य के प्रजापालक राजा उस रास्ते से गुजर रहा था। राजा बहुत दूरदर्शी और धर्मात्मा था। वह अन्न को ईश्वर का रूप मानता था और हमेशा प्रजा को अन्न का सम्मान करने की सीख देता था। जब राजा ने रास्ते में कोदे की रोटियों को इतनी घृणित जगह पर फेंकते हुए देखा तो उसे बहुत दुख और क्रोध आया। उसने तुरंत समझ लिया कि प्रजा अब अन्न का मूल्य भूल चुकी है और यह राज्य के लिए शुभ संकेत नहीं है। राजा ने उस परिवार से कुछ नहीं कहा पर उसे यह आभास हो गया कि निकट भविष्य में राज्य में कोई बड़ी विपत्ति संभवतः अकाल आने वाला है। दुखी मन से राजा आगे बढ़ गया। कुछ ही समय बाद राजा का डर सच साबित हुआ। राज्य में अचानक भयंकर सूखा और अकाल पड़ गया। गेहूं की फसल तो बुरी तरह नष्ट हो गई और यहां तक कि पानी भी दुर्लभ हो गया। अब लोगों के पास खाने के लिए कुछ नहीं बचा था केवल कोदा ही थोड़ी बहुत मात्रा में बच गया था। परिवार के पास भी अब सिर्फ वही कोदा का रूखा आटा रह गया, जिसकी बहु ने कभी कदर नहीं की थी। पेट की आग बुझाने के लिए अब मजबूरन सबको कोदे की रोटियां खानी पड़ी। बहू को अब उस कोदे का मूल्य समझ आया जिसे वह कभी फेंक दिया करती थी। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ कि जब उसके पास अन्न था, तब उसने उसे नीचा दिखाया और बर्बाद किया। कथा के अंत में जब अकाल समाप्त होता है और जीवन सामान्य होने लगता है तो गांव के लोग अन्न के मूल्य को नहीं भूलते, वे समझ जाते हैं कि प्रत्येक अन्न का दाना महत्वपूर्ण है, चाहे वह गेहूं हो या कोदा। इस घटना के बाद परिवार की वह बहू हमेशा विनम्रता के साथ कोदे की रोटी बनाती और उसे सम्मान के साथ ग्रहण करती थी। वह लोगों को बताती थी कि कैसे उसने एक बार अन्न का अपमान किया था और कैसे उसी अन्न ने अकाल के समय उसकी जान बचाई। यह कथा लोगों को सिखाती है कि अन्न की कोई भी किस्म छोटी या बड़ी नहीं होती। हर एक अन्न का दाना जीवन का आधार है और उसका अनादर करने से विपत्तियां आती हैं। इसलिए पहाड़ों में आज भी लोग कोदे की रोटी को स्वास्थ्य और सादगी के प्रतीक के रूप में अत्यंत सम्मान के साथ खाते हैं।

– रागिनी, बीए प्रथम वर्ष

देवते का मोहरा

मंडी जिले के सुनारु गांव की प्रचलित लोक कथा के अनुसार बहुत समय पहले गांव का एक ग्वाला रोज अपने सारे पशुओं को चराने के लिए पहाड़ी ढलान की ओर ले जाता था। उसने कई दिनों से यह गौर किया कि उसकी एक गाय चरते–चरते अलग हटकर एक विशेष जगह पर जा खड़ी होती है और वहां खड़े–खड़े अपने आप अपने थनों से दूध टपकाने लगती है। मानो किसी अदृश्य देवता या बालक को दूध पिला रही हो। ग्वाले को यह बात बड़ी अजीब लगी। तो उसने घर आकर गांव के बड़े बूढ़ों को यह बात बताई। जब अगले दिन सब लोग मिलकर उस जगह पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि गाय फिर वहीं खड़ी होकर अपना दूध जमीन पर गिरा रही है। इसके बाद उस ग्वाले ने एक कुदाली से उस जगह पर खोदना शुरू किया तो वह कुदाली एक चीज से टकरा गई। जब वहां मिट्टी को हटाकर देखा तो वहां से उन्हें एक दिव्य आकार का मुख या मोहरा मिला जिस पर महर्षि मार्कंडे जी का शांत और तेजस्वी मोहरा उभरा हुआ दिखाई दिया। कहा जाता है कि जब ग्वाले ने जोर से जमीन पर मारा था तो उस मोहरे ने ग्वाले से कहा था कि पंडित मजे – मजे वा यह सुनकर उसने मिट्टी को अपने हाथों से हटाया तो उन्हें यह मोहरा मिला । उस मोहरे के चेहरे पर एक अद्भुत शांति और तेज झलक रहा था उसमें ग्वाले के जमीन पर जोर से मारने से उस मोहरे के एक सिरे पर एक निशान रह गया था जो आज भी महर्षि मार्कंडे जी के प्रथम मोहरे में वैसा ही है। इसके बाद गांव वालों ने उस मोहरे की पूजा अर्चना करना शुरू कर दिया और बाद में उसी स्थान पर मार्कंडे जी का एक मंदिर बना दिया जो आज भी वहां पर वैसा ही बना हुआ है। अब वहां दूर–दूर से लोग अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए माथा टेकने, दीपक जलाने, फूल और नारियल चढ़ाने आते हैं।

– तान्या ठाकुर, बीए प्रथम वर्ष

बघेड़ा खानदान बनाम ऋषि पराशर

छात्र संदर्भ : मैं रोहन नेगी जी.डी.सी. पनारसा का छात्र हूं और अंग्रेजी मुख्य विषय के साथ बी.ए. कर रहा हूं। मैं मंडी जिले के कोटधार गांव से संबंध रखता हूं। यह लोक कथा मुझे मेरे गांव कोटाधार के ही एक बुजुर्ग निवासी द्वारा सुनाई गई है।

लोक कथा का संक्षिप्त संदर्भ : यह लोक कथा मंडी जिले के ज्वालापुर के पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है। जहां कश्यं नाम का एक गांव है। यह लोक कथा केवल इसी गांव से संबंधित है। साथ ही इसमें ऋषि पराशर का वह श्राप भी शामिल है जो उन्होंने बघेड़ा खानदान को दिया था जो कभी ध्याना गांव के मूल निवासी हुआ करते थे।

लोक कथा : इस लोक कथा का जिक्र ऋषि पराशर जी की एक छोटी सी वार्ता में मिलता है जिसमें वह बोलते हैं मीठी कंधारी छारी नसा जयकारी देई नसा इस लोक कथा का सरल अर्थ है कि सर्वप्रथम ऋषि पराशर अपना धार्मिक स्थल अर्पण करने के लिए गांव ध्याना आए थे। उस समय बघेड़ा खानदान के लोग वहा रहते थे। यह उस समय वे कुटिया में रहा करते थे। पराशर ऋषि द्वारा घर के भीतर से आवाज लगाई गई और कहा मुझे थोड़ा सा जल व स्थान दीजिए। उसमें बघेड़ा खानदान के बुजुर्ग लोग मदिरा पान कर रहे थे वे उनके उत्तर में कहते हैं हम जल तो नहीं परंतु आपको महीश पिलाएंगे। यह सुनकर ऋषि पराशर बहुत क्रोधित हुए और बघेड़ा खानदान को यह श्राप दिया कि तुम्हारी जितनी पीढ़ी जन्म लेगी। वे मदिरा पान में लीन रहेगी।

जाग उपक्रम : जाग उपक्रम कुल्लू जिला के कई पहाड़ी क्षेत्रों में किया जाता है परंतु गांव कोटधार में मनाई गई जाग कुछ हटकर की जाती है यह जाग तकरीबन वर्ष भर श्री देव बरनाग जी के पवित्र मंदिर कोटधार में मनाई जाती है जिसमें जौ की मीठी मदिरा का उपयोग किया जाता है । जाग यानी अग्नि को झूठा करने के लिए किया जाता है। जौ की शराब घर में तैयार की जाती है। इसे मंदिर तक व उसके बाद अग्नि के गोलाकार घेरे में शाम को फेंकी

या गिराई जाती है। मदिरा का उपक्रम वेरा खानदान का कोई एक सदस्य करता है। यह जाग ऋषि पराशर जी के उसी श्राप पर निर्धारित है। अगर बघेरा खानदान के लोग वह गलती नहीं करते ।

– रोहन, बीए प्रथम वर्ष

बूढ़ी नागिन की कथा

परिचय : प्राचीन समय की एक बात है। एक समय में एक नाग माता थी, जिसके छह पुत्र थे। यह एक ऐसी कथा है जिसमें बूढ़ी नागिन तथा उनके पुत्रों एवं उनके खो जाने के बारे में बात करेंगे। बूढ़ी नागिन हिमाचल प्रदेश के कुल्लू तथा मंडी जिले के क्षेत्रों में पूजी जाने वाली एक पौराणिक देवी से संबंधित है। यह कथा देवी के छह नागों के खो जाने के बारे में है जिसमें उनकी माता नहाने जाती है। बच्चो को टोकरी के नीचे रखा जाता था ताकि वे भाग ना सके, परंतु होनी को कौन टाल सकता है? माता के जाने के बाद उनके भाई खुड़ी जहल ने टोकरी हटा दी। जैसे ही टोकरी को हटा दिया, वैसे ही वे नाग वहां से भागे क्योंकि वे थोड़े शरारती थे। माना जाता है कि खुड़ी जहल उनके भाई थे और जैसे नाग माता जी घर पहुंची तो पाया कि टोकरी में बच्चे नहीं थे, ऐसी स्थिति में दुखी होकर अपना घर त्याग दिया और सरयोल सर पहुंच गई, जो कुल्लू जिले के बंजार घाटी में स्थित है। यह बहुत आकर्षक जगह है और यहां पर एक झील भी है जो नाग माता की है।

– युवराज, बीए प्रथम वर्ष

पवित्र सर रोपा मंदिर

हिमालय की पहाड़ियों में प्रसिद्ध रोपा नाम का मंदिर जो कि देव श्री पुंड्रिक ऋषि को समर्पित है। इस मंदिर के गर्भ गृह में भगवान श्री राम के पुत्र लभ की मूर्ति स्थापित है। देव श्री पुंड्रिक ऋषि को भगवान श्री राम के जेष्ठ पुत्र लभ का अवतार माना जाता है। इस मंदिर की विशेषता है कि यह मंदिर पानी के ऊपर बना है। यहां पर एक सरोवर है। इस सरोवर की विशेषता है कि इसमें अनेक मछलियां हैं। स्थानीय निवासियों का मानना है कि इस सरोवर में जो मछलियां हैं, वह देवी देवताओं का रूप है। स्थानीय निवासियों के अनुसार सरोवर के नियमों का पालन करना होता है। नियमों के अनुसार जो कोई मानव मछलियों को पानी से बाहर निकालने या मछलियों को मारने की कोशिश करता है, तो वहां पर मंदिर के नीचे से विशाल सांप निकलते है और उस व्यक्ति को सांपों द्वारा मारा दिया जाता है। यह सांप देवताओं की प्रिय मछलियों की रक्षा करते हैं।

एक बार की बात है एक साधु मंदिर के पास भ्रमण कर रहा था, तो उसने मंदिर को देखा और वहां चला गया। वहां उसने एक सुंदर सरोवर को देखा और वह पानी पीने लगा। उसने सरोवर में सुंदर मछलियों को देखा। उसके मन में मछलियों को खाने की इच्छा जागी। जब साधु ने एक मछली पकड़ी और बाहर निकाली, वैसे ही मंदिर के नीचे से विशाल सांप निकला और सांप ने उसे मार दिया। कुछ स्थानीय निवासियों ने इस .श्य को देखा। जब देवता को स्थानीय निवासियों ने पूछा तो देवता ने गुरवाणी द्वारा बताया कि जो कोई भी मछलियों को मारने की कोशिश करेगा, तो उसके साथ भी ऐसा ही होगा। देवता के कहने पर स्थानीय निवासी अपने बच्चों का मुंडन मंदिर के सरोवर के पास प्रांगण में करते है और सरोवर के पानी से जो कोई नहाएगा उसके पाप धुल जाएंगे। तब लोगों ने वहां पर आना–जाना शुरू किया तभी से वह मंदिर एक तीर्थ स्थल बन गया।

कमलेश कुमार

चंद्रशेखर चाचा

सचानी नाम का गाव जो कि प्रा.तिक सुन्दता के लिए जाना जाता था इस गांव के साथ में लगता एक गांव जिसका नाम भड़ी ओली है। कई सालों पहले चंदर शेखर नाम का एक बस चालक था जो उस गांव को आने वाली बस का चालक था। जिस कारण उसकी लोगों से अच्छी जान–पचान बन गई थी। खासकर बच्चों के साथ उसे अधिक लगाव था। शाम के समय जब भी उस गांव में पहुंचता तो जोर से बस का हॉरन बजाता था। सारे बच्चे अपने घर से दौडते आते और बस में चढ जाते वह गांव में आने वाली पहली बस थी जिस कारण लोगों को बस में जाने का बहुत शौक था। गांव के कुछ बुजुर्ग भी बस में बैठने का आनंद लेते थे वे सभी बस के अंतिम स्टेशन तक बस चालक के साथ जाते चंदर शेखर रोज बच्चों को टॉपी चॉकलेट लाता जिससे वह बच्चों का प्रिय बन गया था। रोज यही होता बस का चालक आता बच्चों के साथ मस्ती करता और चला जाता। काफी समय ऐसे ही गुज़र गया, फिर शिवरात्री का त्यौहार आता है, जिसे पवित्र त्यौहार माना जाता है। यह आस्था का पर्व है। पूरे गांव में त्यौहार की तैयारियां चल रही थीं। शाम होने को थी तथा बस आने का समय भी हो रहा था सभी बच्चे अपने पसंदीदा चंद्रशेखर चाचा का इंतजार कर रहे थे। उन्हें लगा आज त्यौहार के अवसर पर उनके चाचा उन्हें कुछ खास लेकर आएंगे तथा इस त्यौहार की बधाइयां देने गांव के बुजुर्ग भी बस के पास आए। सभी रोज की तरह बस में चढ़ते हैं, आपसे में बातचीत करते हैं, कुछ लोग बस से उतरते हैं फिर बस चालक बस को मोड़ता है तथा अचानक से बस के सामने कुछ आ जाता है बस के टकराने से बचाने के लिए बस को दूसरी दिशा की ओर मोड़ता है। जिस कारण वह बस खाई में गिर गई। उस बस में मेरी सहेली के दादा व उनका साला तथा गांव के बच्चे थे। वे सभी इस घटना का शिकार हो गए। लोगों का कहना है कि बस चालक घायल था, मरा नहीं था। जब उसने साथियों को मरा हुआ तो वहीं पर अपना दम तोड़ देता है।

इस घटना के बाद वहां पर रात को बहुत डरावनी आवाज़ें सुनाई देने लगी थी। रात को वहां बाइक चलते चलते बंद हो जाता था। वहां से अगर कोई भी गाड़ी रात को शोर मचाती हुई गुजरती तो कुछ ना कुछ घटनाएं होती थीं। ऐसी कई घटनाएं वहां उस समय सुनने को मिली ऐसा लोगों का मानना है हमने यह बातें गांव में अपने बजुर्गों से सुनी है कुछ समय तक वहां पर बहुत सारी घटनाएं होती रही फिर सभी गांव बालों ने मिलकर इसका हल ढूंढने के लिए आपस में बातचीत की फिर उन्होंने उस जगह तांत्रिक को बुलाया बहां पर चंड़ी का हवन व गायत्री मंत्र का जाप करवाया। कुछ क्रियाएं वहां की गई ताकि उनकी आत्मा को शांति मिले यह सब करवाने के बाद वहा कोई घटना नहीं हुई।

– स्नेहा राणा, बीए प्रथम वर्ष

चुकोही राक्षस

प्राचीन समय में एक चेत नामक गांव में किसी दूर स्थित पहाड़ी में एक छोटा–सा परिवार अकेला रहता था। उस परिवार में उनकी एक प्यारी–सी बेटी भी थी। उस समय राक्षस हुआ करते थे। एक दिन उस औरत का पति काम करने के लिए किसी अन्य स्थान को कुछ दिनों के लिए चला जाता है, उसने जाते समय अपनी पत्नी से कहा कि तुम किसी चुकोही (अन्य रिश्तेदार) को घर में बुला लेना ताकि तुम्हें अकेला महसूस ना हो। उस पत्नी को चुकोही शब्द का पता नहीं था तो उसने शाम होते ही चुकोही...चुकोही आवाज़ लगाई। वह आवाज़ चुकोही नामक राक्षस ने सुन ली तो उसे यह पता नहीं था कि यह आवाज किसी रिश्तेदार ने नहीं बल्कि चुकोही नामक राक्षस ने सुनी तो उस महिला ने बोला आते समय जोगणी मशाल साथ लाना उजाला करने के लिए ।
उस राक्षस ने जोगणी का गठा नहीं बल्कि पूरा पेड़ ही उखाड़ कर लाया और वहां पर पहुंचकर उसने उस महिला से कहा कि उसे कहां से लाऊं। छत से या दरवाज़े से लाऊ यह सुनकर महिला को पता चल गया कि यह कोई

इंसान नहीं बल्कि राक्षस है तो उसने कहा कि आप डूंगरे छत से लाओ और यहां मेरा इंतजार करो। मैं गाय को घास देकर आती हूं। बहुत इंतजार करने के बाद राक्षस ने चावड़ी से देखा कि वह महिला वहां से भाग गई है और उस समय घर दूर–दूर होने के कारण वह उसका पीछा करने लगा और बाद में वह महिला किसी दूसरे गांव चेत में पहुंची वहां पर एक घर में एक जगह नाटी लगी हुई थी, उसमें पूरे गांव के लोग आए थे और नाटी लगा रहे थे उस महिला ने उस घर का दरवाजा खटकाया, परंतु उसकी आवाज शौर के कारण किसी ने नही सुनी ।और दरवाजा भी अंदर से बंद था फिर उस महिला ने बहुत कोशिश की ,इधर उधर झांका और उसे वहां एक बड़ा सा पेड़ नजर आया और फिर वह मां बेटी उसमें चढं गईं परंतु उस राक्षस ने उन दोनों को पेड़ पर चढते हुए देख लिया था उसने उन दोनों को उसी पेड़ पर खा लिया अगले दिन गांव वालों ने उनके शवो को वहां देखा तो उनको एहसास हुआ कि इनकी मृत्यु हमारे कारण हुई है इसलिए उन्होंने वहां पर उनके नाम पर एक मंदिर बनाया ।

धमेश्वरी देवी, बीए प्रथम वर्ष

मेरे गांव की बावड़ी

मेरे गांव में एक बावड़ी है। लोगों द्वारा कहा जाता है कि यह बावड़ी देव गणेश द्वारा निकाली गई है। लोगों का कहना है पहले उस बावड़ी की जगह एक बड़ा–सा पत्थर था और उस पत्थर के नीचे पानी था। गांव के कुछ लोग वहां गए तथा उन्होंने उस पत्थर को तोड़ दिया फिर गांव के सभी लोग शाम को रोज वहां से पानी लाते थे तथा वहां बावड़ी एक ऐसी जगह स्थित है जहां से सभी लोगों का आना जाना था भेड़ बकरियां दिन को वहीं पर पानी पीती थी। बरसात ने उस जगह को तबाह कर दिया । वहां पानी आना बंद हो गया ।कुछ महीने बाद वहां फिर से पानी आने लगा तथा किसी के द्वारा यह भी कहा जाता है कि उस जगह झूठा नहीं करना चाहिए ।यही सिलसिला चलता रहा कभी पानी सूख जाता था फिर लोग साफ सफाई करते थे और पुनः पानी आ जाता था वहां एक बावड़ी का निर्माण किया । फिर पानी सूख गया था तथा गांव के लोग देव गणेश के मंदिर चले गए तथा उनसे विनती की गई कि उस जगह के पानी से गणेश केनलिए धाम का प्रबंध किया जाएगा । इसीलिए इस जगह में पानी लाइए और जिस दिन उस धाम को बनाया था उस दिन पानी शुरू हो गया तथा पूरी धाम उसी पानी से बनाई गई तब से अब तक वह पानी नहीं सूखा है परंतु अगर झूठा इत्यादि वहां होने लगे तो वह पानी कम होने लगता है।

– यशु, बीए तृतीय वर्ष

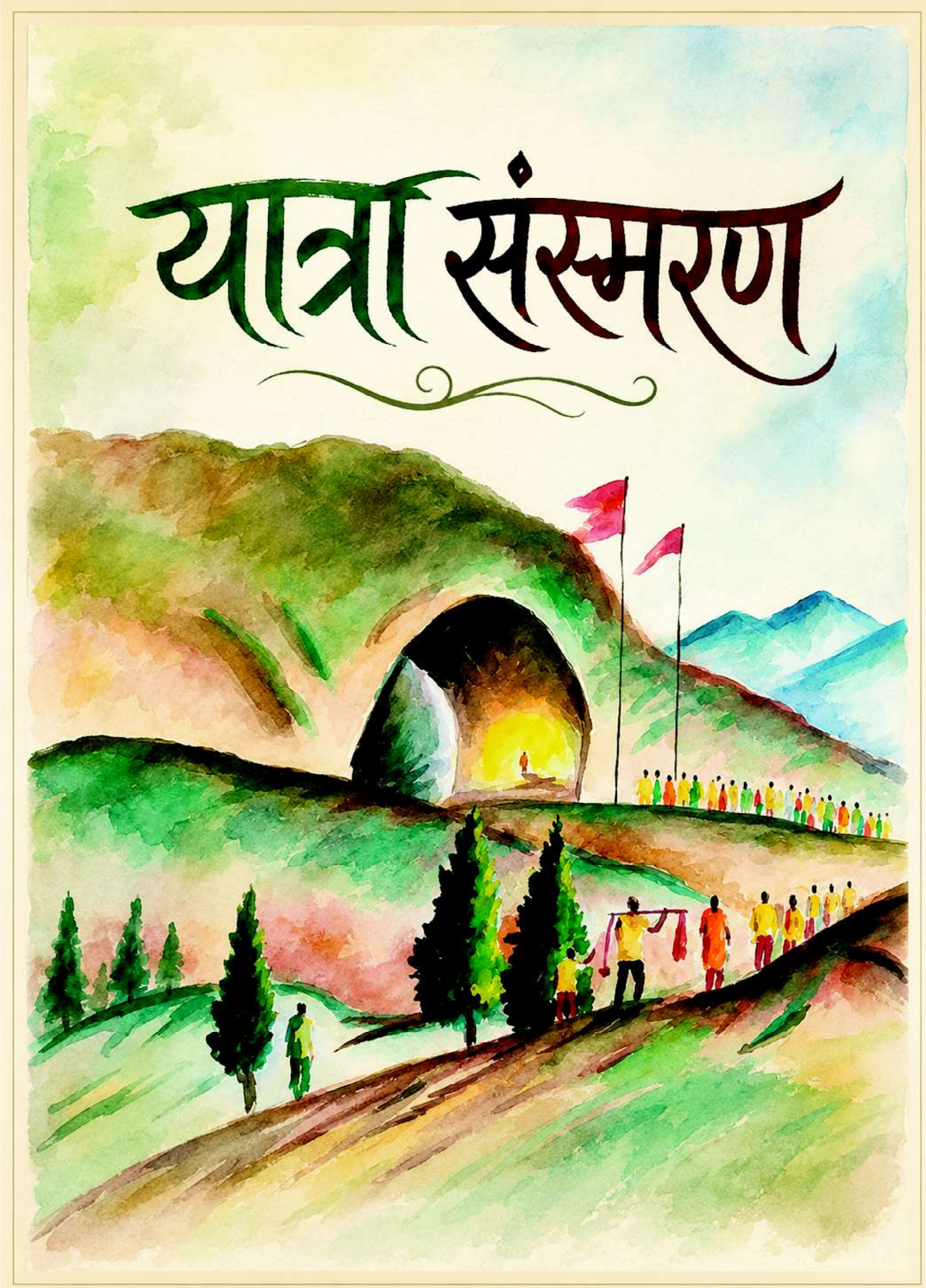
यात्रा संस्मरण

ऐतिहासिक स्थल की यात्रा

मेरी ऐतिहासिक स्थल की यात्रा का नाम चुंजवाला है। यह स्थान बाली चौकी क्षेत्र के पंजाई नामक स्थान से दूर एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। यह स्थान विशेष तौर पर हमारे इष्ट देवता 'चुंजवाला महादेव जी' के 'हूम पर्व' के लिए प्रसिद्ध है। प्रत्येक वर्ष इस स्थान पर मई के महीने में हजारों श्रद्धालू इस हूम पर्व में सम्मिलित होने तथा देवता जी के दर्शन पाने के लिए यहां एकत्रित होते हैं।

आखिर यह चुंजवाला हूम क्या है? : यह हमारे महादेव जी का एक तीर्थ स्थल है। इस तीर्थ में बालीचौकी, शालागाड़, पंजाई, देवदार आदि क्षेत्रों के लोग अपने छोटे–छोटे बच्चों का मुंडन करवाते हैं। इस मुंडन को प्रत्येक खानदानी के नहणू द्वारा करवाया जाता है। चुंजवाला होम के एक दिन पहले सभी नहणू घर से दूर कहीं शांत जगह पर एक दिन तक बाहर ही स्वयं भोजन पकाकर खाते हैं। यदि खाना खाते समय इन्हें किसी की आवाज सुनाई दी तो फिर वे उस खाने को नहीं खा सकते इसलिए उस समय पूरे गांव का माहौल बिल्कुल शांत रहता है। चुंजवाला होम के एक सप्ताह पहले गांव के सभी लोग अपने जूतों–चप्पलों को गांव तक अपने घरों से दूर रखते हैं। चुंजवाला होम एक प्रसिद्ध होम है। इसे प्राचीन काल से मनाया जा रहा है। इस तीर्थ को मनाने के लिए लगभग सभी लोग पैदल यात्रा करके जाते हैं। परंतु जैसे–जैसे समय बीत रहा है लोग पुरानी परंपराओं को भूलकर गाड़ियों में उस स्थान तक जा रहे हैं। इस होम मैं शामिल होने के लिए गांव के सभी लोग जाते हैं। साधनों की कमी होने के कारण लोग अपने खाने–पीने और रहने के लिए टेंट भी साथ ले जाते हैं। मार्ग में विश्राम करते हैं। सभी लोग कुछ पैदल तथा कुछ गाड़ियों में वहां पहुंचते हैं। इस दिन हजारों श्रद्धालु देवता जी के दर्शन तथा उनके होम पर्व को मनाने के लिए एकत्रित होते हैं। सूरज ढलने के बाद चुंजवाला महादेव जी अपने मूल स्थान कांडा से पैदल यात्रा करके हजारों श्रद्धालुओं के साथ चुंजवाला पहुंचते हैं। जैसे ही देवता वहां पहुंचते हैं चारों ओर हर–हर महादेव की आवाजें गूंज उठती हैं। उसके पश्चात देवता जी को उनके मंदिर में बिठाया जाता है और फिर सभी श्रद्धालु बारी–बारी देवता जी के दर्शन करते हैं। दर्शन हो जाने के पश्चात मंदिर के बाहर लकड़ी के कुंड को जलाया जाता है और होम की कार्रवाई शुरू की जाती है। रात को सभी नहणू मंदिर के चारों ओर लकड़ी के मशालों के साथ नाटी करते हैं। कुछ समय के पश्चात कुछ लोग अपने–अपने टेंटों में जाकर सो जाते हैं और कुछ लोग वहीं आग जलाकर सारी रात कीर्तन–भजन करके गुजार देते हैं। सुबह देवता को उनकी थली (बैठने का स्थान) पर बिठाया जाता है फिर बारी–बारी से सभी नहणू बच्चों का मुंडन करवाते हैं और यही होम की सारी प्रक्रिया समाप्त हो जाती है। सभी लोग अपने–अपने घर जाते हैं और देवता जी को भी उनके मूल स्थान कांडा ले जा ले जाया जाता है।

सीमा ठाकूर

नदी, पहाड़ और रास्ते में मेरी एक दिन की यात्रा

एक दिन मैं अपनी सहेली और भाई–बहनों के साथ तुंगा की यात्रा के लिए निकल गई। जो पहाड़ों की चोटी पर स्थित थी। सुबह का मौसम बहुत सुहावना था। आसमान साफ था और ठंडी हवा चल रही थी। हम सब बहुत खुश थे। क्योंकि हमें प्रकृति के सुन्दर दृश्य को देखने को मिलने थे। जैसे–जैसे हम आगे बढ़ते गए, हमे ऊंचे–ऊंचे पहाड़ दिखाई देने लगे। पहाड़ों पर हरियाली बहुत सुंदर दिख रही थी। रास्ते की दोनों तरफ पेड़ पौधे थे। यह दृश्य मन को मोह लेने वाला था ।पेड़ों से पत्ते गिर रहे थे जैसे पेड़ों को अलविदा कह रहे हो और पक्षियों की आवाज सुनाई दे रही थी जो पेड़ों पर बैठे चह चहा रहे थे और एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ रहे थे और ऐसा लग रहा था मानो गीत गा रहे हो जिससे मन में दो पल की शांति और आत्मा तृप्त हो रही हो। यह सब देखकर मन प्रसन्न हो रहा था और चलते–चलते हम एक नदी के पास पहुंच गए। जो झरझर कर बहती चली जा रही थी जिसका पानी कभी हरा और कभी कई जगह पर नीला दिखाई देता है जो यात्रा को और सुंदर बना देता है नदी का पानी साफ

सुथरा और ठंडा था पानी धीरे–धीरे करके बह रहा था हम सभी नदी के किनारे बैठे और थोड़ी देर बातें की और नदी के पानी को निहारते हुए तस्वीरें ली और आगे चल पड़े। रास्ते में हमें छोटा सा गांव और मंदिर देखने को मिला जहां के लोग और बच्चे बहुत सुंदर थे ।हमने रास्ते में कई तस्वीरें ली और खूब आनंद किया मंदिर में हम शाम को पहुंचे और माता के दर्शन किए और जो भोजन साथ में लाया था सभी ने मिलकर खाया और कुछ देर रुककर शाम को ही वापस घर के लिए निकल गए इतनी यात्रा करने के पश्चात हमारे शरीर में थकान थी परंतु प्रकृति का सौंदर्य पक्षियों की चहचाहट पेड़ों और पौधों के फूलों की सुगंध नदी तथा झरनों की आवाज शरीर की थकान को समाप्त कर रही थी। हमने जगह–जगह आराम किया और अंधेरे होते –होते घर पहुंच गए।

– कांता, बीए द्वितीय वर्ष

नदी पहाड़ और रास्ते, मेरी एक दिन की यात्रा

देव बरनाग के साथ बिझी–बादली के उपलक्ष्य पर ऐतिहासिक दौरा

यह बात है 5 सितंबर 2025 की है जब देव बरनाग जी अपने दादा की तपस्थली बांधी बिझी–बादली के उपलक्ष्य पर पैदल गए थे। इस दौरे में 2000 के करीब देवलू देवते के साथ थे। इस दौर को मैंने अपने शब्दों में पिरोने का प्रयास किया है। जो इस प्रकार है।

बिझी–बादली का अर्थ : अत्यधिक बर्षा को रोकने के लिए मौसम साफ करने के लिए देवता का बांधी जाना बिझी–बादली है।

सफर की शुरुवात : सुबह 10 बज के 30 मिनट पर बरनाग जी अपने मूल स्थान भण्डार स्नोड से बांधी जाने के लिए अपने देवलूओ के साथ रवाना हुए। इस यात्रा में देवते के साथ बाद्य–यंत्रों में 7 ढोल, छह नगाड़े, तीन शहनाई, छह नरसिंगे, पांच करनाल प्रभु की इन बाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि से यात्रा और भी मधुर, अनन्दित प्रतीत हो रही थी।

टेढ़े–मेढ़े रास्ते वा नालों में उफनते जल की लहरों के बीच सफर : स्नोर से निकलते ही रास्ते में एक उफनता हुआ नाला जिसे 'चुली नाला' भी कहा जाता है, को पार करते हुए हजारों देवलूओं के साथ पार करते हुए नाले के दूसरी तरह पहुंचे। नाले में अत्यधिक बहाव होने के दौरान भी सभी ने एक जुट होकर निडरता से नाले को पार किया। इसके बाद टेढ़े–मेढ़े और संकरे पहाड़ी मार्ग, कंटिली झाड़ियों से होते हुए सभी देवलू आगे बढ़े।

चाय–पान की व्यवस्था पहाडी : पहाड़ी व संकरे मार्ग को पार कर देवता 'गांव पैट्रोश' में पहुंचा। वहाँ पर जल–पान के अलावा बाबरू, सुआले, बटूरू इत्यादि की व्यवस्था थी, जो वहां के स्थानीय लोगों द्वारा देवता के स्वागत के अवसर पर श्रद्धा भाव से किया गया था।

भक्ति एवं मान्यता : माना जाता है कि जब बर्षा का कहर अपनी चरम सीमा पर होता है तो गांववासी बिझी–बादली के देवता अराध्य श्री देव बरनाग जी से बर्षा को रोकने की गुहार लगाते हैं, जिसके लिए देवता श्री देव बरनाग बर्षा को रोकने के लिए बांधी जाते है। और बर्षा को रोकने के लिए वहाँ अपने गूर खेल के माध्यम से जाग जला कर सभी की समस्या का निवारण करते हैं। तभी उन्हे बिझी–बादली का देवता कहा जाता है

सौभाग्य का पल : यह देव यात्रा मेरे लिए एक यादगार और सौभाग्य का पल है। इस देव यात्रा में शामिल होना मेरे लिए एक अविस्मरणीय स्मृति है। मैं अनेक देव कार्यवाहियों का साक्षी बना, जिससे मेरे अंदर मन में भक्ति की भावना भी गहरी हो गई।

निष्कर्ष : तमाम देव कार्यवाहियों के पश्चात देवता बरनाग जी के चमत्कार से बारिश का कहर रुक गया समस्त हरियानों ने देवता जी का धन्यवाद किया।

एक मान्यता के अनुसार देवता जी ऋषि पराशर के भंण्डार में अंदर न जाकर सीड़ियों के नीचे ही तैयार अपने विशेष कक्ष में रहते हैं।

– अभिषेक ठाकुर, बीए तृतीय वर्ष

पुस्तक समीक्षा

तमस

लेखक : भीष्म साहनी

लेखक परिचय : भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के प्रमुख कथाकार, नाटककार और उपन्यासकार थे। उनका जन्म 8 अगस्त 1915 को रावलपिंडी, पाकिस्तान में हुआ था। वे प्रगतिशील लेखक आंदोलन से जुड़े हुए थे और सामाजिक यथार्थ को अपनी रचनाओं में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते थे।

शिक्षा और जीवन :

– उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एमए किया।
– कुछ समय तक वे मास्को में अनुवाद कार्य से भी जुड़े रहे।
– वह दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन करते थे।
– वह प्रसिद्ध अभिनेता, बलराज साहनी के छोटे भाई थे।

प्रमुख कृतियां :

– तमस (सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास)
– भाग्य रेखा
– पहला पाठ
– भटकती राख
– माधवी
– गुलेल का खेल
– बसंती
– कबीरा खड़ा बाजार में (नाटक)
– आज के अतीत कुंत्तो इत्यादि।

पुरस्कार :

अन्य पुरस्कारों के अलावा तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा हिंदी अकादमी दिल्ली का श्लाका सम्मान, उन्हें 1998 में पदम भूषण भी मिला।

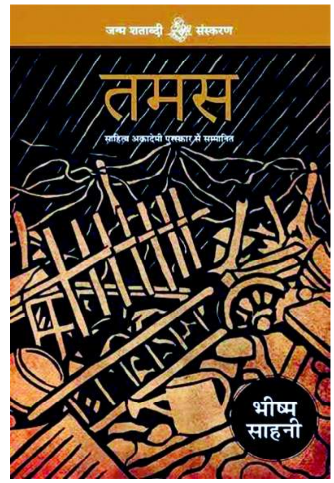

लेखन की विशेषताएं :

– यथार्थवादी शैली
– सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का चित्रण,
– मानवता और सहिष्णुता का संदेश,
– सरल और प्रभावशाली भाषा।

निधन : उनका निधन 11 जुलाई 2003 को हुआ।

पुस्तक के बारे में :

मैंने पुस्तक को क्यों चुना? तमस पुस्तक मुझे हमारे हिंदी विभाग के प्रोफेसर अनिता द्वारा पढ़ने के लिए दी गई थी। मैंने यह पुस्तक पढ़ने के लिए इसीलिए चुनी क्योंकि यह हमे हमारे देश के विभाजन के समय की सच्चाई दिखाती है।

मुझे यह पुस्तक इसीलिए अच्छी लगी, क्योंकि इसमें आम लोग लोगों की तकलीफ और डर को बहुत सच्चे तरीके से बताया गया है। इसे पढ़कर मुझे समझ आया कि धर्म के नाम पर लड़ाई करना कितना गलत है। इसके लेखक भीष्म साहनी ने इस उपन्यास को बहुत ही सरल भाषा में लिखा है, इसीलिए इसे समझना आसान है। इस पुस्तक से हमें सीख मिलती है कि हमें आपस में मिलजुल कर रहना चाहिए और नफरत से दूर रहना चाहिए, इसी कारण मैंने तमस को अपनी समीक्षा के लिए चुना। तमस की समीक्षा

तमस के लेखक भीष्म साहनी है, यह उपन्यास भारत–पाक विभाजन के समय हुए दंगों पर आधारित है। कहानी में बताया गया है कि किस तरह एक छोटी सी घटना पूरे शहर में हिंसा फैला देती है।

इस उपन्यास का मुख्य पात्र नत्थू है, जो एक गरीब आदमी है उसे पैसों का लालच देकर एक सूअर को मारने के लिए कहा जाता है। बाद में वही सूअर जब मस्जिद के बाहर फेंक दिया जाता है जिससे दंगे शुरू हो जाते हैं। नत्थू को बाद में अपनी गलती का एहसास होता है और वह पूरी तरह से डर और पछतावे से भर जाता है।

शीर्षक : इस उपन्यास का शीर्षक तमस का अर्थ अंधकार। यहां अंधकार का मतलब लोगों के मन में भरी नफरत और अज्ञानता है।

नत्थू ,मुझे नत्थू का पात्र इसीलिए अच्छा लगा, क्योंकि वह बुरा इंसान नहीं था, वह मजबूर था। उसके गरीब होने के कारण उसे चंद पैसों के लिए सूअर को मारा पड़ा था।

हाजी साहब, हाजी साहब। हाजी साहब शांत स्वभाव में रहने वाले व्यक्ति थे। उनकी समझदारी मुझे काफी अच्छी लगी। वे हमेशा शांति बनाए रखना चाहते थे।

रिचर्ड, रिचर्ड डिप्टी कमिश्नर के पद पर था। उसका व्यवहार दिखाता था कि अंग्रेजी अधिकारी भारतीयों को ठीक से समझते नहीं थे।

तमस पुस्तक के बारे में, मुझे पुस्तक पढ़ के कैसा लगा?

मैंने तमस पड़ी और मुझे यह कहानी बहुत अलग और गहरी लगी। इसमें भारत–पाकिस्तान विभाजन के समय की घटनाएं दिखाई गई शुरुआत में इसमें एक छोटी सी बात होती है, जब नत्थू नाम के गरीब आदमी से सूअर मंगवाया जाता है। उसे अपनी गरीबों के चलते यह काम करवा करना पड़ता है, चाहे यह काम कितना ही जोखिम भरा क्यों ना हो। बाद में वही सूअर मस्जिद के बाहर फेंक दिया जाता है जिस वजह से उस समय हिंसा और दंगे शुरू हो जाते हैं।

धीरे–धीरे हालात बहुत खराब हो जाते हैं। लोग एक दूसरे के खिलाफ हो जाते हैं। जगह–जगह डर, गुस्सा, हिंसा फैल जाती है। लोगों के घरों को जलाया जाता है और सब निर्दाष लोगों को बिना वजह सहना पड़ रहा था। यह सब पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि धर्म के नाम पर इंसान इतना खराब कैसे हो सकता है।

नत्थू ऐसा पात्र था। इस उपन्यास में जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद आया क्योंकि वह बुरा नहीं था, सिर्फ मजबूर था। उसे अपनी मजबूरी और पैसों की कमी के चलते ही सूअर को मारना पड़ा। उसे बाद में अपनी गलती का एहसास भी होता है कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मुझे ऐसा लगा कि कई बार गरीब लोगों को बड़े लोग अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करते हैं।

इस पूरी पुस्तक को पढ़कर एक बात तो समझ आ गई कि नफरत और हिंसा से सिर्फ नुकसान होता है। हमें हमेशा एक दूसरे के साथ शांति और भाईचारे के साथ मिलजुल कर रहना चाहिए।

आज का वातावरण और उस समय का वातावरण :

अगर मैं आज के वातावरण और उस समय के वातावरण के बारे में कहूं तो मुझे आज का वातावरण ही अच्छा लगता है। क्योंकि उस समय भारत–पाकिस्तान विभाजन का समय था जिसके चलते लोगों में धर्म–जाति के आधार पर काफी बातें की। उस समय लोग डर और तनाव में रहते थे। हर जगह दंगे, अत्याचार, लड़ाई–झगड़े और हिंसा थी। लोग अपने घर और परिवार की सुरक्षा के लिए परेशान रहते थे लेकिन आज लोग सुरक्षित हैं और शांति से रह सकते हैं। कानून और नियम है इसीलिए डर कम है। लोग एक दूसरे के साथ ज्यादा समझदार और दोस्ताना हैं।

उस समय का माहौल बहुत डरावना था।लेकिन हमें हमेशा इंसानियत और शांति बनाए रखनी चाहिए।

अंत : मेरे हिसाब से तमस हमें यही सिखाती है कि धर्म के पहले इंसानियत आती है। अगर हम एक दूसरे को समझने की कोशिश करें तो कभी ऐसी नौबत ना आए। यह किताब पढ़कर मुझे लगा कि इतिहास से सीख लेना बहुत जरूरी है।

– वंशिका, बीए तृतीय वर्ष

डार्क हार्स
नीलोत्पल मृणाल

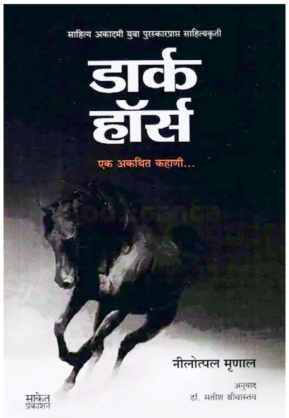

एक समकालीन हिंदी उपन्यास है जो भारतीय सिविल सर्विस की तैयारी कर रहे छात्रों के संघर्ष जीवन और अनुभवों को बहुत ही जीवंत ढंग से पिरोता है। कहानी का मुख्य पात्र संतोष जो सिविल सर्विस की तैयारी के लिए मुख़र्जी नगर दिल्ली को जाता है। इस कहानी में हमें अन्य पात्र भी मिलते हैं। राय साहब, गुरु, मनोहर जी भी सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए आए हैं। जब पहली बार संतोष राय साहब से मिलते हैं तो संतोष राय साहब को यह समझाता है कि सिविल सेवा की तैयारी जरूरी है लेकिन पूरा जीवन उसी लक्ष्य में समेट देना ठीक नहीं और उसके साथ–साथ यह उपन्यास सफलता की चमकदार पोस्टर नहीं दिखाता है बल्कि असफलता की चुप्पी ,बार–बार टूटते आत्मविश्वास और एक कोशिश के भीतर छिपे साहस को दिखाता है। इस कहानी में भी संतोष को हार का सामना करना पड़ता है लेकिन वह इस हार को अपनी कमजोरी नहीं बल्कि अपनी ताकत बनाता है। इस उपन्यास द्वारा मुझे यह बात समझ आ जाती है कि विद्यार्थी जीवन में हमें अपनी गलतियों से सीखना चाहिए। उपन्यास में कोचिंग स्थानों की व्यावसायिकता, नोट्स , कल्चर रैंक का दबाव, परिवार की उपेक्षाएं, अपेक्षाएं, मित्रों के बीच प्रतिस्पर्धा और प्रेम टूटन जैसी स्थितियां बेहद यथार्थवादी ढंग से उभरती हैं। डार्क हार्स का शीर्षक प्रतीकात्मक है । यह उन युवाओं की ओर इशारा करता है जो भीड़ में अनदेखे रह जाते हैं। हर अपनी मेहनत, आत्म सम्मान और सही .ष्टि से अत्यंत उभरते हैं।यहां राय साहब जैसे पात्र जीवन के गहरे मूल्य सिखाते हैं। डार्क हार जो एक महत्वपूर्ण उपन्यास है और इस उपन्यास में कुछ ऐसे पात्र थे जिसने मै बहुत प्रभावित हुई और सबसे ज्यादा संतोष से जिसने कभी भी हार नहीं मानी और मुश्किलों का सामना किया। डार्क हार्स में केवल एक कहानी नही है बल्कि यह एक अनुभव है जो युवाओं को अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है जो कठिनाइयों का सामना करके अपने लक्ष्यों को हासिल करना चाहते हैं। डार्क हार्स जिस का मतलब रेस में दौड़ता ऐसा घोड़ा जिस पर किसी ने भी दांव नहीं लगाया हो। जिससे किसी को जीतने की उम्मीद ना हो और वही घोड़ा सबको पीछे छोड़ आगे निकल जाए, वही डार्क हार्स है

तो चलिए देखते हैं अगला डार्क हार्स कौन
कहीं वो आप ही तो नहीं।

धन्यवाद।

धनेश्वरी

भारत और साम्यवाद
डॉक्टर भीमराव अंबेडकर

विषय : भारतीय समाज, साम्यवाद और सामाजिक न्याय

भूमिका : भारत और साम्यवाद डॉक्टर अंबेडकर की यह महत्वपूर्ण वैचारिक पुस्तक है जिसमें उन्होंने साम्यवाद की अवधारणा का विश्लेषण भारतीय समाज के संदर्भ में किया है। यह पुस्तक केवल राजनीतिक बल नहीं बल्कि सामाजिक यथार्थ पर आधारित है।

इस पुस्तक में डॉक्टर अंबेडकर बताते हैं कि साम्यवाद का मूल उद्देश्य समानता और शोषण शोशणा मुक्त समाज है लेकिन भारत जैसे जाति आधारित समाज में इसे सीधे लागू करना कठिन है वे स्पष्ट करते हैं कि

– भारत की सबसे बड़ी समस्या वर्ग नहीं जाति है।
– साम्यवाद आर्थिक असमानता को तो समझता है पर जातिगत असमानता को नहीं।
– जब तक जाति व्यवस्था समाप्त नहीं होगी तब तक कोई भी व्यवस्था सफल नहीं हो सकती।

लेखक के प्रमुख विचार

– अंबेडकर साम्यवाद की नैतिक भावना का समर्थन

करते हैं ।

— लेकिन उनकी व्यवहारिक समीक्षाओं को उजागर करते हैं ।

— वे लोकतंत्र स्वतंत्र और सामाजिक न्याय को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

पुस्तक की भाषा तर्क पूर्ण ,गंभीर और विश्लेषणमातक है। अंबेडकर जी का लेखन तथ्य और अनुभव पर आधारित है जो पाठक को सोचने के लिए मजबूर करता है यह पुस्तक भारतीय समाज की वास्तविकता को उजागर करती है । छात्रों व समाज शास्त्र के पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

कुमकुम, बीए द्वितीय वर्ष

जाति का विनाश

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर

जाति का विनाश ना केवल एक पुस्तक का नाम है बल्कि यह एक ऐसा विषय है जो भारतीय समाज की गहरी और जटिल समस्याओं को उजागर करता है यह किताब मुझे यह समझने में मदद करती है कि जाति व्यवस्था हमारे समाज के लिए कितनी नुकसानदायक रही है इसे पढ़ते समय बार–बार ऐसा लगा कि लेखक हमें हमारी ही सोच पर सवाल करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं ऐसा भी लगता है कि लिखित लेखक हमें सीधे संवाद में चुनौती दे रहे हैं कि हम बिना सोचे समझे चली आ रही मान्यताओं को स्वीकार क्यों करते हैं।

इस पुस्तक में कोई काल्पनिक घटना या पात्र नहीं है। फिर भी जाति व्यवस्था स्वयं सबसे प्रभावशाली पात्र के रूप में सामने आती है अंबेडकर जी जिस तरह बताते हैं कि जाति केवल विभाजन नहीं बल्कि मनुष्यों का विभाजन है यह विचार मुझे सबसे अधिक प्रभावशाली लगा यह बात सोचने पर मजबूर करती है कि कैसे समाज ने जन्म आधार पर इंसान की पहचान तय कर दी है। पुस्तक में मेरे लिए सबसे नई बात यह भी थी कि अंबेडकर जी सामाजिक सुधार को केवल कानून या उपदेश से नहीं बल्कि सोच में बदलाव से जोड़ते हैं पहले मुझे लगता था कि कानून बदलने से समाज अपने आप बदल जाएगा ।लेकिन इस पुस्तक ने समझाया कि जब तक लोग की मानसिकता नहीं बदलेगी तब तक कोई भी सुधार स्थाई नहीं हो सकता।

कुछ बातें ऐसी भी थी जो जानी पहचानी लगी जैसे समाज में ऊंच नीच भेदभाव और असमानता हम इन सब को रोज देखते सुनते हैं लेकिन इस पुस्तक ने उन्हें एक नए .ष्टिकोण से समझने का अवसर दिया। इससे यह सीख मिलती है कि किसी भी उपन्यास की परंपरा कह कर स्वीकार करना सही नहीं है।

यह पुस्तक आसान नहीं है क्योंकि यह हमें असहज करती है और सवालों के बीच खड़ा कर देती है। यही इसकी सबसे बड़ी ताकत है। जाति का विनाश ने मुझे यह सिखाया है कि सच्ची शिक्षा वही है जो हमें प्रश्न करना सिखाए और मानव समानता को सबसे ऊपर रखें।

कुल मिलाकर यह पुस्तक मुझे अच्छी लगी क्योंकि यह केवल ज्ञान नहीं देती बल्कि सोचने और समझने की शक्ति भी बढ़ाती है। जाति का विनाश हमें समानता, मानवता और न्याय का महत्व सिखाती है। यह पुस्तक मुझे अच्छी और आवश्यक लगी, क्योंकि यह समाज को बेहतर बनाने की दिशा में सोचने को प्रेरित करती है। हर विद्यार्थी को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए क्योंकि यह हमें बेहतर और सम्मान समाज की और सोचने के लिए प्रेरित करती है।

— स्नेहा राणा, बीए प्रथम वर्ष

गोदान

मुन्शी प्रेमचंद

गोदान उपन्यास प्रेमचंद्र जी द्वारा रचित उनका सबसे लोकप्रिय उपन्यास माना जाता है। प्रेमचंद्र जी के गोदान उपन्यास में भारत के किसानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है और भारतीय किसान के लिए उनके पशु के महत्व को भी चित्रित किया गया है।

मुझे प्रेमचंद्र जी का गोदान उपन्यास बहुत अच्छा लगा क्योंकि इस उपन्यास को पढ़कर मेरा मन भावों से भर उठा। विशेषकर इस उपन्यास के मुख्य पात्र होरी के

चरित्र में मेरे मन में एक गहरी छाप छोड़ दी है। जिस तरह से वह हर मुसीबत में कभी हार नहीं मानता, यह बात मुझे उनके चरित्र में सबसे अच्छी लगी। इस उपन्यास के सभी पात्र अपनी–अपनी सामाजिक हैसियत और परिवेश के अनुसार संवाद करते हैं ताकि उनके परिवेश की वास्तविकता को दर्शाया जा सके। उनका यह गोदान उपन्यास मुझे इसीलिए भी अच्छा लगा क्योंकि इस उपन्यास में उन्होंने एक गरीब किसान की जीवन की समस्याओं को उजागर किया और साथ ही उनके उपन्यास के दो मुख्य पात्र होरी और धनिया के चित्र को इस तरह से प्रस्तुत किया गया, जिसके पाठक उससे जुड़ जाते हैं और उनकी पीड़ा को महसूस कर सकते हैं।

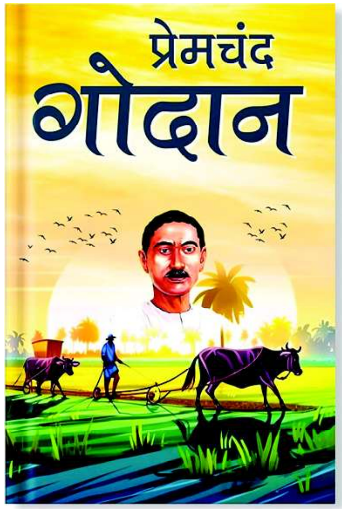

प्रभावी घटना : इस उपन्यास में मुझे सबसे प्रभावी घटना यह लगी कि जब झुनिया गोबर के बच्चों को अपनी कोख में लेकर होरी के द्वारा पर पहुँची थी। पहले तो धनिया और होरी को उस पर क्रोध आया पर बाद में उन्होने झुनिया की स्थिति देखी न गई और झुनिया को बिरादरी और समाज की परवाह ना करते हुए उसे अपने घर में शरण दे दी। यदि उस समय मे देखा जाए तो उस समय के समाज में एक ऐसी स्त्री को अपने घर में शरण देना स्वयं पर एक कलंक लगाने जैसा था। परंतु होरी और धनिया ने समाज की ही परवाह न करते हुए उसे अपने घर में शरण दे दी।

प्रभावी पात्र : इस उपन्यास में मुझे सबसे प्रभावी पात्र होरी लगा। वह आजीवन कर्ज सामाजिक दबाव परिवार की जिम्मेदारियों में झुलसता रहता था। परंतु कभी हार नहीं मानता। वह लगातार कष्ट सहता और सदैव परिवार और बिरादरी के लिए त्याग करने के लिए तत्पर रहता। जैसे हीरा ने जब उसकी गाय को जहर देकर मार दिया था। परंतु फिर भी उसे बचाने के लिए वह पुलिस को रिश्वत देता है और झुनिया को समाज की परवाह न करते हुए अपने घर में शरण दे देता है। उसकी यह सहनशीलता उसे महान बनाती है। होरी एक ऐसा पात्र है कि जो दया, ईमानदारी और कर्तब्य निष्ठा से भरा हुआ है, परंतु भाग्य और परिस्थितियों के कारण हमेशा हार कर भी कभी हार नहीं मानता। उसके जीवन में उसकी केवल एक ही इच्छा थी कि वह एक गाय खरीदेगा और उसके घर की सारी मुसीबतें दूर हो जाएगी। परंतु वह गाय खरीदने की लालसा में अंत में अपने जीवन से हार बैठता है।

नई बात : जब मैंने इस उपन्यास के शीर्षक को पढ़ा तो मुझे लगा कि गोदान शायद विवाह में दहेज से संबंधित होगा क्योंकि मैंने अपने पूर्वजों से सुन रखा था कि लड़कियों को दहेज में गाय दी जाती थी पुराने समय में, परंतु जब मैंने उपन्यास का अंत पढ़ा तो मुझे ज्ञात हुआ कि उस समय किसी की मृत्यु होने पर पंडितों को गाय दान की जाती थी तो यह घटना मेरे लिए नई थी, मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

जाने–पहचानी घटना : इस उपन्यास में जानी–पहचानी घटना जो आज के समाज में देखी जा सकती है। पहली तो यह कि जब गोबर शहर से वापस गांव आकर धनिया और अपने बच्चों को शहर ले जाने की बात करता है और अपने वृद्ध माता–पिता को गांव में अकेला छोड़ देता है।

सीख : इस उपन्यास को पढ़कर मुझे यह सीख मिली कि आपके जीवन आपके जीवन चाहे कितनी भी बड़ी मुसीबत, आपके जीवन में चाहे कितनी भी बड़ी मुसीबतें क्यों ना हो, आपको निरंतर उस मुसीबत का सामना करना चाहिए और कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। इस उपन्यास का मुख्य पात्र होरी ना जाने किन किन परिस्थितियों से गुजरता है परंतु फिर भी हार नहीं मानता चाहे लोग उसके साथ कितना भी बुरा बर्ताव करे वह उसके साथ सभी गले सभी गिले–शिकवे भूलकर उसे गले से लगा लेता है यह हमें सीख देता है कि कोई आपके साथ बुरा कर रहा है तो वह अपना कर्म कर रहा है। हमें अपने मन को साफ रखना चाहिए और सदैव ईमानदारी की राह पर चलना चाहिए।

रीना चौहान

परम्परा

शादियों में गाए जाने वाले गीत

देवता जी के (विवाह के समय) गाए जाने वाले गीत :

''किस जो देना नीऊंद्रा, क्यूंना–क्यूंना देवते शादाएं।
गणपति जो देना नीऊंद्रा, रिद्धि–सिद्धि गौरी समेत!
नारायण जो देना नीऊंद्रा, लक्ष्मी समेत।''

व्याख्या : उपरोक्त पक्तियों में कहा गया है कि किस–किस को निमंत्रण दिया और कौन–कौन देवता बुलाए हैं। भगवान गणेश को देना निमंत्रण, रिद्धि–सिद्धि और मां पर्वती के साथ। प्रभु नारायण को देना निमंत्रण या लक्ष्मी के साथ।

मामा स्वागत पर गया जाने वाला गीत :

''मामा ता आउंदे ओ हारिये बगारिये
मामा गोरी निउंद्रे आई!
काल के शदाइरे, काल के नी आए!
काल थी म्हारे घरे रंग–रंगाई।''

व्याख्या : मामा आ रहे हैं बहुत सारा सामान डालकर, मामी आ रही है निमंत्रण से। पिछले कल के बुलाए हैं। परंतु मामा मामी पिछले कल के नहीं आए। पिछले कल था मारे घर। (दुल्हन के घर) में रंग रंगाई मतलब घर में पेंट आदि करना।

हवन के समय गाया जाने वाला गीत :

''हूमा बोले हूमड़िएं!
हां जऊए घीऊए हू होए!
गरी चुहारे, हुमा होए!
दाखे बदामें हुमा होए।''

व्याख्या : उपरोक्त पंक्तियों में कहा गया है कि हवन जो अनाज व घी से होता है, हवन में, किशमिश नारियल बादाम आदि के द्वारा हवन किया जाता है। इन सभी का प्रयोग हवन में होता है।

तेल शांति किस में बोला जाने वाला गीत :

''तेला–तेला संजइया हां,
लाड़ी दिए दिदिए, आज के तेले हां, धर्म होए।
तेला–तेला सांजेया अम्मा बापू जी तेल संजोए,
आज के तेले धर्म होए।''

व्याख्या : उपरोक्त पंक्ति में कहा गया है कि दुल्हन की दीदी ने, दुल्हन को तेल संजोया डाला। शादी के दिन जो तेल दुल्हन को डाला जाता है, उससे विशेष धर्म होता है। दुल्हन के मां–बापू ने तेल, संजाया डाला, आज के दिन तेल डालने से धर्म होता है।

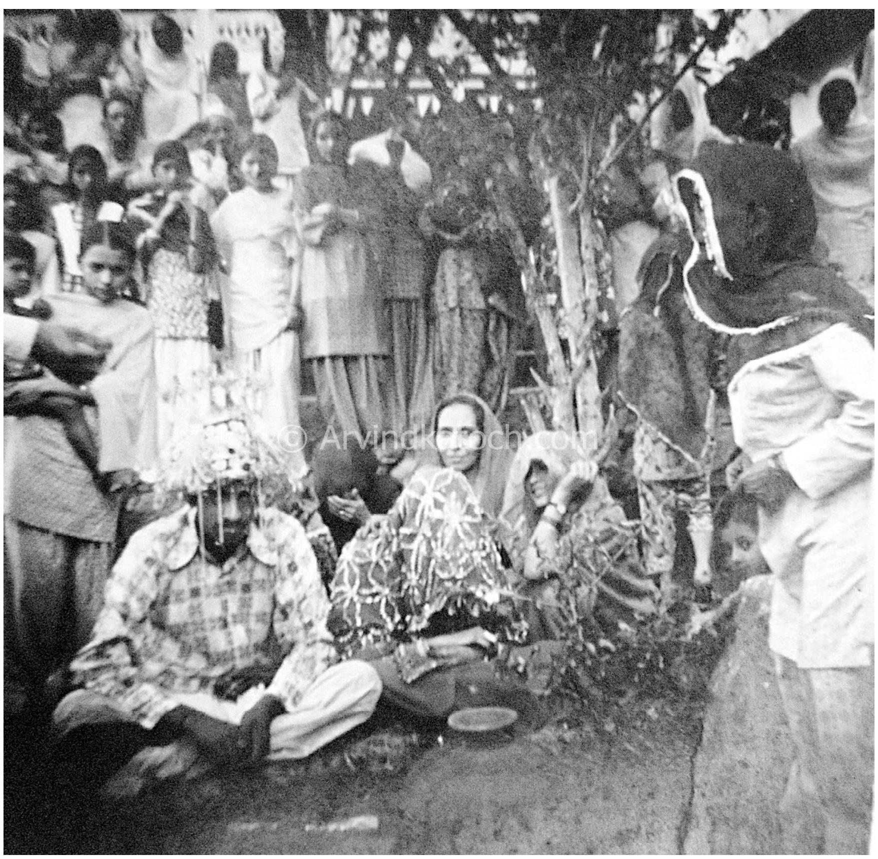

दुल्हन के स्नान के लिए पानी लाने में गाया जाने वाला गीत :

''चल मेरे स्वामी आज जला के
दर्शन जाइए
हे रामा–रामा रामा दी आइए।
जगदीश पारसन चल मेरे
स्वामिया आज जला के दर्शन
जाणा
वारे गंगा कि पारे जमूना, मंजे
से बदरी किंदारे।''

व्याख्या : उपरोक्त पंक्तियों में कहा गया है कि चली मेरे स्वामी आज हम

जल के दर्शन के लिए जाएंगे। हम इसमें पत्नियां अपने पतियों को जल लाने का आह्वान करती है और जगदीश यानी प्रभु को साथ रहने का आग्रह करती हैं। वे कहते हैं कि एक और गंगा नदी, व दूसरी ओर यमुना नदी और बीच में बद्रीनाथ धाम का किनारा, जहां से जल लाया।

दुल्हन को स्नान करवाते हुए गाए जाने वाले गीत :

किदी बेहुदे। पतरडे मामा किदी दे हुदे मसरबे
नुहाइए। सुइ ने दे हुदे पतरडे मामा, मामा चांदी दे
मसरबे नुहाइए। धर्मी हुदे लाड़ी दे मामा अंगड़े,
गंगा नुहाइए, युग–युग जियो लाड़ी दे मामा अंगड़े
गंगा नुहाइए।

व्याख्या : मामा पत्नी बैठने के, लिए स्टूल की तरह दिखने वाली चीज, किस चीज के लिए होते हैं? किस–किस चीज से बने लोटे स्नान करवाया। मामा सोने के होते हैं। पटड़े मामा चांदी के लोटे से स्नान करवाया। दुल्हन के मामा बहुत धर्मी होते हैं। जिन्होंने आंगन में गंगा के स्नान करवाया। दुल्हन के मामा युग–युग जिए जिन्होंने आं– आंगन में गंगा से दुल्हन को स्नान करवाया।

कन्यादान के समय गाया जाने वाला गीत :

धर्मों हूंदे लाड़ी दे मामा बापू जी,
हे मंगदा कन्यादान हो रहा सईना जो देणा धूप
दुपोत।
श्री कृष्ण जो देणा कन्यादान,
होरा दाना सब रीति रे विधि से विधि हुंदा
कन्यादान।
हे मांगदा शंखडू दान दूधे भरे, दुनडू
नीरे भरे शंखडू दाना।''

व्याख्या : दुल्हन के मां–बाप कन्या दान करके बहुत धर्म कमाते हैं, दूल्हा उनका कन्यादान ग्रहण करता है, अन्य रिश्तेदारों को देना, देना धूप–धूपोत दूल्हे को देते हैं कन्यादान, अन्य सभी दान रीति के होते हैं, परंतु कन्यादान हमेशा विधि निमंत्रण के अनुसार होता है। कन्यादान के समय दूल्हे को दूध से भरे धोने व पानी से भरे शंख का भी दान करते हैं।

विदाई के समय गाया जाने वाला गीत :

''भोज़ा बांधीए नऊंई लाड़ीए सदा सुहागन होए,
लाड़ा जी जौऊए लखा वर्ष लाड़ी सुहागण होए,
सूही कैरे नऊंई लाड़ीए सदा सुहागन होए।''

व्याख्या : नई दुल्हन को रिश्तेदार आशीर्वाद देते है दुल्हन हमेशा सुहागन रहे, दुल्हन का पति लाखों वर्ष जिए, दुल्हन हमेशा सुहागन रहे, नई दुल्हन हमेशा सुहागन रहना।

शादी होने के बाद देवते के पास जाते समय गाया जाने वाला गीत :

''चल मेरे स्वामीआं आसा देवा रे दरस जाइए,
हे रामा रामा रामेदि आईए, चल मेरे स्वामीआं
आसां देवा रे दर्शन जाइएं।''

व्याख्या : पत्नी अपने पति से कहती है चलो सब मेरे स्वामी हम देवता के दर्शन के लिए जाते हैं।

– किरण बेदी, बीए तृतीय वर्ष

NSS Activities

Ek Ped Maa Ke Naam-Tree Plantation

Pre-RD Selection Camp

NSS Day

District Mandi
National Service Scheme
Government College Panarsa
Govt. College Panarsa
Panarsa
Session 2025-26
Govt. College
District Mandi (H.P.)

Seven Days NSS Camp

NSS Regular Activities

Cricket Team of College Participated in Great Himalayan National Park Premier League

विविध

भविष्य का मेरा सपना

हर व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा सपना होता है जो उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। मेरे जीवन का सबसे बड़ा और प्रिय सपना है एक आदर्श टीचर बनना। ये सपना अचानक नहीं आया बल्कि मेरे बचपन की यादों और अनुभवों से धीरे–धीरे आकर लेता गया। मुझे आज भी याद है जब मैं छोटी थी और स्कूल की कक्षा में पहली बेंच पर बैठकर अपनी अध्यापिका को ध्यान से सुना करती थी। उनका पढ़ाने का तरीका इतना सरल और प्रभावशाली था कि कठिन से कठिन पाठ भी आसानी से समझ में आता था। वे केवल किताबों का ज्ञान ही नहीं देती थी बल्कि हमें अनुशासन, ईमानदारी और आत्मविश्वास का महत्व भी समझाती थी। उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार ने मेरे मन में शिक्षक के प्रति सम्मान और प्रेरणा की भावना जगा दी। घर आकर मैं अक्सर अपने छोटे भाई बहनों और सहेलियों को इकट्ठा कर स्कूल–स्कूल खेला करती थी। हाथ में कॉपी या पेन लेकर उन्हें पढ़ाने का अभिनय करती और खुद को एक सच्ची अध्यापिका की तरह महसूस करती। उस समय ये केवल एक खेल था लेकिन धीरे–धीरे ये खेल मेरे जीवन का लक्ष्य बन गया। मेरे लिए टीचर बनना केवल एक पेशा नहीं बल्कि समाज सेवा का एक माध्यम है। मैं मानती हूँ कि शिक्षक ही वह व्यक्ति होता है जो बच्चों के भविष्य की नींव मजबूत करता है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानकर उसे सही दिशा देता है। मैं चाहती हूँ कि जब मैं टीचर बनूँ तो मेरी कक्षा में ऐसा वातावरण हो जहां पर बच्चा बिना डर के अपने विचार रख सके, प्रश्न पूछ सके और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सके। मैं अपने विद्यार्थियों को केवल परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए नहीं बल्कि जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना चाहती हूँ। मैं उन्हें सिखाना चाहती हूँ कि असफलता अंत नहीं बल्कि सफलता की ओर एक कदम है। मैं चाहती हूँ कि अच्छे नागरिक बनें, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें और अपने देश का नाम रोशन करें। कभी–कभी जब मैं अपने भविष्य की कल्पना करती हूँ तो खुद को एक कक्षा में खड़ा देखती हूँ। बोर्ड पर लिखते हुए बच्चों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए और उनकी जिज्ञासा को शांत करते हुए वह .श्य मेरे मन में उत्साह और गर्व की भावना भर देता है। मुझे विश्वास है कि कठिन परिश्रम, लगन और निरंतर प्रयास से मैं अपने इस सपने को अवश्य पूरा करूंगी। अंततः टीचर बनना मेरे लिए केवल एक करियर नहीं बल्कि एक उद्देश्य है। ज्ञान का दीप जलाकर दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाने का उद्देश्य, यही सपना मुझे हर दिन मेहनत करने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

कनिका ठाकुर कक्षा बीए द्वितीय वर्ष

ऑनलाइन कक्षाओं की खट्टी मीठी यादें

ऑनलाइन कक्षाओं का बोध और वह यादें मैं आज तक नहीं भूली हूं और शायद ना ही कभी भूल पाऊंगी 25 मार्च, 2020 को देश भर में लॉकडाउन लगा था, उसकी वजह एक संक्रमण था   जिसे कोरोना वायरस का नाम दिया गया था। यह भयानक माहमारी चीन से फैली थी जो कि एक व्यक्ति से दूर व्यक्ति में संक्रमण से फैल रही थी जिसकी वजह से सार्वजनिक स्थानों पर जाने के लिए रोक लगा दी गई अर्थात लॉकडाउन लगा दिया गया मैं स्कूल में दसवीं कक्षा में पढ़ती थी सार्वजनिक स्थान पर न जाने की वजह से सरकार द्वारा बच्चों के लिए घर की घर में ही पढ़ाई का प्रबंध करना पड़ा जिसका माध्यम फोन था हमें फोन के माध्यम से पढ़ाई करने का अवसर प्रदान हुआ उस समय मुझे लगता था कि अब हम ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से ही अपने से मिल पाएंगे ऑनलाइन कक्षाओं के दौर सभी के लिए यादगार बना । कुछ खट्टी मीठी यादें बनाई जैसे सबसे पहले तो अपने दोस्तों से मिलने का मौका मिला बच्चे कई बार म्यूट करके बोल रहे होते थे और सर से बोलते थे सर आपकी आवाज नहीं आ रही मेरे कुछ दोस्त और मैं माइक म्यूट करके चौटिंग करते थे पर कभी माइक अनम्यूट होने के कारण हमें सर से डांट भी पड़ती थी परंतु सभी के साथ ऐसा ही होता था इसे हम सभी हंसी मजाक में ही लेते थे कभी किसी के घर के अन्य सदस्य वीडियो कॉल पर दिख जाते थे जिससे हंसी मजाक का माहौल बन जाता था मैं इन यादों को कभी नहीं भूल सकती डांट के साथ सीखने के मौके प्राप्त हुए।

– परीक्षा शर्मा, बीए तृतीय वर्ष

अगर पेड़ बोल सकते : उनकी जवानी, दुनिया की कहानी

यदि पेड़ों को बोलने की शक्ति मिल जाए तो वे हमें दुनिया की ऐसी कहानी सुनाएंगे जिसे सुनकर मानव को अपने कर्मों पर विचार करना पड़ेगा पेड़ इस धरती के सबसे पुराने साक्षी है उन्होंने सभ्यता का उदय और पतन देखा है वे चुपचाप खड़े रहकर समय के हर बदलाव को महसूस करते रहे हैं। पेड़ बताते हैं कि कभी पृथ्वी हरी भरी थी नदियां स्वच्छ बहती थी। हवा शुद्ध थी और प्रा.तिक संतुलन में थी। मनुष्य और संस्.ति के बीच गहरा संबंध था। लोग पेड़ों की छाया में विश्राम करते थे और उन्हें देव तुल्य मानते थे। परंतु समय के साथ मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए प्र.ति का शोषण करना शुरू कर दिया। लेकिन समय बदलता, विकास के नाम पर जंगल काटने लगे। हमारी जड़ें उखाड़ी गई। हमारी डालियां जलाई गई। पेड़ कहते हैं जब हमें काटा जाता है तो केवल लकड़ियां नहीं गिरती, बल्कि पृथ्वी की सांसे भी रुकती हैं। हमारे बिना बारिश का संतुलन भी बिगड़ता है। तापमान बढ़ता है और जीव जंतु बेघर हो जाते हैं।

पेड़ मनुष्य से प्रश्न करते हैं, क्या तुम्हें याद है कि हम तुम्हारे सच्चे मित्र हैं? तुम्हारी हर सांस को हमारा योगदान है। वे यह भी कहते हैं कि अभी भी समय है। अगर आज पेड़ लगाए जाएं, जंगल बचाए जाएं और प्र.ति का सम्मान किया जाए, तो भविष्य सुरक्षित हो सकता है। अगर पेड़ बोल सकते हैं, तो वह कहते हैं, मनुष्य ने विकास के नाम पर जंगलों को काटा, नदियों को प्रदूषित किया और वातावरण को विषैला बना दिया। पेड़ों ने मनुष्य को हमेशा फल, फूल, लकड़ी और प्राण वायु दी। लेकिन बदले में उन्हें विनाश ही मिला। आज इसी का परिणाम है कि धरती पर ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और प्रा.तिक आपदाएं बढ़ती जा रही हैं। फिर पेड़ मनुष्य से यह प्रश्न करते क्या यही विकास है जिसमें जीवन को बचाने ,वाले ही नष्ट कर दिए जाएं? क्या प्र.ति वही है जिससे आने वाली पीढ़ियों का भविष्य संकट में पड़ जाए? पेड़ों की जुबानी यह कहती है, हमें चेतावनी देती है कि यदि अभी भी नहीं संभले, तो प्र.ति हमें कभी माफ नहीं करेगी। यदि पेड़ बोल सकते हैं, तो वे हमसे यही आग्रह करते हैं कि हम प्र.ति के साथ फिर से प्रेम और सम्मान का रिश्ता बनाएं। अधिक से अधिक पेड़ लगाएं, पर्यावरण की रक्षा करें और पृथ्वी को सुरक्षित करें। तभी दुनिया की कहानी विनाश की नहीं, बल्कि संरक्षण और जीवन की कहानी बनेगी। अंत में पेड़ आशा के स्वर में कहते हैं, हम बदले में कुछ नहीं मांगते,केवल जीने का अधिकार चाहते हैं। हमें बचाओ क्योंकि हमें बचाना ही स्वयं को बचाना है।

– तमन्ना, बीए तृतीय वर्ष

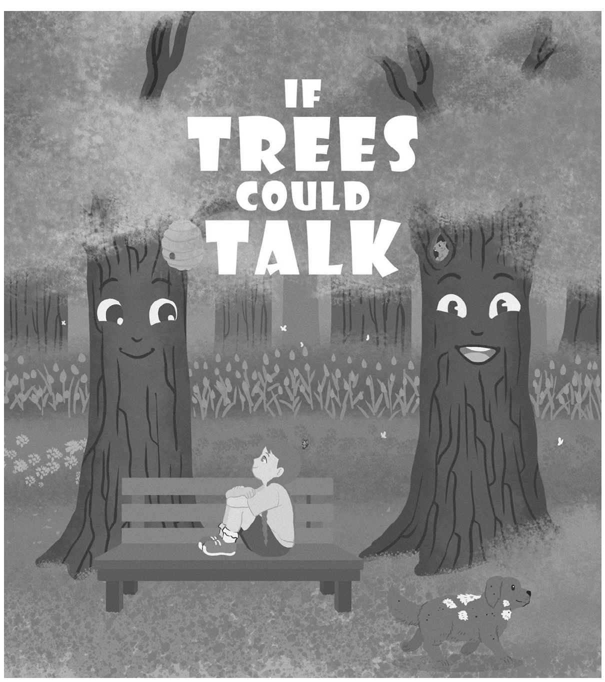

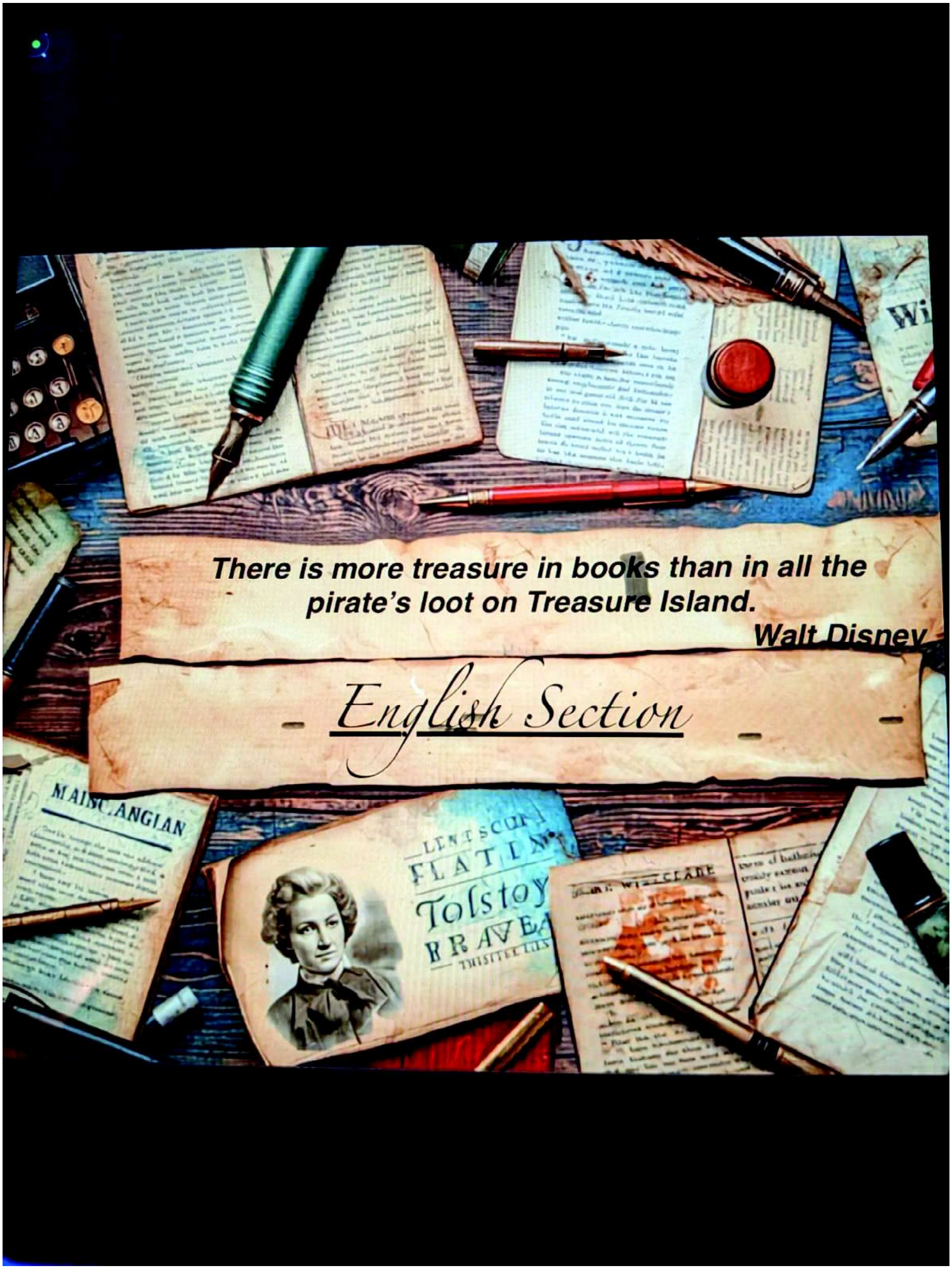
There is more treasure in books than in all the pirate's loot on Treasure Island.
Walt Disney
English Section
Tolstoy

Editor's Message

Dr. Leena Vaidya
Staff Editor

Aryavart Thakur
Student Editor

Dear readers

The English section of this year's magazine, though modest in number, reflects creativity rooted in observation, imagination, and lived experience, making the pieces simple, relatable, and meaningful.

The section includes reflections on nature, memories of the first day in college, travel experiences, and imaginative pieces where students place themselves in the position of various elements of their surroundings, imagining what they might feel or think in their present condition.

Readers may notice a few recurring themes and topics throughout the section. This has been intentional, as the idea was to observe how different individuals think and express themselves differently about the same experience or subject. The uniqueness of each perspective gives these writings their authenticity and charm.

I sincerely appreciate the efforts of all the student contributors who shared their thoughts with openness and imagination. I hope this platform continues to encourage them to think creatively and express themselves with confidence.

Dr. Leena Vaidya
Staff Editor

I am pleased to present the English section of our college magazine, Arjikiya. This section highlights the creativity, knowledge, and enthusiasm of students who have contributed with dedication. Our goal is to offer a platform for students to express their thoughts and imagination through language and literature.

The articles, reviews, and creative pieces in this edition showcase the talent and effort of our student community. Each contribution offers a unique voice and perspective, making this section engaging and meaningful.

As a student editor, it has been a wonderful experience to work with such thoughtful and inspiring submissions. I would like to sincerely thank all the contributors and the teachers whose guidance and support made this publication possible.

I hope the readers will enjoy this English section of Arjikiya and find it both informative and inspiring.

Aryavart Thakur
BA, Final English

A Journey Beyond the Terrain: My Trek to Suka Saur

Travel feels truly special when you leave behind everyday comforts and fully immerse yourself in the experience. Trekking does this better than most things. It pushes your body to its limits, quiets your mind with challenges, and opens up space for real reflection and a sense of connection with something bigger. My trek to Suka Saur, a sacred lake dedicated to Lord Shesh Nag near Sachani village in Kullu district, was one of those rare journeys. It beautifully blended breathtaking natural beauty, deep spiritual energy, warm cultural encounters, and quiet personal moments, I'll carry forever. The name "Suka Saur" has an interesting story from ancient times. "Saur" simply means lake. Long ago, the lake was completely dry, so people called it "Dry Lake," and even after water returned over the years, the name stayed. That little piece of history made the place feel even more special when we finally reached it. We started very early from Panarsa bus stop, excited and a bit sleepy, piling into a cab for the long, twisty mountain drive. The road wound through Bajaura, slowly leaving behind noisy highways and crowded areas. Gradually, the views opened up; greener hills, quieter paths, thick forests, and wide valleys amazed everyone. After several hours of bumpy riding, we arrived at peaceful Sachani village. Before setting off on foot, we stopped at a sacred spring in the village. The water was crystal clear, and locals treated it with deep respect. We filled our bottles slowly and carefully, feeling grateful that this clean water would sustain us through the tough journey ahead. With backpacks strapped on tight, we began the real trek, stepping onto a narrow trail that disappeared right into the heart of the forest. The path turned steep quickly. Towering deodar trees stood like silent sentinels on both sides, their thick trunks and heavy branches casting a cool shade. The mountain air felt fresh and crisp, and the soft sound of wind moving through the leaves brought a strange calm even as our legs ached from the climb. Along the way, we met villagers from Sahani. They greeted us with warm smiles, offering hot tea and simple homemade food, without expecting anything in return. Their warmth gave us not just energy for our bodies but a real lift to our spirits, a reminder of how kind people can be in these remote places. After hours of steady walking, we reached Chhota Saur, the smaller lake that comes before the main destination. The place was beautiful, with mules grazing, and Gaddi people going about their day with their flocks. Watching their way of life, so deeply tied to the mountains and seasons, felt humbling. It made me think about how connected some people still are to the land in ways we city-dwellers often forget. From there, the final stretch to Suka Saur tested us. Fatigue was setting in, muscles aching, but the excitement of reaching the sacred lake kept our feet moving. When we finally arrived, the sight took my breath away: calm, mirror-like water reflecting the sky and surrounding peaks, the small temple of Lord Shesh Nag standing quietly beside it. The silence was profound; the air was pure, filling us with a deep sense of peace, reverence, and something almost sacred. As evening fell, we set up our tent on a flat patch behind the temple. We cooked a basic meal from the groceries we carried, lit a small campfire for warmth, and to keep wild animals at a distance. Sitting around the fire, sharing stories and listening to the night sounds, crickets, distant wind, and the gentle lap of lake water created a cozy, secure feeling. We slept peacefully at night under the stars, and that peaceful evening became one of the most unforgettable parts of the entire trek. This journey reminded me that the best experiences often come from pushing past comfort, embracing the unknown, and letting nature and people along the way teach you something new.

-Rohan Negi, BA-I Year

IF I COULD SPEAK

Seasons change their clothes on me,
Spring whispers, summer burns,
Monsoon rinses my tired leaves,
Winter listens without reply.
I hear the world,
Yet the world never asks what I dream.
My branches ache with the stories,
My root holds secrets of the earth.
If I could move,
I would walk with the river,
Lean over oceans,
Learn how mountains breathe.
When darkness loosens the town
People lean on me without speaking.
Their worries rest longer than their hands.
I'm not given confessions,
Only the pause before courage,
And the relief after deciding on nothing.
But I stay,
Offering shade,
Offering silence,
Offering affection without demand.
Time does not pass through me; it circles,
Each year that arrives already reminds me,
And leaves slightly lighter.
I'm not waiting for anything,
I'm practicing remaining.
Perhaps movement isn't travel,
Perhaps it is becoming.
A shelter in someone else's journey
And so, I stand,
Speaking only in leaves,
Hoping one day
Someone learns to listen.
P.S.-PEEPAL TREE

- Aryavart Thakur, BA-III Year

AUTOBIOGRAPHY OF AN OLD BOOK

I am an old book resting quietly on the dusty shelf of a small library.
My pages have turned yellow with age, and my cover is torn at the corners,
But my soul is still alive with words and wisdom.
I was born many years ago in a printing press. Fresh ink flowed through my pages, and I smelled of new paper and hope.
Soon, I was wrapped neatly and sent to a bookstore, where curious eyes glanced at me every day.
One fine morning, a student approached me with excitement, believing I would help shape his future.
Over the years, many hands touched me.
Some read me with interest,
underlining important lines.
Others turned my pages carelessly.
I travelled from classrooms to homes, from busy days to late-night studies, and moments of joy when teaching was finally understood.
Time passed, and newer books replaced me.
I was no longer open every day.
Dust settled on my cover,
and silence became my companion.
Yet I do not feel useless. Inside me live stories, lessons, and ideas that have never faded.
Even today, when someone opens my pages,
I feel alive again.
I whisper knowledge to those who listen.
Though I am old and worn out, I proudly say that I have served humanity well.
Even today, when someone opens my pages,
I feel alive again.
As long as knowledge is valued, old books like me will never truly die.

- Jahid Akhtar, BA-III Year

AUTOBIOGRAPHY of an OLD BOOK

With time, what once matters a lot, slowly becomes old; we can say it is no longer useful. People's needs change, thoughts change. I have seen this change very closely because I am an old book. I wasn't always lying forgotten in this dark corner of the library storeroom, covered with dust. I want to share what it feels like to be ignored by everyone who walks past me. There was a time when I lived proudly on the front shelf of the library. Students used to pick me up almost every day. Their fingers would flip my pages with excitement. People simply enjoyed reading me back then. I felt alive, useful, and needed. It was the time when reading a book meant peace. People believed knowledge was something to be felt, experienced, and understood by slowly reading every line and every idea. But slowly, the world changed.

New books arrived; shiny, colourful, updated versions. Students preferred them. Teachers recommended them. One day, a librarian lifted me and said, "This is an old edition,no one uses it now. Keep it in the storeroom." I was placed in a dusty corner of the library storeroom. I often ask myself : Why did people stop reading me? What changed? Was my knowledge not enough? Was I not worthy anymore?

The answer hits me every time I hear students laughing, talking, scrolling: Today's generation doesn't read books; they watch screens, mobile apps, PDFs, and online summaries. Why would anyone spend hours with a book when they can watch a few-second video and feel instantly entertained? Why slowly turn pages when they can scroll endlessly and get instant dopamine? Social media has taken away their patience. Instant results have taken away their curiosity. Fast scrolling has taken away their ability to sit with a book and just read patiently. Every time I hear things like "I'll check Google" or "PDF download kar liya," a small piece of me breaks. But even though I may be old, my words still carry meaning.

My cover may be dusty, but my pages still hold stories. I still have more wisdom than any short video, any reel, or any quick summary. No one opens me anymore, not even touches me. And that literally hurts. But even in this loneliness, I don't lose hope. Every night, before the librarian turns off the lights, I dream that one day someone will walk into this storeroom, notice me lying in the corner, pick me up, dust off my cover, and whisper:

"Let's read you. "That moment will be enough for me. Until that time, I lie here, not angry, not jealous, not broken, just waiting. Because old books like me may lose their place on the shelf, but we never lose our hope. Time has changed, people have changed, and their needs have changed too. But the value of knowledge never changes. I am waiting for someone who knows that and remembers that.

- Mukesh Thakur, BA-III Year

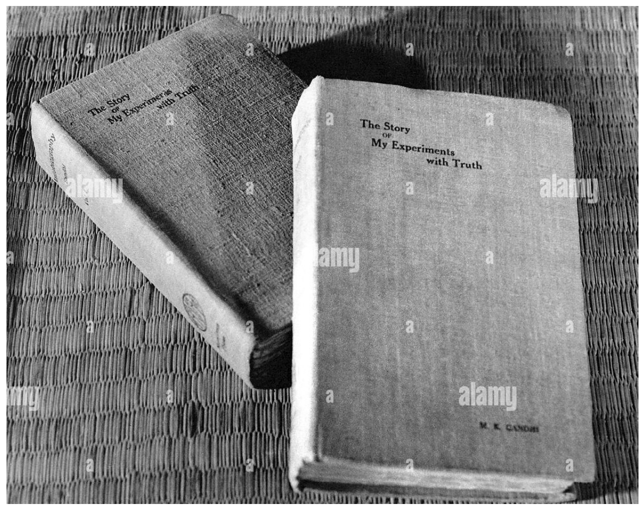

A Rose in a Garden

A rose is often used as a symbol of love and care. When we see a beautiful rose in a garden, we feel like plucking it because we like it. However, if we pluck the rose, it stays fresh for a short time and then it wilts away. But if we leave the rose in the garden and take care of it, it continues to grow and bloom. This teaches us an important lesson. Sometimes when we like something or someone we think we must possess it. In reality, true care means protecting and respecting it rather than trying to own it. Just like the rose looks most beautiful in the garden, many things in life are better when they are appreciated and cared for instead of being taken away.

– Pooja Thakur, BA-II Year

MY FIRST DAY AT COLLEGE : A MEMORABLE DAY

The first day of college will remain etched in my heart forever. It marked the beginning of a new journey, one filled with dreams, hopes, and a quiet fear of the unknown. Even today, I remember that day clearly, for it was one of the most memorable moments of my life.

That morning, my heart was beating fast, and my mind was crowded with questions. What kind of teachers would I meet? Would they be strict or understanding? Would I make new friends? Most importantly, would I be able to adjust to this completely new environment? These thoughts accompanied me as I stepped onto the college campus.

When I reached the campus, I felt extremely nervous seeing so many unfamiliar faces around me. Everyone seemed different in their own way. Some students walked confidently in groups, talking and laughing, while others like me looked confused and anxious. The diversity of personalities and styles made the atmosphere both exciting and overwhelming.

One of the most special moments of the day was meeting my new classmates. At first, everyone was quiet and hesitant, but gradually we began to open up. We shared our names, backgrounds, and dreams, and slowly a sense of comfort began to grow among us.

Later, I attended my first class, which was Political Science, my chosen major. Our teacher introduced himself warmly and asked each student to introduce themselves and explain why they had chosen the subject. Many students spoke confidently, almost imitating one another. When it was my turn, I felt extremely nervous. Still, I gathered courage and said that I was interested in learning about the Indian Constitution and wanted to understand it better.

Suddenly, the teacher asked me a question : "What is the Indian Constitution?" My mind went completely blank. I could not find the words to answer. My entire body began to tremble with fear. Noticing my discomfort, the teacher kindly asked me to sit down and spoke to me gently. His calm voice eased my anxiety, and the girl sitting beside me softly comforted me. Although the moment was embarrassing, it became an important lesson for me.

After that incident, the teacher explained that college life is not only about books and examinations but also about learning values, building confidence, and developing responsibility. His words deeply moved me and helped me relax. By the end of the day, my nervousness had transformed into happiness. The fear I had felt in the morning had completely disappeared.

I had made new friends, met kind and supportive teachers, and experienced a new academic environment. When I returned home, I shared my experience with my family and realized that my first day at college was not just the beginning of my studies, but also the beginning of my personal growth. It was truly a memorable day filled with hope, learning, and new beginnings.

- Lalita Thakur, BA-III Year

MY JOURNEY FROM VILLAGE TO COLLEGE

I was born in Sudhrani, a small and peaceful village. The journey from the simple life of my village to the fast-paced environment of college has been one of the most transformative experiences in my life.

This is a reflection on how moving from the quiet lanes of Sudhrani to the busy and diverse world of college changed me as a person. It is the story of new beginnings, hope, growth, and challenges. Life in the village was peaceful and pure.

I grew up in a loving family that taught me the values of hard work, respect, and honesty. My school in Sudhrani was simple, with no fancy classrooms, but it was where I developed a strong desire to learn. Our dedicated teachers encouraged us to dream big, even though we came from a small village. In those early years, I learned discipline, patience, and the importance of education in shaping one's character.

The day I left my village to join college was one of the most emotional days of my life. I was excited, but at the same time, I felt nervous about stepping into a new world. My first day in college was filled with mixed feelings. I was shy and unsure about adjusting to new people and new surroundings. With time, I became more confident and independent. I started making friends from different places.

College gave me exposure to new ideas, new people, and new opportunities. I developed new skills, explored my interests, and discovered personal strength. This journey helped me grow not just academically but also personally. It also highlighted the value of attending seminars, workshops, and events. I realized the importance of hard work, discipline, and believing in myself.

College life is more about independence and responsibility. School and college feel like two different worlds. In school, life was structured-we had a fixed timetable, teachers reminded us about homework, uniforms, attendance, and rules that controlled almost everything. College, on the other hand, introduces a new level of freedom. No one forces you to attend classes, and professors treat us like adults. In college, we choose our own path.

My journey from village life to college life has been meaningful and transformative. Sudhrani gave me roots, and college gave me wings. This journey taught me that stepping out of one's comfort zone is the first step toward growth and success. It is a chapter of my life that I will always cherish.

- Priyanka Duggal, BA

My first day at college

First Day at College is like a dream world for every student, a special time filled with fun, freedom, new friends, and the start of a good career. It is a time when we create sweet memories, each one having its own magic and charm. College life has a beauty of its own. Leaving school and stepping into college feels like a big, exciting new step. I still clearly remember my first day at college.

It was sure to be unforgettable, a mix of so many feelings, full of excitement mixed with nervousness. Everything looked so huge and completely new to me. The moment I stepped onto the campus, everything felt fresh and strange. Walking into a new classroom, meeting new people, and looking around the big campus felt a little too much at first, but at the same time, it was really thrilling. It was truly a day of fresh starts. I got the chance to begin again, make new friends, and learn things that will help shape my future.

The large buildings, busy corridors, and lively groups of students everywhere created an atmosphere full of energy and so many possibilities. As I walked into my classroom for the first time, I kept wondering about the professor, the subjects, and whether I would fit in with everyone. I met classmates who came from different places, each one with their own stories and dreams. The orientation session told us about college culture, rules, and all the opportunities, which made it easier to get used to this new place.

Even though there was some anxiety in the begning , the day left me with hope and excitement. Every talk and every moment from that first day built the base for my personal growth, independence, and success in studies later on. My first day of college was the most memorable day of my life, and I will never forget it.

– Riya

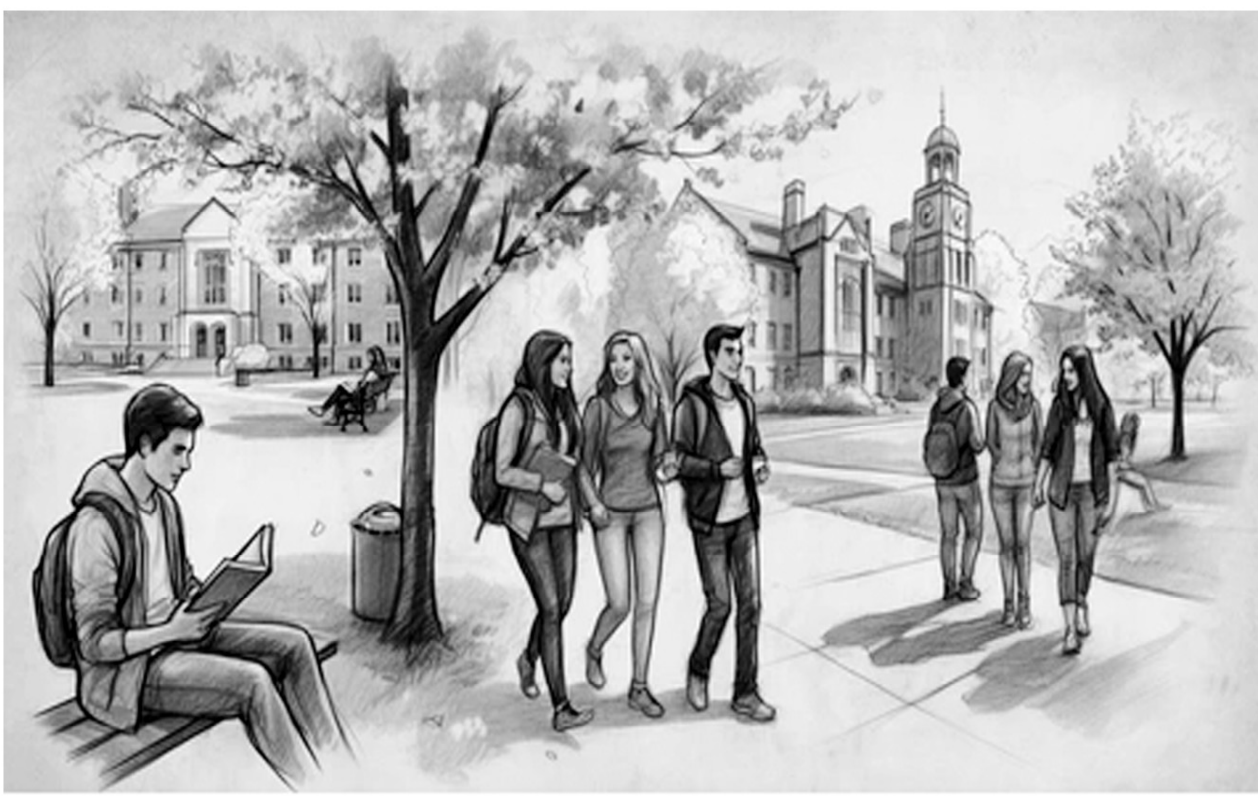

JOURNEY from VILLAGE to COLLEGE

Introduction :

The village of Mahi, located on the elevated terrain of Kulda, is characterized by its modest population of approximately 110 residents, spread over an area of around 4 km². This village is relatively secluded, offering a tranquil environment that is devoid of noise and pollution. The distance from Mahi to my college is nearly 8 kilometers. Notably, the village lacks established roads or alternative modes of transportation; thus, access to this serene locale necessitates a journey undertaken on foot.

The necessity of commuting from home to college mandates an early morning routine, allowing sufficient time to complete household responsibilities and arrive at the institution punctually. Traversing the meandering, narrow pathways of the village engenders a distinct sense of joy. The initial step upon this path elicits a profound feeling of liberation, as though all constraints have been dismantled. This newfound freedom not only permits me to walk unimpeded but also to run, thereby facilitating the pursuit of my aspirations. It appears that I have transcended the limitations imposed by societal expectations, rendering me impervious to obstacles that might hinder my journey. This inaugural step on the path symbolizes the first rung on

the ladder toward my ambitions and eventual success.

However, the daily traversal of such an extensive distance presents significant challenges. The strain on my leg muscles and the resultant fatigue are palpable, often extending beyond my feet to encompass my entire body. Despite these physical demands, a sense of excitement persists within me.

This enthusiasm is fuelled by the desire to realize my dreams and the opportunity to engage in novel experiences or acquire new knowledge. Despite the considerable distance between my residence and the college, I undertake the journey on foot each day, driven by my commitment to fulfil my domestic obligations while simultaneously pursuing my aspirations. Consequently, I have made a conscious decision to embark on this daily pilgrimage from my tranquil village, departing each morning with the conviction that success awaits me at my destination. I remind myself daily that each challenge I face will ultimately guide me toward my goals.

As I set out in the morning, the village exudes an atmosphere of tranquillity, accompanied by a refreshing breeze. The sight of the sun's golden rays breaking through the horizon inspires me as I make my way to college. Along my route, I observe villagers engaged in agricultural activities and their customary routines, who greet me each morning with warm smiles and the local phrase, "Chal Padi."

My path is adorned with fields, streams, and pine trees, each contributing to the scenic landscape. I pass by a Jio tower, whose summit I gaze upon daily, contemplating the aspiration that one day I will ascend to its peak and experience the view from such a height. This journey represents more than a mere physical excursion; it serves as an opportunity for introspection. I find myself contemplating the nature of my future and endeavouring to mentally prepare for the forthcoming challenges while reflecting on my past experiences, including cherished memories and friendships. I ponder the extent of the differences between my earlier years and my present circumstances.

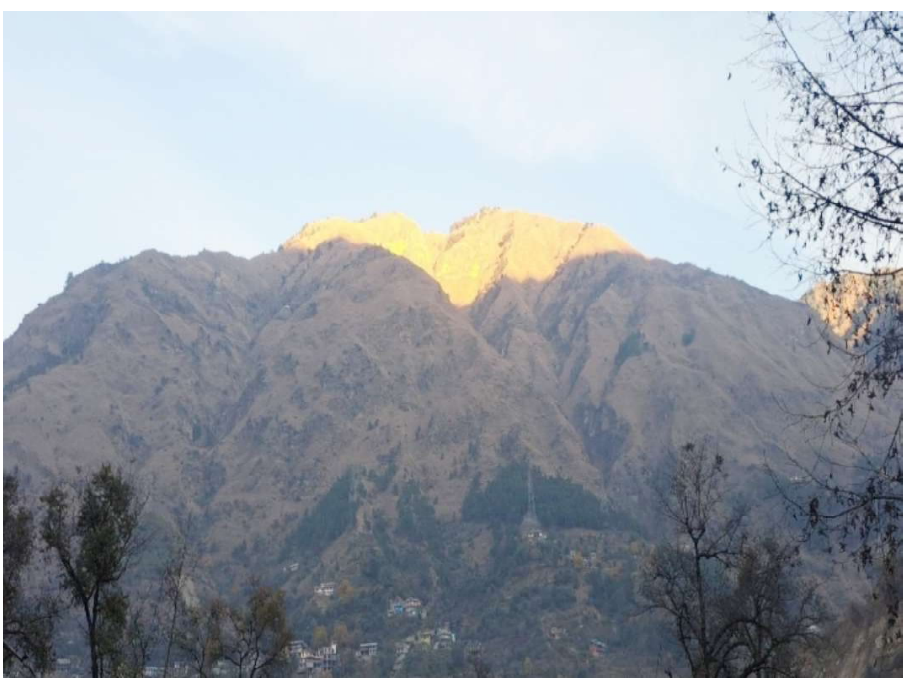

In my youth, my school attendance was primarily motivated by the desire for play and enjoyment, devoid of any concerns regarding

the future or the burdens of responsibility. In contrast, my current enrolment in college is driven by a commitment to realizing my aspirations and constructing a viable future. The locale of Panarsa, where my college is situated, markedly contrasts with my home village. While my village is characterized by tranquillity and natural beauty, featuring fields and streams, the environment shifts dramatically upon crossing the Byas River. The opposite bank is bustling with numerous shops, residential areas, paved roads, and the omnipresence of vehicular noise, presenting a starkly different atmosphere. This area offers a plethora of amenities and facilities, illustrating the dichotomy between the two settings.

The structure in question comprises four to five stories. However, the amenities provided within this building do not elicit the same level of joy that I experience in my village. Upon successfully navigating various obs-tacles, I arrive at the entrance of the college. This journey culminates in a fervent anticipation as I approach the threshold of my aspirations. Reaching the college gate instills a profound sense of relief, signifying the accomplishment of a significant milestone.

On my inaugural day at the college, I was greeted by a novel environment characterized by a shift in responsibilities; previously, elders undertook various tasks, whereas now, it is the younger generation that engages in these activities, including those of a technical nature. This marked my first encounter with independent technical work. As I reflect on this experience, I recognize that what once appeared insurmountable now seems entirely feasible.

To sum up, this journey imparts enduring life lessons. It cultivates self-confidence and patience, reinforcing the notion that challenges do not render me weaker but rather fortify my resilience. These obstacles represent the initial steps toward achieving success.

Rohani, BA-III Year

THE DUST BETWEEN MY PAGES

I am a resident of the bottom shelf, tucked in the darkest, dustiest corner of an old book shop. A thick layer of grey dust covers me like soft snow; no one ever wipes it off. The shop smells of old paper, faded ink, and forgotten rain. My cover, once a bright, beautiful red, is now brown and tired. The gold letters on my spine have peeled off, and you can barely make out the name that used to be there. I am just an old block of paper that nobody wants anymore. It was not always like this, being new was different. I remember the day I was made sharp with the smell of fresh ink and glue, my pages crisp and perfectly white. In the beginning, gentle hands held me. A man used to sit by the fire every night, turning my pages slowly. When he read my words, his heart beat faster. He laughed at the funny parts and cried at the sad ones. I felt important, treasured. I travelled with him on buses and slept in his bag. I still hold a secret from those days. Between two of my pages lies a dried purple flower, thin as tissue paper now, but still hidden there, safe inside me. Slowly, people stopped talking about me. I was packed into a box, pushed into a corner, and finally brought to this shop. The world outside must be different now. The people who come here talk very fast. They look at their phones, not at the shelves. My words are long and slow; the way I tell a story takes time, but people today are always in a hurry. They want things quick and easy. Sometimes the readers notice me, they pull me off the shelf; my spine cracks because it has been so long since I was opened. They read the first page, “Too boring,” they say, then shove me back, usually tight next to a shiny new book with bright colours. I feel small and dark beside it. Waiting in Silence, I am not angry, though. I am just quiet. I watch the customers buy other books. They don’t know that my words once made a woman cry with happiness. I hold deep thoughts and big dreams, but they stay locked inside my covers. I am like an old piece of furniture now, just part of the background. I did my job a long time ago. The ideas I gave to people are out in the world, even if they have forgotten where they came from. So, I wait. I stand tall on the bottom shelf. I keep my story safe, even if no one ever reads it again.

- Akhilesh Paul, BA-III Year

World AIDS Day

Campaign Against Drug Abuse

CSCA Function

CSCA Function

Best NSS Volunteer

Nisha
Best NSS Volunteer (Female)
2025-26

Dimple Kumar
Best NSS Volunteer (Male)
2025-26

Rally on Road Safety

Commerce
Section

Editorial

Dr. Manish Sood
Staff Editor

Priyanka Yadav
Student Editor

Dear Readers,

It is an absolute honor and privilege to welcome you to this latest edition of our college magazine ARIJIKYA. A college magazine is far more than just a collection of printed pages; it is a living mirror that reflects the vibrant creativity, passion, and spirit of our student community. It serves as a vital bridge, bringing the innovative ideas and untapped imagination of young minds into the spotlight. 'ARIJIKYA' is a shared platform that empowers students to express themselves freely across"diverse disciplines—whether it be the analytical world of Commerce and Science, the reflective depths of History, or the beautiful expressions of Hindi and English literature. In this particular section, we dive deep into the world of Commerce, Economics, and modern industry. Readers will find insightful perspectives on the changing dynamics of the Indian Economy, essential soft skills, leadership frameworks, and international business trends. We also explore the future of E-Commerce, emerging career paths, and the revolutionary role of Al in shaping today's corporate world. I sincerely hope you enjoy reading these articles as much as we enjoyed putting them together. More importantly, I hope the knowledge shared within these pages inspires you to think differently and apply these lessons in your daily life. Happy Reading! Warm regards,

Dr. Manish Sood
Staff Editor

Dear Readers,

"Every page of a magazine carries more than just words and pictures — it carries dreams, creativity, hard work, and memories. It gives students a voice to express their thoughts, talents, and experiences beyond classrooms and textbooks. "This magazine is a beautiful reflection of the enthusiasm and potential of our students. From academic achievements to cultural activities, from creative writing to inspiring ideas, every contribution showcases the spirit of our college. It reminds us that education is not only about learning facts but also about discovering ourselves and growing with confidence."Today's youth hold the power to shape the future with their ideas, determination, and creativity. Through this magazine, we celebrate that youthful energy and encourage every student to continue believing in their abilities and dreams."I would like to sincerely thank all the students, teachers, and contributors whose efforts made this edition possible. Your dedication and creativity have truly brought these pages to life."May this magazine inspire every reader to dream bigger, achieve greater goals, and create memories that will always be cherished."Happy Reading!"

Priyanka Yadav
Student Editor

Artificial Intelligence in Business

Artificial Intelligence (AI) has become one of the most important technologies in the modern business world. It refers to the use of computer systems and machines that can perform tasks which normally require human intelligence, such as learning, analysing data, solving problems and making decisions. With the rapid development of technology, AI is now widely used in different industries and businesses around the world.

One of the main reasons for the growth of AI in business is its ability to handle large amounts of data quickly and accurately. In today's digital age, businesses generate huge amounts of data every day. Artificial Intelligence helps companies analyse this data and find useful information from it. This helps managers and business owners make better decisions and improve their strategies.

Artificial Intelligence is also improving customer service in many businesses. Many companies now use AI-powered chatbots on their websites and mobile applications. These chatbots can answer customer questions, solve problems, and provide information instantly.

This not only saves time but also improves customer satisfaction. For example, many online shopping platforms use AI to recommend products to customers based on their previous searches and interests. Another important area where AI is used is marketing. Businesses use AI to understand customer behaviour and preferences. By analysing customer data, AI can help companies create better marketing strategies and targeted advertisements. This increases the chances of selling products and services successfully. AI also helps businesses understand market trends and predict future demand.

Artificial Intelligence is also very useful in financial services and banking. Banks use AI systems to detect fraud and suspicious activities. AI can quickly analyse thousands of transactions and identify unusual patterns that may indicate fraud. This improves the security of financial systems and protects customers from financial losses.

However, Artificial Intelligence also has some challenges such as job loss and data privacy issues. Therefore, it should be used carefully and responsibly.

In conclusion AI is changing the business world by improving efficiency and decision-making efficiency. It will play an important role in the future of business.

Giri Raj, B. Com 1st year

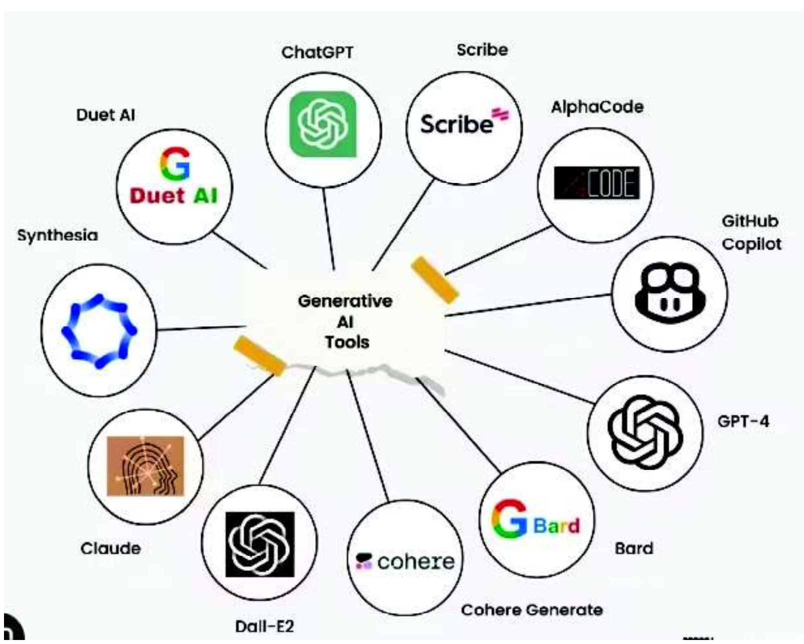

Start-up India: A New Era of Innovation and Entrepreneurship

India is changing rapidly. Earlier, most young people dreamed of getting a government job or working in a big company. But today, the mindset of the youth is transforming. Now, many young Indians want to become entrepreneurs and start their own businesses. To support this growing spirit, the Government of India launched an important initiative known as "Start-up India."

Start-up India is a flagship program introduced by the Government of India to encourage new businesses, innovation, and entrepreneurship. The main aim of this initiative is to create an environment where start-ups can grow easily and contribute to the nation's development.

The Start-up India initiative has several key objectives :

- To promote entrepreneurship among youth
- To encourage innovation and new ideas
- To provide support for new businesses
- To create employment opportunities
- To strengthen the Indian economy

Start-up India efforts offer many benefits to new entrepreneurs, such as :

- Easy registration and legal support
- Tax benefits for eligible start-ups
- Funding support through government schemes
- Mentorship and guidance from experts
- Opportunities for networking and growth

Start-ups play a very important role in the growth of a country. They introduce new products and services, improve technology, and help in solving real-life problems. Start-up India helps young entrepreneurs turn their ideas into successful businesses. It also helps in reducing unemployment by creating new jobs.

Start-up India is a powerful step toward building a strong and self-reliant India. It motivates young minds to innovate, take risks, and create something new. With the right support and hard work, start-up India can lead India toward a brighter and more successful future.

By – Priyanka, B.com 3rd year

Globalisation and Indian Economy

Globalisation means the increasing connection of the Indian economy with the world economy through trade, investment, technology and communication.

In India, this process started mainly after the economic reforms of 1991 and has become stronger in recent years due to digitization and global trade agreements.

Today, globalisation has helped India grow in sectors such as information technology, pharmaceuticals, automobiles, startup and e-commerce. Indian companies now provide services to many foreign countries, and foreign companies are investing in India, creating employment opportunities. Because of globalisation, Indian consumers can access international brands, online services and better-quality products at reasonable prices.

Modern trends like digital payments, online shopping, remote work and artificial intelligence show how closely India is connected to the global economy today. However, globalisation also brings challenges such as rising competition for small industries, dependence on foreign markets, and inequality between skilled and unskilled workers. Recent global events like economic slowdowns and geopolitical tensions also affect India due to its global links. Overall, globalisation has transformed the Indian economy by promoting growth, technology, and international trade, and in the present time, India aims to balance global integration with self-reliance through initiatives like "Make in India" and "Atmanirbhar Bharat."

Manisha
B.Com 1st Year

Startup Youth of India

Today, the evolution in India has brought a significant change in the mindset of the younger generation. In the current scenario, youth has developed a stronger sense of autonomy and a desire for space to explore their potential. All these factors have led to the establishment of a startup culture in India.

As India is transforming into a digital economy, the availability of a wide range of resources and simple access to the internet has made the country's youth more logical and creative thinkers. The younger generation is using online platforms to run their startups. In India, various types of online platforms are available such as Amazon, Flipkart, etc. Today's youth is more innovative than we imagine, utilizing social media platforms like Instagram, YouTube, Facebook, etc., for their startups. The growth of all startups encourages the youth to continue facing emerging challenges. Creative future startups that will be able to capture the market can be AI startups like Tech Startups. Some successful startups like CRED, Digit Insurance, Groww, Razorpay, etc., are continuing to flourish in the market.

Siya
B.Com Ist Year

How Smart Technology is Coaching the Future of E-commerce

In today's digital world, selling products online is no longer just about building a website. Artificial Intelligence (AI) has emerged as a "Smart Coach" or helpful partner for every seller, big or small. This technology helps shopkeepers understand what customers want to buy and what the latest market trends are. The biggest advantage of AI is that it instantly senses what a customer likes. As soon as a customer looks at something online, AI understands their taste. Much like Big Basket's "Smart Basket," AI automatically prepares a list based on the customer's previous purchases. This saves the customer from the effort of searching and the seller sees an increase in sales. The biggest challenge for any shopkeeper is deciding how much stock to keep. AI predicts in advance which items will be in high demand during upcoming festivals or seasons. This ensures the shopkeeper doesn't overfill their store or run out of stock. Additionally, AI looks at market demand and other shops' prices to help set the right price, ensuring the seller makes more profit. Customers no longer need to type to find products with technologies like Google Lens, they can find similar items just by clicking a photo. Moreover, brands like Lenskart and Nykaa are using AI so customers can see through their mobile cameras how glasses or makeup will look on them at home. This builds customer trust and leads to quicker purchases. In online business, the biggest loss happens when customers order a product and then return it. AI identifies customers and addresses where there is a high risk of the product being returned. Shopkeepers can talk to such customers via phone or message before sending the order, saving extra delivery and shipping costs. You no longer need a human available at all times to answer customer questions. AI "Chatbots" instantly answer queries like "Where is my order?" or "How do I get a refund?" Big brands like Nykaa use this so customer don't have to wait, saving the seller's valuable time.

Name: Gaurav
Course: B.Com 1st Year

Impact of Artificial Intelligence On Business, Accounting and service

Artificial Intelligence (AI) is one of the most important modern technologies affecting businesses and can perform tasks requiring human intelligence, such as analysing data, solving problems and making decisions. Today, many Companies use Al to improve efficiency, reduce costs and provide better service to customers.

AI helps business analyse large amounts of data quickly and accurately. This allows customer to compare preferences and can predict future demand. For example, online shopping websites uses AI to recommend product-based behaviour of customers. AI also improves inventory management by ensuring products are available when needed.

AI has made accounting faster and more accurate. Earlier, accountants had to do work manually, which took lot of time. Nowadays, software can automatically records transactions prepare financial Statement and calculate taxes.

Many companies use AI powered chatbots and virtual assistants to provide costumes support. These systems answer questions instantly within 24 hours. This reduces time and improve customer satisfaction. AI also helps businesses analyse customer feedback and improve their products and services.

AI is accounting, and transforming business, accounting, efficiency, accuracy, and service by increasing speed to help businesses grow and compete in the modern digital economy. In future, AI will play an important role in the field of commerce and more.

Nikhil Verma
Class. B.Com 2nd year

Artificial Intelligence in Accounting

Artificial Intelligence (AI) is transforming almost every industry, and the field of accounting and auditing is no exception. With rapid technological advancement, traditional accounting practices are being reshaped by intelligent systems that can analyse data, detect errors, and automate repetitive tasks. AI is no longer a futuristic concept; it is becoming an essential tool in modern financial management.

What is AI in Accounting?

Artificial Intelligence refers to computer systems designed to perform tasks that normally require human intelligence, such as learning, reasoning, and decision-making. In accounting, AI-powered software can process large volumes of financial data, record transactions, generate reports, and even predict future financial trends with high accuracy.

(1) AI-based systems automatically record journal entries, classify transactions, and reconcile accounts, reducing manual work.

(2) AI can identify unusual patterns in financial transactions much faster than traditional manual methods.

(3) By analysing historical data, AI tools help businesses predict revenues, expenses, and cash flows.

(4) AI software assists in calculate tax liabilities and ensures companies with regulations, such as these framed by the GST Council.

(5) In auditing, AI helps auditors examine 100% of transactions instead of relying on sampling techniques. Large firms like Deloitte and PwC use AI-driven tools to improve audit quality and efficiency.

Artificial intelligence in accounting and auditing faces several challenges despite its benefits. The high cost of implementation, including software and training expenses, makes it difficult for small firms to adopt. Data security and privacy risks are major concerns due to the sensitive nature of financial information. There is also a lack of technical skills among professionals, creating a need for continuous training. Over-dependence on AI may reduce human judgement, and errors in data or algorithms can lead to inaccurate reports. Additionally, ethical issues, regulatory uncertainties, integration problems, and fear of job displacement remain important challenges.

Samiksha, B.Com, 1st year

Growth of Digital Payment System in 2026

In the digital era, the Digital Payment System has become an essential part of business and the economy. By 2026, digital payment methods in India have become more advanced, secure and widely accepted. The increasing use of smartphone and internet services has encouraged people to shift from cash transaction to digital payment.

In India, the National Payment Corporation of India (NPCI) has played a significant role in promoting digital payments. It introduced the Unified Payment. It introduced the Unified Payment Interface (UPI), which allows instant and secure money transfers. In 2026, UPI is widely used by small shopkeepers as well as large business.

There are many advantages of digital payment system. They save time, reduce the need to carry cash, and provide secure transaction records, which increases transparency. The government also benefits through better tax collection and reduced black money, strengthening the economy, however, there are some challenges as well. Issues such as cyber fraud, data privacy risks, and internet connectivity problems still exist. In rural and remote areas, digital awareness is still limited. Therefore, it is important to promote digital literacy and strengthen security measure, in conclusion, the Digital Payment System has become a strong pillar of India's economy. With proper security and awareness, it will continue to grow and contribute significantly to economic development.

Chandni
B.Com 2nd Year

Digital Payments and Artificial Intelligence : The New Face of Commerce in India

In today's modern world, technology is changing the way business and commerce work. Two important developments that are shaping commerce in 2026 are digital payments and Artificial Intelligence (AI). Digital payments allow people to transfer money electronically without using cash, while AI helps machines and computer systems perform tasks that normally require human intelligence. Together these technologies are making business faster, smarter and more efficient.

Digital payments have grown rapidly in India in recent years. With the increase in smartphone use and internet access, people can easily make payments online. Mobile payment applications such as Google Pay, PhonePe and Paytm allow users to send and receive money instantly. Today even small shopkeepers, street vendors and local businesses accept. Digital payments through QR codes save time, reduce the need to carry cash, and make transactions very convenient for customers.

AI is becoming an important part of modern commerce. AI is used by companies to analyse customer data, understand market trends, and improve services. Many banks and online platforms use AI systems to detect fraud and ensure safe transactions.

Artificial Intelligence is also widely used on social media platforms today. Applications like Instagram and Facebook use AI to recommend reels, videos, and posts based on users' interests, nowadays, many creators also use AI tools to create images, videos, and reels. AI helps in editing videos, generating captions, and improving visual quality. This is why many reels and online content today involve some form of AI technology.

Digital Payments and AI together provide many advantages. They make transactions faster, safer and more convenient. Businesses can understand customer behaviour better and improve their services. These technologies also support the growth of e-commerce, online marketing, and digital businesses, digital payments and AI are transforming commerce in India. They are making financial transactions easier and helping businesses operate more efficiently. As technology continues to develop, the use of AI and digital payments will increase even more in the future.

Sonal, B.Com 2nd year

Rise of Digital Payment in India

In the past decade, India has witnessed a remarkable transformation in the way people make payments. Traditional cash transaction has been steadily replaced by digital modes of payment such as UPI, mobile wallets, net banking, and debit/ credit cards. This shift has not only made financial transactions quicker and more convenient but has also contributed to the growth of a cashless economy. The journey of digital payments in India gained strong momentum after the government launched Demonetisation in 2016. Overnight, people started looking for alternatives to cash and digital platforms became a popular choice. Later, the Unified Payments Interface (UPI), introduced by National Corporation of India (NPCI), revolutionized the payment ecosystem. UPI enables users to transfer money instantly using a mobile number or Virtual ID, without entering bank details.

Today, popular UPI apps like Google Pay, PhonePe, Paytm, and BHIM are used by millions of Indians daily for shopping, bill payments, grocery shopping, and even sending money to friends and family. The rise of digital payments in India is a sign of rapid technological progress. It is transforming the way individuals and businesses transact, making life simpler, faster, and more efficient. While challenges exist, continued innovation and awareness will ensure that digital payments become a part of everyday life for all Indians.

Raman Thakur, B.com 2nd year

International Business Management

International Business management is the study and practice of managing business that operate in multiple countries or have a global reach. It involves understanding the difference in culture, politics, economics, and legal systems between different in these countries, and developing strategies to successfully operate in these diverse environments.

International Business management covers a range of topics include global market entry strategies, cross-cultural communication, international trade and finance, global supply chain management, multinational corporation governance, and global human resource management.

Effective International Business management requires an understanding of global business environments, strong leadership skills, strategic thinking and the ability to adapt to changing conditional. In addition, international business managers must possess strong Interpersonal skills and the ability to build relationship with stakeholders from different cultures and backgrounds.

A globalization continues to shape the business landscape; International Business management has become an increasingly important field of study for business professionals seeking to compete in the global marketplace.

Kashish, B.Com 2nd Year

Union Budget 2025-26 and Its Impact on Business and Economy

The Union Budget 2025-26 is a major financial statement of the government of India that outlines expected revenue, planned expenditure, taxation changes, and economic priorities for the year. It is not only an accounting document but also a policy framework that influences business growth, employment, inflation control, and overall economic stability. The budget plays a vital role in shaping India's development strategy and strengthening its global economic position.

One of the most important features of this budget is the focus on taxation reforms. The government has aimed to provide relief to middle-income groups by adjusting income tax slabs and simplifying tax compliance procedures.

For businesses, corporate tax incentives have been introduced to encourage investment and expansion. Startups and new manufacturing units may benefit from concessional tax rates, which can boost industrial production and attract Foreign Direct Investment (FDI).

Micro, Small and Medium Enterprises (MSMEs) are the backbone of India's economy. The budget has increased financial support through expanded credit guarantee schemes and easier loan access.

Special emphasis has been given to:

- Reducing collateral requirements
- Faster loan approvals through digital platforms
- Encouraging export-oriented MSMEs

Infrastructure development remains a top priority. Increased budget allocation has been made for:

- National highways and expressways
- Railway modernization
- Airport expansion
- Smart cities and urban housing

Infrastructure spending has a multiplier effect on the economy. It creates employment, improves logistics efficiency, reduces transportation costs, and attracts private investment. Long-term infrastructure growth strengthens industrial and trade activities.

In conclusion, the Union Budget 2025-26 reflects the government's commitment to economic growth, infrastructure expansion, digital progress, and environmental sustainability. Its strong focus on MSMEs, tax reforms, agriculture, and green energy can positively transform India's economic landscape. If implemented efficiently, the budget has the potential to strengthen businesses, improve employment, and enhance the overall standard of living in the country.

Creator Economy and Social Media Business in 2026 :

In the modern digital world, social media has become an important part of commerce. A new trend known as the Creator Economy is growing very fast in 2026. The creator economy means that people create content on social media platforms and earn money through advertisements, brand promotions and online sales. This trend is changing the traditional way of doing business and creating new opportunities for young people.

Today many people earn income by creating videos, reels, vlogs and other online content. Social media platforms such as instagram, YouTube and Facebook allow creators to share their content with millions of people around the world. Companies and brands collaborate with these creators to promote their products. When creators recommend or review a product, many followers trust their opinion and buy the product. Social media has become a power full marketing tool for businesses. companies use media platforms to advertise their products, connect with customers, and increase sales. Influencers and content creators help businesses reach a large audience quickly. This type of marketing is often more effective than traditional advertising because people trust recommendation from creators they follow. Challenges of the Creator Economy Although the reactor economy offers many opportunities, it also has some challenges. Competition on social media platforms is very high and it can take time to build a large audience. Creators also need to produce creative and engaging content regularly to keep their followers interested. In addition, income from social media may not always be stable.

Chandra Pal Kaushal
B.com IInd Year

पहाड़ी अनुभाग

सम्पादकीय

कृष्ण लाल
प्राध्यापक सम्पादक

नगमा देवी
छात्र सम्पादक

प्रिय पाठकों,

हिमाचला री पहाड़ी सांस्कृतिक धरोहरा मंजे म्हारी पहाड़ी बोली–भाषा रा विशेष स्थान आसा। इंदखी सुंदर वादियाँ केवल प्राकृतिक सौंदर्य री प्रतीक नी आह, बल्कि इंदखे लोकजीवना, परंपरा, लोकभाषा, लोकगीता होर संघर्षा री अमूल्य विरासत आसा। आजकाला आधुनिकता होर तकनीकी रे दौरा मंजे, म्हारी पहाड़ी संस्कृति बड़ी चुनौतियां रा सामना लागी री करदी। आजकी युवा पीढ़ी आपणें सुपणें री तलाशा बे आपणें ग्रां होर पहाड़ा छाड़ी दूर शहरा बे जांदे लागे। जेतके परिणामस्वरूप म्हारी भाषा–बोली, लोककला होर पराणी जीवनशैली मज़े–मज़े लुक्ति लागी। ऐड़े में बड़ा जरुरी आसा कि हामा अपनी जड़ा संगे जुड़ी रहणा ता आपणी सांस्कृतिक पहचाण–आपणी बोली–भाषा बचाई डाहणी। म्हारा उद्देश्य केवल साहित्य प्रकाशित करना नी आह, बल्कि पहाड़ी संस्कृति, बोली–भाषा होर इंदखे जनजीवन बे एक मंच प्रदान करना आसा। हांमे चाहंदा कि महाविद्यालय रे विद्यार्थी आपणी रचना, कविता, कहानियां होर अनुभवा रे माध्यमें संगा पहाड़ा री आत्मा बे शब्द दे किबे कि इह म्हारी सांस्कृतिक चेतना बे जीवित रखणें का एक होछा जेआ प्रयास आसा।

अंत न हां तमा सभी रचनाकारा, विद्यार्थियां होर सहयोगयां रा आभार होर धन्यबाद करदा कि तमे ऐसा पत्रिका में आपणें लेख होर सहयोग दीना। हामा इह पूरी आशा आसा कि म्हारा इह प्रयास सभी पाठका रे मना बे पहाड़ा होर म्हारी पहाड़ी बोली रे प्रति प्रेम, सम्मान होर आपणेंपना री भावना विकसित करने बे सहायक होणा।

कृष्ण लाल
सहायक आचार्य (इतिहास)
प्राध्यापक संपादक

जो कुछ हमारा है वो हम तक तभी पहुंचता है, जब हम उसे ग्रहण करने की क्षमता विकसित करते हैं।

रविन्द्र नाथ टैगोर

देऊआ चंड़ोही री ऐसा धरती पांदे हाँऊ नगमा राजकीय महाविद्यालय, पनारसा री छात्रा महाविद्यालया री पत्रिका 'अर्जिक्या' री पहाड़ी बोली री छात्र संपादक तुहा सभी पाठका पाठका रा सचे दिला संगे स्वागत होर आभिन्दन केरा। पत्रिका सभी विद्यार्थीया री प्रतिभा रे प्रदर्शना रा बांका जारिया सा। ऐते रे जरिए सभी विद्यार्थीया बे आपणें बिचार होर भावना अभिव्याक्त केरने रा मौका मिलदा। पहाड़ी बोली बलणे और लिखणें रा एक ऐ भी मक्सद सा कि म्हारी बोली होर भाषा केड़ी थी। ऐसा पत्रिका रे माध्यम संगे आसा आपणी पहाड़ी बोली–भाषा संजोई डाहणी। औज अंग्रेज़ी होर हिन्दी ता सबे बलदा, पर आपणी बोली–भाषा लागिरे मज़े–मज़े भुलदे। हांऊ चाहँदा की आसा आपणी बोली–भाषा नी बिसरणी। तुसा सभी पाठका बे मेरा एक अनुरोध सा कि आसा आपणी पहाड़ी बोली रा खूब प्रचार–प्रसार केरना ता आपणी आणे आली पीढ़ी बे संजोई डाहणी।

नगमा देवी
छात्र–सम्पादक

रामायण

रावणे दीती सीता चुराई। जादें बारी सीते दीती चींग पाई।
सीता री चींग सुणी आऊ गरूड़ भाई।
तिने भी सीता जो छुडाणे रा पूरा जोर दीतिया लगाई।
फेरी रामे कने लक्ष्मणे दीती टोल पाई।
हणुमाने भी दीती आपणी फौज खड़ी कराई।
हणुमाने, रामा रा संदेश सीता जो दीता पहुंचाई।
डाला पर कोई कने सीता रे सामने मूंदड़ी डियाई।
सीता जो सारी गल गई समझ आई।
फेरी हणुमाने दीती सारी लंका मंझे हुड़दंग मचाई ।
आपणे–आपु जो दीता मेघनाथा जो पकड़ाई ।
रावणे दीती हणुमाने री फुंहटा जो आग लगाई।
हणुमाने भी आपणी फुंहटा कने दीती सारी लंका जलाई।
रामा–रावणा री होई लड़ाई एक–एक केरी सारे राक्स मुकाई।
रावणे आपणा भाई कुभकरण दिता जगाई, पर रामे दिता सो सदा जो सुलाई।
मेघनाथा होर लक्ष्मणा भी होई बड़ी लड़ाई, लक्ष्मण दिता मुर्चित कराई।
हणुमाने दीती संजीवनी लाई, कने लक्ष्मण दीता फेरी जगाई।
इन्हा दुई री होई भी लड़ाई, लक्ष्मणे दीता मेघनाथ यमलोका पूजाई।
अंता जो होई रामा–रावणा री लड़ाई, विभीषणे दिता भाई रा राज खुलाई।
रामे दीता रावणा रे नाभि जो तीर चलाई, कने दीती रावणा री लंका मुकाई।
रामे दीती आपणी सीता रावणा का छुड़ाई, कने मैं भी दीती तुसा बे आपणी कहाणी सुनाई।

शिवानी, कला स्नातक (द्वितीय वर्ष)

ज्वालापूरे रा नजारा

उथली धारा पादे तुंगा माता रा मंदर, पार सामने सौरा री धार।
मंझे बौहन्दा ठण्डा गौडे रा पाणी, स्नोड़ ग्रां न वणु देऊ बरनागे रा भंडार।
ओरे–पोरे सा केलो रा जंगल, घौणी सा इन्हा री छाव।
होरा देऊ देवी बोसे धारा ओरिए–पोरिए, देऊ चण्डोही बोसी रा भटवाडी गांव।
पोषा निखली देवी री छड़ी, संघे बाजदे माहणु देवी रा बाजा।
म्हारे केरे तुहे देशा वे ऐणा झुरिए, म्हारे लागी रा तुंगे शयरी साजा।
पोषा माघारी रातड़ी, हिऊए भरी री शेती धारा।
आसा वे कैरे तुहे झुरना झुरिए, तुहा घटी नी म्हारा गुजारा।
धारा पोरे री घाह लुणणु आलिए, घाह आणने वे पाए साउगी रौशी।
म्हारे केरे एई देशा वे एजना झुरिए, म्हारे लागी री सौरे काशी।
हौरे–भौरे औखे सेऊआ से बगीचे, चारो पासे सा कैलो काइली रे बुटे।
श्री नारायणे रासा औखे स्थान झुरिए, जुणिरा केरदा सभे सम्माण।
ऐडा सा म्हारे ज्वालापूरा रा नजारा, एक बार तुहे भी ऐजी चाहे हेरा।

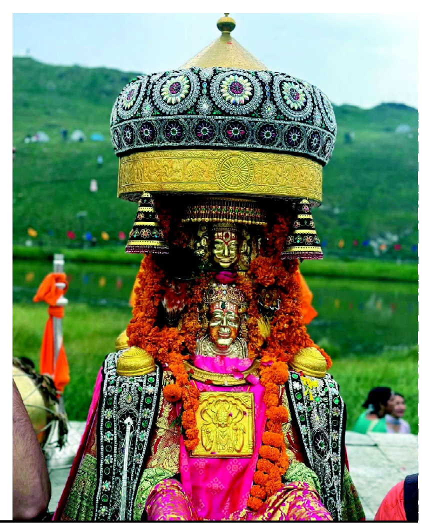

कविता, कला स्नातक (द्वितिय वर्ष)

पहाड़ा री पुकार

आसे लाडली धरतीया रे वासी, बदली गये सब नज़ारे
कंक्रीटा रे बदले दिते पहाड़ आसा रे मारे
कदी देवदारा रे बूटे खड़े थे जेथी घणे जंगल हुंदे
आज तेथी समीटा रे घर आदमिया रे लालचे रोंदे
बावड़िया रा अमृत पाणी,
आज बोतला अंदर बंद होई गे
हवा अंदर घुली गे जेहर ता धूंआ,
आसारी रूह भी ठंडे होई गे
बूटे कटी–कटी कने देवते भी आसारे रूठी गे
तरक्की रे ऐसा काठे रस्ते, पहाड़ भी आसा रे लुटी गे
आऊआ बच्चो सयाणे बणीए,
आसा आपणा फर्ज निभाणे
बूटे लाणे ता बण बचाणे,
पहाड़ आसा आपणे हरे–भरे डाहणे
आगे आऊणे आली पीढ़िया पूछणे,
तुसे आसा कठे क्या छड़ीगे
अजी भी जागी जा आदमियों,
कुदरता कने आपणे रिश्ते मता तोड़दे

रितिका,
कला स्नातक (तृतीय वर्ष)

ग्रां रा वातावरण

आसा रे ओरे–पोरे सा हौरे–भौरे पहाड़,
संघे सा नौई ता छोई रा नाल।
जंगला ना सा बड़े–बड़े बूटे,
संघे सा औग भखाणे वे तितने।
बैशाखा–जेठा ना वाशा सा कुप्पू चिड़ी,
सौ बोला सा मीठी बोली।
औखे री शेती–शेती हिंऊए ही धारा,
भा सी माहणू रे दिला वे यारा।
भोले–भोले सी माहणू औखले,
मीठी–मीठी सी तिन्हा री बोली।
ऐंडी लोड़ी रोही सदा शान औखली,
ता औसा सभी भी सदा रखनी मान औखली।

चाँदनी
वाणिज्य स्नातक (द्वितिय वर्ष)

शयरी साजा

शयरी साजा शऊज मीन्हें रे पहिले धैड़े बै मणा सा।
ऐ साजा शाऊणं गाशा रे मुकणे रे बाद देऊ–देवी आगे माथा टेकदे ता बड्डे बुजुर्गा बै ढाल कैरदे जाहां। एई साजे बै सारे एकी–दुजे बै जूब ता देऊ–देवी बै जूब होर खोड़ देहां। ऐ साजा होछे–बढ्डे मनमुटाबा बै मुर्काई केरि लोका रे रिश्ते बै होर मजबूत केरा सा। पहिले जमाने मंझे संचारे री चीजा नी हुंदी थी, ता लोका गाशा रे मीन्हे दूजे ग्रांऊ ता ओरे–पोरे जाणें न बचा ती। एई केरि लोका आपणे ग्रांऊ मंझे ही रौहां ती। शयरी साजे रै धैड़े लौका एकी–दूजे रै ग्रांऊँआ ता ओरे–पोरे आपणें रिश्तेदारा रे घौरे जाईआ केरि तीन्हा वै जूब ता खोड़ देहां। साऊगी गाशा रे मीन्हे हुई रे नुकसाना ता तीन्हा रे हाल–चाल रे बारे भी पूछा। एई धैड़े सारे लोका देऊ–देबी बै धूप देहां। साऊगी तीन्हे रा धन्यवाद भी केरा कि तीन्हे आसा री गाशा न रक्षा केरी ता आसे री फसला भी गाशा न बचाई रखी।

ललिता ठाकुर,
कला स्नातक (द्वितिय वर्ष)

नशा

औज काला लागी रे हल्के–हल्के शोहरू भी केरदे नशा,
जेते केरे बिगड़ी तिन्हा री दशा।
लागे केरदे नशे रे कठे चोरी,
जो गल नी आथी तिन्हा रे कठे धोरी।
नशे केरे लगा लोका बे बड़ी–बड़ी बीमारी,
जो पड़नी तिन्हा बे बड़ी भारी।
औज काला निखली रे नौऊए–नौऊए नशे,
हल्के–हल्के शोहरू भांगा, अफीमा होर चिटे न फसे।
नऊई–नऊई मिलदा शुणने बे औज काला खबर,
हल्के–हल्के शोहरू ता शोहरी होई रे नशे केरदे जबर।
नशे रे कठे कई शोहरू–शोहरी छाड़ी आपणी पढ़ाई,
संघे आपणें घौरा आले संघा केरी लड़ाई।
ऐ नशा सा बड़ी गन्दी चीज,
पूरे भारत देशा मंझे पोईरा ऐतेरा बीज।
म्हारे देशा री होईरी औज काला बुरी दशा,
जेतेरा सभी न बड़ा कारण सा ऐ नशा।
जूणी बै लागी मुकी री नशे री बुरी लत,
तियां भेजणें नशा मुक्ति केंद्रा बे झट।
नशा सा भाईओ चीज बुरी,
एता डाणी आसा बनाईए दुरी।
औज आसा सभी लेणी एक शपथ,
आसा बनाणा आपणा हिमाचल ता भारत नशा मुक्त।

किरण बेदी
कला स्नातक (तृतीय वर्ष)

1990 के दशक का महशूर पहाड़ी गीत– गंगे रामा मुनशिया

गायक श्री भगत राम

जंगल टाँका जाछ पंडार गंगे रामा मुनशिया
जंगल टाँका जाछ पंडार गंगे रामा मुनशिया
दुई टांकी तोसा रई टांकी चार गंगे रामा मुनशिया
दुई टांकी तोसा रई टांकी चार गंगे रामा मुनशिया
उंधे दरैउ सा उबै ढंगार गंगे रामा मुनशिया
उंधे दरैउ सा उबै ढंगार गंगे रामा मुनशिया
फूलणू फूले पार डुआर गंगे रामा मुनशिया
फूलणू फूले पार डुआर गंगे रामा मुनशिया
झूरी ता नाठी पारली धार गंगे रामा मुनशिया
झूरी ता नाठी पारली धार गंगे रामा मुनशिया
तुम्हें ना जाणी दिला री सार गंगे रामा मुनशिया
तुम्हे ना जाणी दिला री सार गंगे रामा मुनशिया
जाछा रे जंगले काटणा गंगे रामा मुनशिया
जाछा रे जंगले काटणा गंगे रामा मुनशिया
झूरी ता मांगा दिला रा प्यार गंगे रामा मुनशिया
झूरी ता मांगा दिला रा प्यार गंगे रामा मुनशिया
सोची वी समझी कौरे बचार गंगे रामा मुनशिया
सोची वी समझी कौरे बचार गंगे रामा मुनशिया
तुमा रे बोले शोहरी तियार गंगे रामा मुनशिया
तुमा रे बोले शोहरी तियार गंगे रामा मुनशिया
जंगल टाँका जाछ पंडार गंगे रामा मुनशिया
जंगल टाँका जाछ पंडार गंगे रामा मुनशिया

कंचन ठाकुर
कला स्नातक तृतीय वर्ष

कुल्लू री संस्कृति

कुल्लू घाटी जैसा बे 'देव घाटी' भी बोला सा आपणी खूबसूरती ता रीति–रिवाजा री तैंइयें पूरी दुनियाँ न मशहूर सा। औखला जीवन सादा पर बड़ा प्यारा सा। लोका बी औखले बड़े शोभले ता बड़े मेहनती सी। कुल्लू री पहचान औखली कुल्लवी टोपी वा पौटू सी। कुल्लू रा दशहरा ता दुनिया ता देशा न मशहूर सा। ढालपुर मैदाना न जैबे सैब देऊ–देवी रै रथ बड़े दूरा–दूरा न ऐजा सी ता नजारा किछ हौर होआ सा। कुल्लवी नाटी ता कुल्लू री शान सा। जेबे ढोल–नगारे बजा सी, तैबे सेबी रा जीऊ केरा सा नौचणे रा। कुल्लू रै लोका छेता न बड़ी मेहनतै रा कौम केरा सी ता आपणें छेता न सेऊ, अनार, आड़ू, खुमानी, नाशपती, नाज, भाजी–सब्जी ला सी। संघे गोरु, भेडा–बाकरी भी धाचा सी। औखे सैबी ग्रां न लोका रे आपणे–आपणे देऊ–देवी होआ सी, तैबे ता कुल्लू बे देव घाटी बोला सी। देऊ–देवी बे पूछे बगैर ता औखे किछ कोम न होंदै। चाहे शादी–ब्याह हो ता कोई मुश्किल घड़ी, सौबे कौम देऊआ–देवी न पूछीया होआ सी। औखे फागली रा त्योहार भी बड़ी धूम–धामा न मणा सी। ऐ त्योहार सर्दिया रे अंता ता बसंता से शुरुआता रा प्रतीक होआ सा। ऐई त्योहारा न लोका लकड़ी रे मुखौटे लाइऐ नौचदे और आपणे इष्ट देऊ री पूजा कैरा सा।

कुल्लू घाटी न घौर होर मंदर काठ–कुणी (लकड़ी और पत्थर) शैली न बणी रे सा। बिजली महादेऊआ रा मंदर ता हिडिम्बा माता रा मंदर एतेरा सौभी न बड़िया उदाहरण सा। कुल्लू रे हर छोटे–बड़े ग्रां न जातरा होआ सी। इन्हा जातरा न देऊ–देवी रे रथ सजाइए तिन्हा री कोठी न बाहर काढ़ा सा। घौरा–घौरा न खड्डी होआ सी, जेथा न कुल्लवी शॉल, मफलर, पौटू बनाए जा सा। इन्हा न जो डिजाइन बनदे तियां आसा री परंपरा री पचाहण होआ सा। बजारा न इन्हा चीजा री बड़ी मांग होआ सा। म्हारे कुल्लू री ता गले किछ होर सा।

नैना शर्मा, कला स्नातक (तृतीय वर्ष)

जय श्यामाकाली जय–जयकार शुण माता रानी म्हारी पुकार

जय श्यामाकाली जय–जय कार शुण माता रानी म्हारी पुकार।
ब्राधी देने वीरा वे जोड़ियों बाकरू, माह देणी माई वे वालिओ,
माह देणी माई वे वालिओ....जानिए माह देणी माई वे वालिओ।
ओरे–पोरे नौचे ओ शाठ हारी, मंजे नौचे पूंगी मिहाल ओ,
पूंगी मिहाल ओ माह माईए मंजे नौचे पूंगी मिहाल ओ।
जाच वी पोई दलासणी सोहा न दूरे नौचे चउकुमर शेल ओ,
चउकुमर शेल ओ माह माईए दूरे नौचे चउकुमर शेल ओ।
एक वी थिए बशाख शोयरी धियाडे लड़े माघा रा साजा ओ,
माधा रा साजा ओ माह माईए लड़े माघा रा साजा ओ।
कुण भी जाणे ओ थारे खेला वे कुण जाणे ओ महिमा थारी हो,
महिमा थारी ओ माह माईए कुण जाणे ओ महिमा थारी हो।
सौर संमदर तेरे ओ माईए, दाड़ी सा ओ जानी न प्यारी ओ,
जानी न प्यारी ओ माह माईए दाड़ी सा ओ जानी न प्यारी ओ।
थोड़े होले दुखा वे भाई बंध ओ, बहु दुखा वे माहा माई ओ मेरी ओ,
दुखा वे माहा माई ओ जानीए बहु दुखा वे माहा माई ओ मेरी ओ।
आसे होले तेरे चाकरु माईए राजी–बाज़ी सभी वे डाहे ओ,
सभी वे डाहे ओ माह ओ माईए राजी–बाज़ी सभी वे डाहे ओ।
जय श्यामाकाली! जय–जय माता रानी! शुण म्हारी पुकार!

कंचन ठाकुर, कला स्नातक तृतीय वर्ष

बुजुर्गा री स्याणप (बुजुर्गों की समझदारी)

डांडु–काठु रा जो घेरा, ठंडा पाणी, ठंडी धारा,
दादी–दादे री ओ बातें, लगदी सदा ई सार,
बुर्जुग बोलदे थे– ''जैसी अपणी खाल, तैसी नी दूजी ढाल'',
आपनी मेहनत ई काम आणी, वाकी सब है माया जाल,
खेतै री ओ क्यारियां, होर गौ शाले री बास,
दादी बोलदी थी– ''जौका होलो बगत, तौकी होई घास''
बक्त री कदर करा, बक्त बड़ा बलवान है,
हाथे री लकीरें नीं, कर्मों से ई पहचान है
पहाडे रा पाणी, होर पहाड़े री जवानी,
रुकी नी रहंदी कदी, ओ लिखदी नवी कहानी
बुर्जुग समझादें थी–जितनी चादर, तितणे पैर पसारणे
दिखावे रे चकर न, आपणे घर नी उजाड़ने
मीठी वाणी बौलणा, होर केरना सभी रा सत्कार
इज्जते रा ई मोल है, बाकी सब बेकार
ओ पुराणी रीतियां, और ओ बुजुर्गा रा ज्ञान
बचाई के रखना आसा, ई है आसा रे पहाड़े री शान

– सुनिता कला
कला स्नातक तृतीय वर्ष

माँ री ममता

ममता रा एहसास दिला सी माँ
शोहरुआ रे दुखा–सुखा न शामिल होआ सी माँ
आपनी भूखा रा ख्याल केरने न पहिले
आपने शोहरुआ वे रोटी खिआ सी माँ
शोहरुआ री खातिर भगवान होआ सी माँ
आपने शोहरुआ वे बुरी नजरा न बचाणे आली होआ सी माँ
शोहरु री गलतियाँ माफ केरा सी माँ
शोहरुआ वे चोट लागा सी तेवे तड़पदी सी माँ
शोहरुआ री हर दर्दा रा ईलाज होआ सी माँ
ता माँ री सेवा केरना भी होआ सा शोहरुआ रा सबी न बढ़ा धर्म

रंजना पराशर
कला स्नातक तृतीय बर्ष

बचपन

बचपना रा सो जमाना, खुशी रा थी सो खजाना,
चांदा पाऊणे री थी आश, कासु का नी हुंदे थी निराश,
दिल हुंदा थी भिभरी रा दिवाना, हर मौसम थी सुहाना,
बचपना रा सो जमाना, खुशी रा थी सो खजाना।
भ्यागा री नी थी खबर, उड़के रा नी थी ठकाना,
स्कूला का हटीकेरी थी खेलदें जाना,
बचपना रा सो जमाना, खुशीरा थी सो खजाना।
दादू–दादी रे थी खास, मिठाई री रहन्दा थी आश,
बचपना रा सो जमाना, खुशीरा थी सो खजाना...।

चांदनी देवी
कला स्नातक तृतीय बर्ष

लोककथा : उठ पुतरा पाथा पुर्र

ऐ बड़े पराणे ज़माने री गल सा, एकी ग्रां न एक बेटड़ी थी। सौ थी बड़ी कामण। सौ आपणे घौरे—परिवारा मंझ आपणे बेटे ता लाड़े साऊगी, होर आपणे टबरा साऊगी बड़ी खुशी न रोहा थी। एक बार भेजा तेसे आपणा बेटा धाना कूटदा उखला बै। आपू लागिरी थी गाई—बाछु बै घाह खोलदी। तेसे बोलू आपणे बेटे बै तू जा धाना कुटदा ताऊं तक मू केरना घौरा रा तौह—मौह (कामकाज)। जैबे तेईए धान कूटा ता धाने रे फोकटे केरे लग ता धान रौऊ कम। जो पाथा थी किलो रा सौ नी भरुआ। थोड़ी देरा न बाद आई तेई री आमा ता तेसा हेरूआ सौ धान कम। तेसा आऊ बड़ा गुस्सा, तेसे पाऊ सौ आपणा बेटा तेई उखला न ता उपरा न सौ जुका देऊणा। धाना री तांई तेसे आपणा बेटा मारू पर तेसा नी हेरूआ कि पोकटे काड़ले ता धान ता घटणे फेरी। तेसे ता आपणा बेटा केरा आपणे हाथे खत्म। फेरी लागिरी, बलदी जैबे सो पाथा भरुआ तेसा रे बेटे पाई केरे ता उठ पुतरा पाथा पुर्र—पुर्र—पुर्र। उठ पुतरा पाथा पुर्र रा मतलब सा कि उठ जा पुत्र अब धान का बर्तन भर चूका है, पर तेई एबे कौखा न उठणा सौ ता मुईरा थी। आसा रे एड़ी मान्यता सा कि एता न बाद सौ बेटड़ी आपणे बेटे री तांई एतरी तड़पी कि सौ बणी घूगती (एक प्रकार कि चिड़िया)। आसा रे एड़ा मना कि आज भी जेबे तुसे घूगती री आवाड़ ध्याना न शूणे ता सौ बोलदा आझी भी—उठ पुतरा पाथा पुर्र।

प्रिया
कला स्नातक द्वितीय बर्ष

पठाउनी

1. धारा ओर आई लुई—फलुई
बाऊड़ी ऐजिए केरी सुई.......... **भुहार (झाड़ू)**
2. एक चिड़ी सा चुरभुराम्दी
आंजा—पोटा रा थुपडू बांदी.......... **तोकई (तकली)**
3. दुई भाई री एक आंज......... **बुमणी**
4. ओलू भी ओलू ओरा—पोरा वे जान्दिए लोड़ी
तें मुम्भे भी बोलू............... **द्वार**
5. एक चिड़ी सा चुन्डे धार तैसे रे शौहरु नौ हजार......
दाडू रा बुटा

कनिका ठाकुर
कला स्नातक तृतीय वर्ष

खवलाशै री देऊ—कोठी

शनोरै री सबी न बड़ी देऊ री हार ब्लिंढीगढ़ रै देऊ श्री खवलाशी नारायणे री आपणीं पईलकी जग्हा खलवाश/खवलाश सा। जौखे नउंए मन्दरै री प्रतिष्ठा हुई री। ऐई मन्दरा मंझें देऊ री ऐड़ी मूर्त सा जो माणुए नी बणाई री सौ आपु बणी हुँदी मिली री। ऐई जग्हा देऊ आपणे सारै तीथ मणां सी। देऊआ री ऐसा कोठी रा काम हुई रा दुई हजार पंद्रा न शुरू। तधी काल औखे सड़क भी नी पुजी री ती। ऐंडै गौहरा न हीऊं—गाश लागै ता छौंः मिन्हें काम भी नी हुंदा ती। ऐई मन्दरा कठै हिमाचलै रै, विहारै रै ता उत्तर प्रदेशे रै कारीगर शादिरै ती जो लकड़े री कलाकारी मंझे तेज़ ती। इंन्हें कलाकारे रात—ध्याड़े काम केरीया ऐं मन्दर ऐड़ा बांका बगांऊ कि लोका दुरा—दुरा न आऊआ सी ऐई मन्दरा बै दर्शन केरदे। ऐ मन्दर पगौड़ा शैली न बणी रा पहाड़ी कला रा नोखा नमूना सा। ऐई मन्दरा मंझै बाहट (62) मूर्त्ता लाईया भगवान श्री कृष्णे री लीला रै नोखे दर्शन होआ सी। 8 दिसंबर 2025 न एई मन्दिरै री 'प्राण प्रतिष्ठा' होई री थी जैता मंझै देऊ कोट नारायण आपु आइ रै थी। ऐता मंझे सौठ (60) देऊ रे देऊलू ता कमेटी रै कमेटीदार बी आइरै थी। ऐता मंझै देऊ री जाई—जैऊलु बी शादिरै थी। देऊ री राजी—रक्षे ऐ प्रतिष्ठै री तीथ बड़ी बांकी नाठी। देऊ भी गच देऊलु भी गच। तुहे भी ऐझै म्हारै मन्दिरा हेरदे कदी।

पूजा ठाकुर
कला स्नातक द्वितीय बर्ष

Annual Prize Distribution Function

Annual Prize Distribution Function

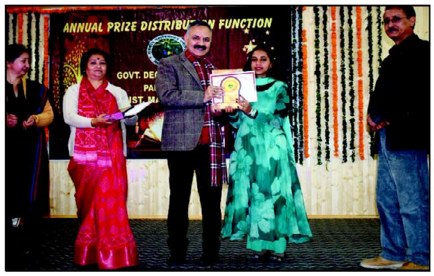

Seven Day Workshop on Museum Studies

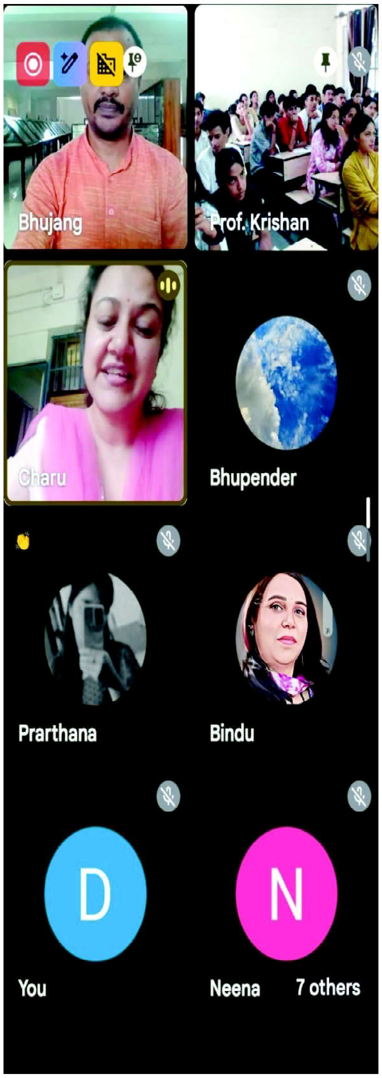

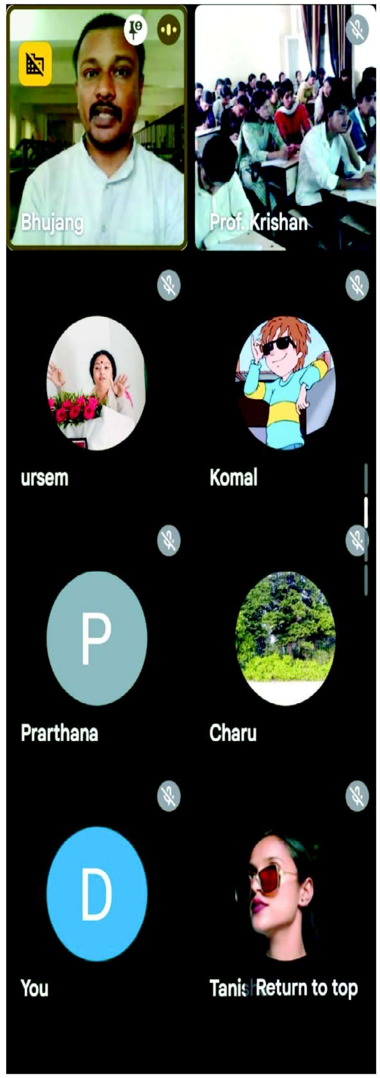

One Week International Workshop on Promoting Education Through "Promoting Heritage", organised by IQAC and Department of History in Collaboration with Heritage Foundation Pune, Maharashtra

College students visited Nicholas Roerich Art Gallery and Museum Naggar, Manali

खबरों में राजकीय महाविद्यालय, पनारसा

करोड़ : सुक्खू

पनारसा कॉलेज भवन का किया लोकार्पण

कार्यक्रम के दौरान गणमान्य लोग। — अनंत ज्ञान

विशिष्ट अतिथियों ने साझा किए विचार

संस्कृति व हैरिटेज को हर हाल में बचाएं : डॉ. राकेश

जीसी पनारसा में धरोहर संरक्षण पर वैश्विक कार्यशाला का आयोजन

हाविद्यालय पनारसा में 7 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय

पनारसा कॉलेज में पारितोषिक वितरण समारोह में आईएएस पंकज राय ने वनएक्ट मेंनपर्त दिखाईं

मंडी खबरनामा

स्कूल की 28 तारीख से समर फाइन बुलाव के माड्यू का वा यंत्र, तथारी कर ले जा रहा था अवसरोट घात

मंडी-कुल्लू

अगले सत्र से चलेंगी बीवॉक व बीसीए की कक्षाएं

स्वोटल में 9-10 को होगा 'पंचाली', 'ऐ लड़को' का मंचन

पनारसा कॉलेज में सवोरोवों ने की ईडीय बउर पर वार्ता

नारसा में अगले सत्र से बीवॉक और बीसी के कक्षाएं शुरू की जाएंगी : पुष्पचामंवी गुरु

ज का एनएसएस

केंद्रीय महाविद्यालय पनारसा की राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का शुभारंभ किया गया। शिविरार्थियों ने शिविरकतं की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राजेश सोनी ने बताया कि शिविर के दौरान विभिन्न गतिविधियां करों प्रात की जाएगी।

अनंत ज्ञान, मंडी/पंडोह। कुल्लू व मंडी जिला के सीमावर्ती क्षेत्र के राजकीय महाविद्यालय पनारसा में आगामी सत्र के लिए प्रवेश प्रक्रिया जारी है। प्राचार्या डॉ. उरसेम लता ने बताया कि इस समय प्रवेश के लगभग सभी महाविद्यालयों में छुट्टियां चल रही हैं लेकिन इसके बावजूद भी प्रवेश प्रक्रिया ऑनलाइन जारी है। विद्यार्थी कला एवं वाणिज्य संकाय में 3 जून से 15 जुलाई तक ऑनलाइन अपना प्रवेश फार्म भर सकते है। इसके लिए विद्यार्थियों को महाविद्यालय की वेबसाइट पर लॉगिन करके प्रवेश फार्म भरना होगा। 15 जुलाई से 19 जुलाई के मध्य विद्यार्थियों को अपने दस्तावेजों सहित महाविद्यालय में काउंसलिंग के लिए आना पड़ेगा। उन्होंने ने बह भी बताया कि महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन का कार्य लगभग पूरा हो चुका है और स्थानीय लोगों की विधायक की मांग में महाविद्यालय को नया भवन मिल जाएगा।

महाविद्यालय पनारसा के भवन

सुक्खू ने कहा, सड़क के साथ सब शिक्षण पैमा आता और शिक्षा उपलब्ध सांस्थान आगे कर अब तक!

कालेज को मिला 13 करो

Non-Teaching Staff

Mrs. Bindu
Assistant Librarian
MA, M.Lib.Ist. Science

Mrs. Kirta Devi
Superintendent
Grade II

Mrs. Chitarkala
Sr. Assistant

Mr. Kailash
Peon-cum-Chowkidar

Mrs. Meera
Peon-cum-Chowkidar

Mr. Mohar Singh
Peon-cum-Chowkidar

Mrs. Bantu Devi
Peon-cum-Chowkidar

Mr. Heera Lal
Peon-cum-Chowkidar

Mrs. Bimla Devi
Multi-Task Worker

CSCA MEMBERS

Vanshika Thakur
CSCA President

Lalita Thakur
CSCA Vice-President

Seema Thakur
CSCA Secretary

Sher Singh
CSCA Joint Secretary

Painting by : Suresh Soni (MFA)